

# अनुकूल

१९९४-९५

अंक  
३३ वा

## विराग ऑटो लाईस

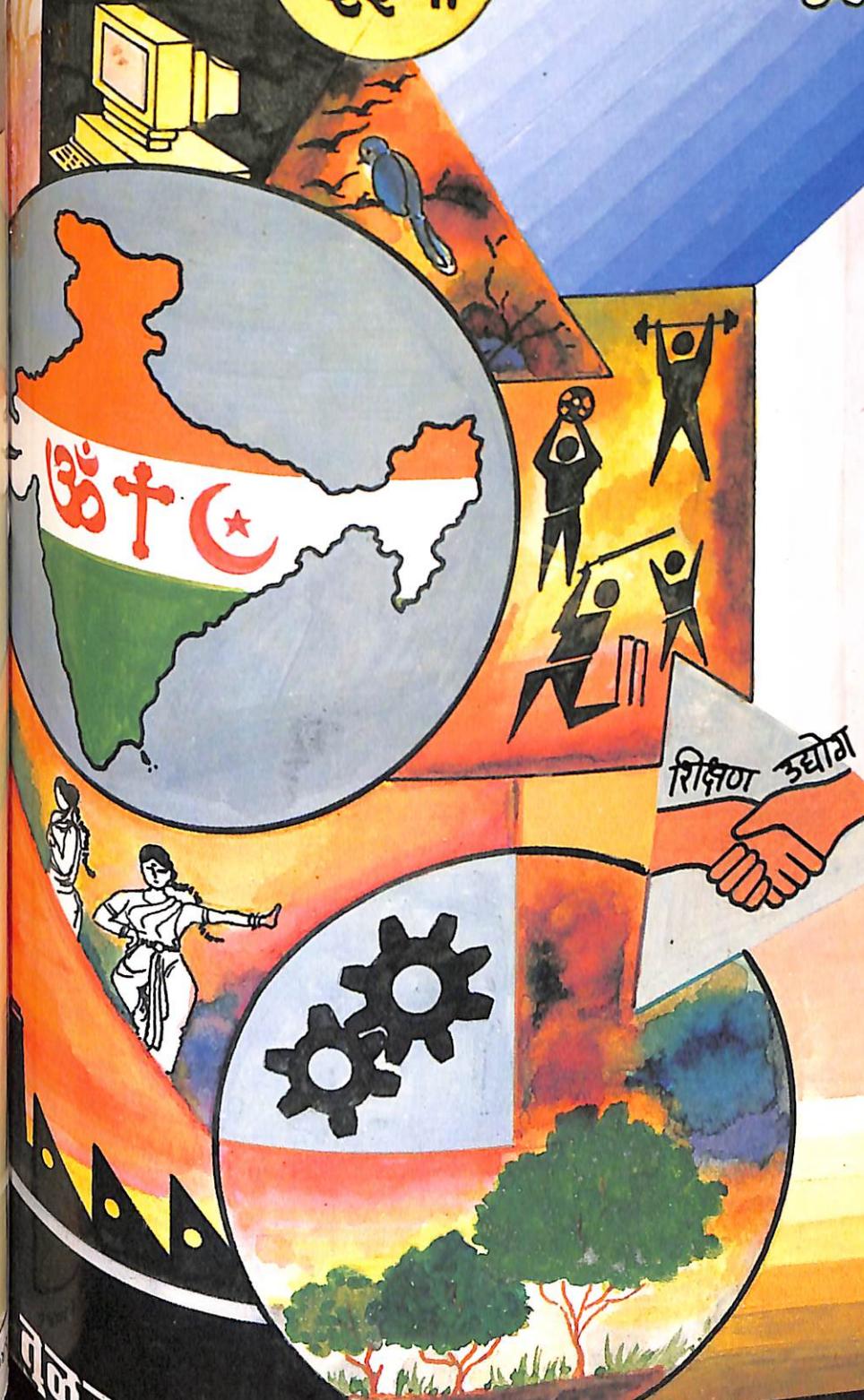
सिनेमा रोड, बारामती - ४१३१०२

फ़ॉक्स ४६१ निवास भरेद

अधिकृत विक्रेते -  
• इंटरनेशनल ट्रॅक्टर  
• लुगा मोपेड व स्पार्क  
• महिन्द्रा ट्रैलर  
• गोदरेज रेफ्रिजरेटर्स व फर्निचर  
• सर्व प्रकारची शेती अवजारे व स्पेआ पार्ट्स

चित्रण व मुद्रण : प्रिण्ट ओम ऑफसेट, सातारा फोन: २१००

गुजरात महाविद्यालय, बारामती



अनन्तधर्मणस्तत्वे पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः।

अनेकान्तमयी मूर्तिर्नित्यमेव प्रकाशताम्॥

आत्मा अनंत धर्मात्मक आहे. आत्मद्रव्याच्या अपेक्षेने आत्मा 'अस्तिरूप' आहे, पण 'परद्रव्या'च्या अपेक्षेने तो नास्तिरूप आहे. परस्परविरुद्ध धर्माच्या अस्तित्वाचे रहस्य उलगडून दाखविणे यालाच 'अनेकान्त' म्हणतात. अशी 'अनेकान्तमयी' मूर्ती असलेली 'जिनवाणी' नेहमीच सर्व प्राणिमानांच्या हृदयात प्रकाशित होवो!

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे

## तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, (कला, वाणिज्य व विज्ञान) बारामती, जि. पुणे

संपादक मंडळ -

अध्यक्ष -

प्रचार्य डॉ. मनोजकुमार गांधी

प्रमुख संपादक -

उपप्राचार्य डॉ. कृष्ण सुर्वे

सहाय्यक संपादक -

उपप्राचार्य शरद नवाथे

उपप्राचार्य जयपाल मगदूम

प्रा. एकनाथ पाटील

प्रा. धनंजय शहा

प्रा. महावीर कंडारकर

प्रा. तुकाराम सावंत

प्रा. विजय दिवाण

प्रा. प्रकाश इंगवले

मूख्यपृष्ठ -

श्री. दादा जोगंदड, (द्वितीय वर्ष कला)

छित्रण व मुद्रण -

फोन : (०२१६२) २९०४९, ३२०८२

कॉम्प्यूटराइझ्ड टाईपरेस्टिंग/मांडणी -

लाईप इनोहेट्स, १९५, सदाशिव पेठ, सातारा.

फोन : (०२१६२) २९५०७

अ  
नेक  
प्रा  
ना

१००८  
\*  
१००५

अंक  
३३वा

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे

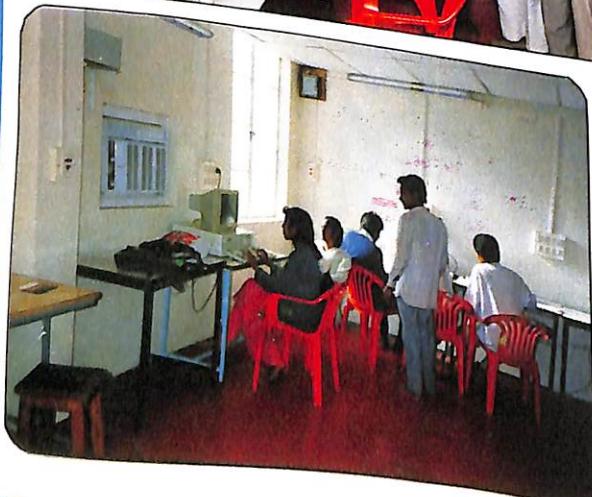
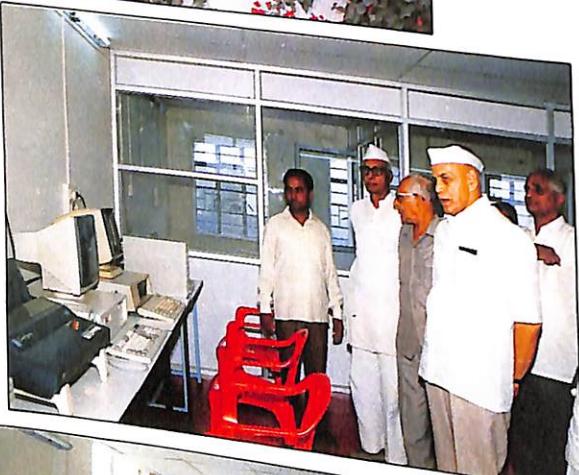
## इन्स्टिट्यूट ऑफ मॅनेजमेंट डेव्हलपमेंट ऑफ रिसर्च

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय परिसर

बारामती ४१३ १०२ जि. पुणे



एकविसाव्या शतकातील आव्हाने पेलण्यास तयार असलेली  
संपूर्ण वातानुकूलित सर्व उपकरणांनी सुसज्ज संगणक प्रयोगशाळा



अनेकान्त एज्युकेशन  
सोसायटी, बारामती  
नियामक मंडळ

अ.नं. नांव

- १) मा. श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा (सराफ)
- २) मा. डॉ. वर्धमान माणिकचंद कोठारी
- ३) मा. श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा
- ४) मा. श्री. विमलचंद माणिकचंद गांधी
- ५) मा. श्री. विलास गौतमचंद शहा
- ६) मा. श्री. शिवलाल प्रेमचंद शहा
- ७) मा. श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा
- ८) मा. श्री. माणिकचंद जयवंतसा भिसीकर
- ९) मा. श्री. मोतीलाल तुळजाराम शहा
- १०) मा. श्री. राजकुमार तुळजाराम शहा
- ११) मा. श्री. आमजोड़ा आप्पासाहेब पाटील
- १२) मा. श्री. जयपाल भूपाल झेले
- १३) मा. प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार मोतीचंद गांधी
- १४) मा. प्राचार्य डॉ. श्रीधर शामराव हेरवाडे

पद

अध्यक्ष

सचिव

स्वजिनदार

सदस्य

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी

रथानिक समिति - बारामती

पद

अध्यक्ष

सचिव

स्वजिनदार

सदस्य

अ.नं. नांव

१) मा. श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा (सराफ)

२) मा. डॉ. वर्धमान माणिकचंद कोठारी

३) मा. श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा

४) मा. श्री. शशिकांत शिवलाल शहा

५) मा. श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा

६) मा. श्री. रवुशालचंद रत्नचंद छाजेडे

७) मा. श्री. भोगीलाल गुलाबचंद शहा

८) मा. श्री. पवनलाल गंगाराम गांधी

९) मा. श्री. माणिकलाल रूपचंद शहा

१०) मा. श्री. विलास माणिकचंद शहा

११) मा. श्री. अरहतदास हिरचंद शहा

१२) मा. श्री. माणिकलाल छग्नलाल मुथा

१३) मा. श्री. विलास दीपचंद शहा

१४) मा. श्री. राजकुमार तुळजाराम शहा

१५) मा. प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार मोतीचंद गांधी

तुङ्गजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वाराणसी

महाराष्ट्र विद्यापीठ कायदा १९९४ कलम ८५(२) (ड) आणि (ई) मधील तरतुदीनुसार सन १९९५-२००० या ५ वर्षांच्या कालावधीसाठी गटित करण्यात आलेली “तंत्रज्ञान”

**“रथानिक व्यवस्थापन समिती”**

- |                                                                                             |                          |
|---------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------|
| १) मा.श्री.जंबुकुमार चंदुलाल शहा,                                                           | अध्यक्ष                  |
| २) प्राचार्य डॉ.मनोजकुमार मोतीचंद गांधी,                                                    | सदस्य-सचिव               |
| ३) मा.डॉ.वर्धमान माणिकचंद कोठारी,                                                           | सदस्य                    |
| ४) मा.श्री.माणिकलाल तुळजाराम शहा,                                                           | सदस्य                    |
| ५) मा.श्री.मोतीचंद फुलचंद शहा,                                                              | सदस्य                    |
| ६) मा.श्री.शशिकांत शिवलाल शहा,                                                              | सदस्य                    |
| ७) मा.श्री.सदाशिवराव धोडिबा सातव, नगराध्यक्ष, वारामती नगरपरिषद,                             | सदस्य                    |
| ८) मा.श्री.शिवलिंग संगमनाथ हिरेमठ, चेअरमन, सूतगिरणी, पणदरे                                  | निमंत्रित सदस्य          |
| ९) मा.श्री.शिवाजीराव यशवंतराव भोसले, संचालक, पुणे जिल्हा मध्य. बँक                          | निमंत्रित सदस्य          |
| १०) मा.श्री.बाळासाहेब पाटलूजी तावरे, अध्यक्ष, माळेगांव सहकारी साखर कारखाना, लि.माळेगांव     | निमंत्रित सदस्य          |
| ११) मा.श्री.पृथ्वीराज साहेबराव जाचक, अध्यक्ष, श्री.छत्रपती सहकारी साखर कारखाना, लि.भवानीनगर | निमंत्रित सदस्य          |
| १२) मा.श्री.विनोदकुमार रंगीलदास गुजर, उपाध्यक्ष, विद्याप्रतिष्ठान, वारामती                  | निमंत्रित सदस्य          |
| १३) सौ. मंगल श्रेणिक शहा                                                                    | निमंत्रित सदस्य          |
| १४) सौ.रेखा सतीश गुगळे                                                                      | निमंत्रित सदस्य          |
| १५) सौ. सुरेखा सुभाष करंदीकर                                                                | निमंत्रित सदस्य          |
| १६) उपप्राचार्य, प्रा.शरद रामचंद्र नवाथे,                                                   | निमंत्रित सदस्य          |
| १७) उपप्राचार्य, प्रा.डॉ.कृष्ण मंगळू सुर्वे,                                                | निमंत्रित सदस्य          |
| १८) उपप्राचार्य, प्रा.जयपाल भरमू मगदूम,                                                     | कायम निमंत्रित           |
| १९) उपप्राचार्य, प्रा.रमेश वामन जोशी,                                                       | कायम निमंत्रित           |
| २०) प्रा.बाबू शिवाप्पा माने                                                                 | कायम निमंत्रित           |
| २१) प्रा.रामचंद्र गणपत पाटील                                                                | कायम निमंत्रित           |
| २२) प्रा.मारुती केरबा कोकरे                                                                 | सदस्य (शिक्षक प्रतिनिधी) |
| २३) श्री.पांडुरंग आनंदराव साळुंखे                                                           | सदस्य (शिक्षक प्रतिनिधी) |

तुलजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

कनिष्ठ महाविद्यालय : शाळा समिती

- |     |                                                                      |              |
|-----|----------------------------------------------------------------------|--------------|
| १)  | मा. श्रीमान जंबुकुमार चंदुलाल शहा                                    | सदस्य-सचिव   |
| २)  | मा. प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार मोतीचंद गांधी                            | सदस्य        |
| ३)  | मा. डॉ. वर्धमान माणिकचंद कोठारी                                      | सदस्य        |
| ४)  | मा. श्रीमान माणिकलाल तुळजाराम शहा                                    | सदस्य        |
| ५)  | मा. श्रीमान मोतीचंद फुलचंद शहा                                       | सदस्य        |
| ६)  | मा. श्रीमान माणिकलाल रूपचंद शहा                                      | सदस्य        |
| ७)  | मा. श्रीमान शशिकांत शिवलाल शहा                                       | सदस्य        |
| ८)  | मा. श्रीमान अरहतदास हिराचंद शहा                                      | सदस्य        |
| ९)  | मा. श्रीमान राजकुमार तुळजाराम शहा                                    | सदस्य        |
| १०) | प्रा. शरद रामचंद्र नवाथे (उपप्राचार्य)                               | सदस्य-सहसचिव |
| ११) | प्रा. डॉ. कृष्ण मंगळू सुर्वे (उपप्राचार्य कनिष्ठ महाविद्यालय प्रमुख) | सदस्य        |
| १२) | प्रा. जयपाल भरमू मगदूम (उपप्राचार्य)                                 | सदस्य        |
| १३) | प्रा. आप्पासाहेब भाऊसाहेब देसाई (उपप्राचार्य)                        | सदस्य        |
| १४) | प्रा. रमेश वामन जोशी (उपप्राचार्य)                                   | सदस्य        |
| १५) | प्रा. विजय खंडोपंत दिवाण                                             | सदस्य        |
| १६) | प्रा. अजय जयकुमार आळंदकर                                             | सदस्य        |
| १७) | प्रा. वाळासाहेब गणपती देशमुख                                         | सदस्य        |
| १८) | प्रा. प्रकाश बळवंतराव इंगवले                                         | सदस्य        |
| १९) | प्रा. आप्पासाहेब वापूसाहेब भगाटे                                     | सदस्य        |
| २०) | प्रा. बजरंग लक्ष्मण दबडे                                             | सदस्य        |
| २१) | प्रा. रामचंद्र कोंडीबा नाळे                                          | सदस्य        |
| २२) | प्रा. कुमीरा दिनकर वैद्य                                             | सदस्य        |
| २३) | प्रा. श्रीमती रजनी कर्णणराव सुर्वे                                   | सदस्य        |

# A GOOD TEACHER

**A GOOD TEACHER**

A good teacher, a good author, a good publisher, a good leader, a good executive has to study life and its problems from very realistic and close angles. You cannot shut yourself in a closed, comfortable room and have the 'feel' of life and problems felt by common people, You just cannot do that. You have got to come out with all sympathies felt by common people, and to reduce their miseries - ``The Agony and the Ecstasy" make our life worth living and sublime.

... and their problems and help them. You will get satisfaction may or may not likely to spoil you.

Mix up more with common people. Understand their problems and help them. You will get solid success. Such success which is loaded with much mental satisfaction may or may not carry any material rewards for you. But one thing is sure such success is not likely to spoil you. With humbleness you will be able to go up and up till death overtakes you.

- Book Window : June, 1995  
(Fortnightly)

and their problems and help them. You will  
much mental satisfaction may or may not  
sure such success is not likely to spoil you.  
ill death overtakes you.

- Book Window : June, 1995  
(Fortnightly)

“हातेश परदंत्यातून स्वातंत्र्याला आलेला पाहायचे भारत मला लाभले; पण एक गोष्ट मात्र दुर्दुर्बाबे अजूबही आपल्याला प्राप्त झाली नाही. सामाजिक समता सर्वांना लाभल्याशिवाय स्वतंत्रतेची गोडी चासता येणार नाही, ही जापीव करण्याची तयारी जे कुणी करीत होते, त्यांना आम्ही हसत होतो. एकूणच हे आम्हाला, आमची तपस्या पूर्ण होण्यात्या आधीच मिळाले, असे महणाऱ्याचे घाडस मी करतो. ‘उजाडले, पण सूर्य कुठे आहे ?’ असे विचारण्याचा प्रसंग आज त्यामुळे आला आहे. स्वराज्याचे सुराज्य बनवायचे असेल, तर सामाजिक समता अगोदर प्रस्थापित केली पाहिजे.”

(दि. १८-४-१९५३ : महाराष्ट्र सामाजिक परिषदेच्या उद्घाटन प्रसंगी दिलेल्या भाषणातून)

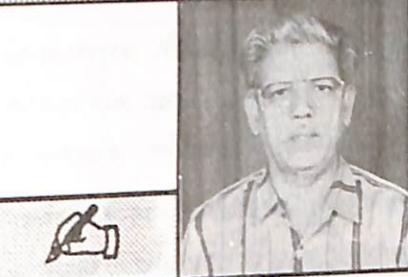
### - महर्षी धोंडो केशव कर्वे

अंकानंत वार्षिक अंक दि. प्रेस अण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स अॅक्ट नियम ८, फार्म ४ प्रमाणे	
१)	प्रकाशन स्थळ
२)	प्रकाशन काळ
३)	प्रकाशकाचे नाव राष्ट्रीयत्व पत्ता
४)	संपादक राष्ट्रीयत्व पत्ता
५)	मुद्रकाचे नाव राष्ट्रीयत्व पत्ता
६)	मालकी

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती, जि. पुणे  
वार्षिक  
प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार गांधी  
भारतीय  
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती, जि. पुणे  
प्रा. डॉ. कृष्ण सुर्वे  
भारतीय  
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती, जि. पुणे  
संदेश शहा,  
भारतीय  
प्रिंट ओम ऑफसेट,  
२६९/ब, दौलत नगर, सातारा.  
फोन : (०२१६२) २१०४९ / ३२०८२  
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती, जि. पुणे

या अंकात प्रसिद्ध झालेल्या लेखातील मतांशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही.

## संपादकीय



आमच्या महारिदालयाचा “अंकेन्ट” या वार्षिकाचा वर्ष १९४४-४५ चा अंक आपल्या हाती वेताना आनंद वाटतो. महारिदालयाची वार्षिक लंबाईत महारिदालयाचे आलेलर असतात. तथापि ही नियतकालिके काढणे दखर्खी वाढत जाणाऱ्या कागद क छपाविच्या वाढत्या दरांमुळे आर्थिक दृष्ट्या जिकीशीचे झाले आहे. पण या महारिदालयाचे नियतकालिक आरंभापासूनच नियमितपणे प्रकाशित होत असल्याने यांची रांड पडून देता हा तेहतिसारा अंक प्रकाशित केला आहे.

नेहमीप्रमाणे या अंकातही आपणास आमचे विद्यार्थी-प्रायापक त्यांनी लाईली प्रगती, विरिध विआगांनी वर्षभासत पाव ठाडलेले कायरकम आणि तस्म बाबीकडे दृष्टिक्षेप टाकता येईल. आमच्या विद्यार्थी-विद्यार्थिनीनी आपले लैरर, काया, कविता इत्यादी प्रकाशचे साहित्य देऊन आपल्या साहित्य-नियमित-क्रमात्मेचे दर्शन प्रदर्शित आहे, त्याचाही दस्तव्याद आपणास घेता येईल. या अंकाचे आणरवी एक वैशिष्ट्य म्हणजे झाला गांधीची रचने. गांधीजीच्या १९२१ व्या यांतीच्या निमित्ताने मराठी, हिंदी व हंगरी आणेतील त्यांची रचने त्या त्या भाषेच्या साहित्य विभागांत प्रत्येक गानावर ठाकलेली आहेत. या शैक्षणिक वर्षात अंकेक दाजकीय नेते, कलाकाश, साहित्यिकाचे देहावसान झाले आहे. त्यांचा महानीयतेचा नीरव शळजंगली झुपाने करणे कर्तव्यच होते. आमच्या संस्कृत्याचे हृषीने श्री. नलिनचंद्र गांधी त्याचे नियन्त्रित काव्याकडे होते. या संस्कृत्याचे प्रगतीत शुभारंभापासून त्यांचा सहभाग होता. त्यांचा अल्पप्रदिचय या अंकात दिला आहे.

आमचे महारिदालय वार्षिक भागातले ३३ वर्षांची पदंपरा असलेले प्रगत महारिदालय आहे. विरिध प्रकाशचे अभ्यासक्रम आणि उपक्रम हैरे सुरु केलेले आहेत. अंकेक कारणांनी शहरात जाऊन विशेषज्ञाने घेऊन शकणादे विद्यार्थी अधिक प्रमाणात या सोयीचा लाभ घेतात. अथवित वार्षिक भागातील वाड्या, वस्त्रया वर्चरेड्ड्याप्राड्यातून येणाऱ्या विद्यार्थ्यांच्या अंकेक समव्याप्त आसतात. आडवणीगारे, हैंदवर्षे, बस्थारे, बदलते अनुमान, वगातील हजेशी, अभ्यासासाठी होणारी थारपळ आणि कालैज सुलत्यावर बस्या पकडण्याची घार्वर पोटातील शुक्रयासुक्ले विद्यार्थ्यांची ओढाताण होते. काही विद्यार्थी शोटी-शेजी वेणारी नोकरी नियमित आणितरही नोकरीची रवानी नसल्याने हे तरण विश्वामित आणितरही फल्यवस्त होतात. ‘अर्थ’ थून्य शिक्षणात्यांना अर्थहीन राटते. विद्यार्थी स्वतःला पांढरेशेपणा देणाऱ्या विशेषज्ञाने करून या हैतूने १०+२ चे सुरु आले, पण ते अपणीशी ठरले. विद्यार्थी स्वतःला पांढरेशेपणा विशेषज्ञाने करून या हैतूने १०+२ चे सुरु आले, पण ते अपणीशी ठरले. विद्यार्थी स्वतःला पांढरेशेपणा विशेषज्ञाने करून या हैतूने १०+२ चे सुरु आले, पण ते अपणीशी ठरले. ही वर्षात्तिंती आहे. तथापि ‘इन्स्टर्न्स’ प्रमाणे ‘इंस्टर्न्स’ त्याची काळज उच्च दर्जाचे रवैवाढू तयार होत नाहीत. आमच्या गांधीलयाची दिशीती नहणजे ओसाड पडलेली झानाची सदावर्ते होते. ती परीक्षेच्या मौसमात बहुतात म्हणण्यापेक्षा अवृत्तात उर्वरेच. महारिदालयीन विद्यार्थी तरण असतात, उसक्ते रक्त असते, औसंडणाश उत्साह असतात.

भव्यपूर्व सुम गुण व क्रमता असते. यातुन त्यांची किचाशीलता वाढावी, नित्य नवे शिकावे, सर्वगीण व्यक्तिमत्त विकासाचा ध्यास घ्यावा असे लर्वना वाटते, त्याचा सुदुपयोगही अजैकजण कळून घेताना दिसतात, पण बहुसंख्या विद्यार्थ्यांचा - तक्णांचा इंडप्रतिसाव म्हणजे आयोजकांच्या उत्साहावर गणीच.

बदलत्यांगात ज्ञानाची क्रितिजे विस्तार होत, विचारक कळून वाटता होत, जीवनभाष्ये बदलता होत, पुढे जाणाऱ्यांसाठी आकाशाची काय ती सीमा आहे. अशा परिस्थितीत आमच्या विद्यार्थ्यांची - शिकावे स्थान कुरै आहे? असा प्रश्न विचारावासा वाटतो. या संकलनावस्थेनंतर येणाऱ्या उज्ज्वल भविष्याचे स्वागत करायला आणण समर्थ आहोत का? आपण आशावाढी असूया.

गेल्या काही वर्षांपासून बाशमती शहर आणि परिसराचे कृप बदलत चालले आहे. नवे उघोग व्यवस्था उभे याहात आहेत, त्यात आमच्या तक्णांना शेजगाव, काम थंडा मिळत आहे, तो अधिकारिक मिळायला हवा आहे, अर्थात त्याएकावरै शिक्षण-प्रशिक्षण मिळणे गवजेचे आहे. आमचे समाजशुद्धीण, शिक्षण तज्ज्ञ, शज्यकर्ते त्यांच्या मनांत हा विचार कूळ थळू लागला आहे हे शुभलक्षण आहे. यामुळे कावित पासंगाविक शिक्षण व शिक्षणपद्धती मोडीत निघण्याची शक्यता आहे. तथारि त्यातील नीती आस्था, गविष्या, आवश्य, पूज्यभाव, कृतज्ञता, स्वाक्षिमांग आणि माणसाला माणूस बनवणाऱ्या गुणांची वजावट होता कामा नये. जीवनात ऐशाचे मूल्य आहे, पण मूल्यांचीषित जीवनाचे महत्त्व कमी लेवरता कामा नये. गेल्या विद्यानक्षमा निवडणुकीने शाजकीय रंग बदलता, मतांतराने कर्त्तांतर छाले, तदी मूल्यांतर होता उपर्योगाचे नाही. शेरटण्यातच्या माणसाला सुरुवातीचे करणे हे कोणत्याही शासनाचे उद्दिष्ट असते, त्याचे आताही प्रत्यंतर आल्याशिवाय गत्यंतर नाही.

या अंकासाठी विद्यार्थी-विद्यार्थिनी आपले लेवर, कणा, कविता इ. साहित्य दिले, त्यातले गावत तेवढे घेतले, काही लेवर, कणा, कविता वरून असे दिसते की हे विद्यार्थी सातत्याने लिहीत शाहिले तर चर्चाने पुढे येतील. त्यांच्या लेवरनात अनुभव, आषाशीली, शुद्धता दत्यावी काही दोष असले तसी प्रयत्नांनी तेवढे येतील. माझ त्यांच्या लेवरनातून प्रकट होणारा असतीष, आकौश, लडी-परंपरांचा विरोध, संताप, उपहास-उपर्योगित्वाचे करण्याजी आहेत. “अजैकान्त” लात्यांच्या साहित्याचा मौरा आणावलाभलेला आहे. यंदाचे सुंदर व आकर्षक मुरव्यपूष्टी ही आमच्याचे एका विद्यार्थिनी दिले आहे. या सर्वचे अभिनंदन. संपादक मंडळातील प्रा. कंडारकर त्यांची चांगली साथ लाभली. प्रा. डी. एस. शहा त्यांनी काही लेवर-कवितांवर संस्कार केले. उपगचार्य पु. आ. नवार्थ त्यांनी नेहमीप्रमाणे फोटो र त्याचे आवेदन चांगल्या प्रकारे केले. उपगचार्य जे. वी. मगदूम त्यांनी सहकार्य दिले. प्रा. एस. एन. गोस्वामी, प्रा. ए. डी. वी. वैसाही, प्रा. ए. वी. घेठे, प्रा. विलास परकाळे त्यांनी वेळीवेळी सहकार्य केले. मा. प्राचार्य डॉ. एम. एम. गांधी त्यांची प्रेषणा, समयोगित बहुमूल्य मार्गदर्शन सुस्वातीपासून मिळत शाहिले त्यामुळे हे कष्टकाश काम सुकर होत गेले. या सर्वांचा मी अणी आहे.

साताचा येथील प्रिंट अं चे मालक श्री. सदैश शहा आणि त्याचे सहकारी त्यांनी अल्पावधीत “अजैकान्त” मुक्तिक विस्तार दिले त्याबदल या सर्वचे संपादकीय मंडळातके आभास.



प्रा. डॉ. कृष्ण सुर्वी (प्रमुख संपादक)

## या वाचाचे मानो गत



बारामती येथील उज्ज्वल परंपरा असलेल्या, एका प्रथितवश महाविद्यालयाच्या प्राचार्यपदाची धुरा स्वीकारल्यानंतर नियालेल्या दुसऱ्या “अजैकान्त” साठी माझे “प्राचार्याचे मनोगत” देताना मला मनापासून अनंद होत आहे.

३३ वर्षाची प्रदीर्घ परंपरा लाभलेल्या महाविद्यालयाच्या प्रतिवर्षी नियमाने निघणाऱ्या “अजैकान्त” मध्ये महाविद्यालयाचा इतिहास प्रतिविवित होत रहतो. असे प्रतिवर्षी निघणारे महाविद्यालयाचे नियतकालिक म्हणजे महाविद्यालयाचा शैक्षणिक, कला, क्रीडा व सांस्कृतिक इत्यादी घडामोडींचा व यशोग्राथा सांगणारा चालता बोलता इतिहास असतो. जे विद्यार्थी महाविद्यालयातील आपले शिक्षण पूर्ण करून बाहेर जातात त्यांच्यासाठी असे वार्षिक म्हणजे एक स्मरणठेवा असतो.

आपल्या महाविद्यालयाची शैक्षणिक वर्ष १९९४-९५ मधील एकूण संख्या ५०१४. (शिक्षक १९७, शिक्षकेतर कर्मचारी १०३, विद्यार्थी ४७६१ = ५०६१) इतकी झालेली आहे. सध्या एकूण १३ पदव्युत्तर अभ्यासक्रम येथे शिकविले जातात. चालू शैक्षणिक वर्षपासून यशवंतराव चक्काण मुक्त विद्यापीठाचे अभ्यासकेंद्र आपल्या महाविद्यालयात चालू झालेले आहे. देशातील तालुका पातळीवरील ग्रामीण व शहरी संस्कृती एकत्र नांदत असलेल्या शहरातील पहिल्या पंचवीस महाविद्यालयात तसेच महाराष्ट्रातील पहिल्या पाच महाविद्यालयात या आपल्या तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयाचा समावेश होतो. पुणे विद्यापीठ कार्यक्रमात तालुका पातळीवरील विविध अभ्यासक्रम, शिक्षक, सेवक व विद्यार्थीसंख्या व गुणवत्ता इत्यादी सर्व निकषांचा विचार करता, आपल्या महाविद्यालयास पहिला क्रमांक व दर्जा मिळेल. येथील गुणवत्ता फार मोठी आहे. तिचा योग्य वापर केला तर आपले महाविद्यालय देशातील तालुका शेकेल, असा मला विश्वास आहे.

बारामती येथे सध्या उमारलेल्या व भविष्यात उमारल्या जाणाऱ्या उद्योगांच्या, मनुष्यबळाच्या जरजा जाणून घेणे, या उद्योगांकडून महाविद्यालयीन संशोधन व विकास प्रकल्पास तज्ज्ञ मार्गदर्शन व आर्थिक सहाय्य मिळवणे, प्रशिक्षित अधिकाऱ्यांच्या अनुभवाचा महाविद्यालयासाठी उपयोग करून घेणे, त्यांची व्याख्याने आव्योजित करणे, आपल्या विद्यार्थ्यांना रोजगार मिळवून देणे, स्पर्धात्मक परीक्षेसाठी त्यारी करणे इत्यादी व्यापक कार्यक्रमांसाठी नियोजन करण्यात येत आहे. अभ्यासक्रम चालू असताना तसेच शिक्षण पूर्ण केल्यानंतर

विविध स्पर्धा परीक्षांना बसण्यास प्रोत्साहन देण्यासाठी, या स्पर्धा परीक्षा व इतर आक्रान्तमक पर्यायांकरिता मार्गदर्शन करण्यासाठी, उद्योगधंडे व आपले महाविद्यालय यात समन्वय साधून आपल्या विद्यार्थ्यांना व्यवसाय व रोजगाराच्या संधी मिळवून देण्याकामी पुढील शैक्षणिक वर्षापासून आपल्या महाविद्यालयाच्या परिसरात एक स्वतंत्र स्पर्धा परीक्षा व व्यावसायिक मार्गदर्शन केंद्र स्थापन करण्यात येत आहे. यासाठी एक स्वतंत्र मानद सहसंचालक व एक समन्वयक अशी दोन पदे निर्माण करण्यात आलेती असून स्वतंत्र कार्यालय स्थापन करण्यात येत आहे. याद्वारे विद्यार्थ्यांचा विकास साधण्याचा प्रयत्न केला जाईल. विज्ञान, तंत्रज्ञान क्षेत्रातील व्यापक संशोधन व विकासासाठी नवनवे विभाग सुरु करण्यात येत आहेत. विज्ञान, संगणक (कॉम्प्यूटर), विद्युदाण्विकी (इलेक्ट्रॉनिक्स) विषय समाजभिस्त्रव बनविण्यासाठी पुढाकार घेण्यात येत आहे. या क्षेत्रातील विविध अभ्यासक्रम तसेच ग्रंथपालनशास्त्र, माहितीशास्त्र, वृत्तप्रविद्या, एकारिता, प्रसिद्धिशास्त्र, जनसंपर्कशास्त्र इत्यादी पदवी व पदव्युत्तर अभ्यासक्रम देखील चालू केलेले आहेत व केले जात आहेत. तथापी हे सर्व करतांना नीती, आस्था, पावित्र्य, आदर, पूज्यभाव, कृतज्ञता, स्वाभिमान आणि माणुसकी इ. गुणांची वजावट होणार नाही याची निश्चित दक्षता घेतली जाईल.

महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांची अधिकाधिक शिकण्याची वृत्ती वाढीला लागावी यासाठी आपले महाविद्यालय प्रथमपासून जाणीवपूर्वक प्रयत्न करीत आहे, जवळजवळ ९० ते ९५ टक्के विद्यार्थी या प्रयत्नांना प्रतिसाद देतात. उर्वरित विद्यार्थ्यांना देखील प्रवाहात आणण्याचा जाणीवपूर्वक प्रयत्न सातत्याने हे महाविद्यालय करीत आहे. परंतु अशा विद्यार्थ्यांनी व त्यांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्यांनी हेही लक्षात ठेवले पाहिजे की, स्वातंत्र्य म्हणजे स्वैराचार नव्हे. त्यांनी देखील आपल्याच हितासाठी या प्रयत्नांना मनापासून प्रतिसाद घावा.

विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासाला हे महाविद्यालय प्रथमपासून प्राधान्य देत आलेले आहे. यामध्ये अभ्यासाबरोबरच अभ्यासास पूरक व अभ्यासेतर उपक्रम मोठ्या प्रमाणात राबविले जात आहेत. महाविद्यालयातील शैक्षणिक वातावरणात व एकोप्यात वाढ होण्यासाठी तसेच विद्यार्थी, शिक्षक, प्रशासन यांच्यात सुसंवाद निर्माण करण्यासाठी आणि महाविद्यालयाविषयी मित्रत्वाची भावना वाढावी यासाठी हे महाविद्यालय सतत प्रयत्नशील राहील. हे करीत असतांना सर्व घटकांना एकत्र आणून परस्पर सामंजस्य, परस्पर सहकार्य इत्यादींच्या आधारे अंमलबजावणी केली जात आहे. महाविद्यालयात फक्त शैक्षणिक वातावरणच राहील याची काटेकोरपणे दक्षता घेतली जात आहे. या प्रयत्नांना सर्व घटकांनी, मनापासून साध देऊन महाविद्यालयाचा विकास करण्याच्या प्रयत्नात सहभागी होणे आवश्यक आहे.

मी माझील शैक्षणिक वर्षाच्या “अनेकान्त” साठी लिहिलेत्या “प्राचार्यांचे मनोगत” मध्ये एका महत्त्वाच्या बाबीबद्दल व अपेक्षित सहकार्याबद्दल माझे मत व्यक्त केलेले होते, ते (सर्व घटकांनी लक्षात व समजावून घेण्यासाठी) पुढा मांडू इच्छितो की, महाविद्यालयाचा सर्वांगीण विकास घडविण्यासाठी तसेच सर्व घटकांना एकत्रितपणे घेऊन पुढे जाण्यासाठी शैक्षणिक

व्यवस्थापन हेही महत्त्वाचे आहे. केवळ पाठ्यपुस्तकांचे अध्यापन, परीक्षांचे आयोजन, शैक्षणिक वेळापत्रक एवढ्यापुरतीच शैक्षणिक व्यवस्थापनाची संकल्पना मर्यादित नाही, संपूर्ण शिकणाचा व्यापक व सम्यक् विचार शैक्षणिक व्यवस्थापनात अभिप्रेत आहे. परिणामकारक शैक्षणिक व्यवस्थापनासाठी विकेंद्रीकरणाची व्याप्री मोठी करणे अत्यंत आवश्यक ठरते. या विकेंद्रीकरणातील प्रत्येक घटक, दुवा, सारखी महत्त्वाची असते ती गव्हन, डावलून कार्य साधण्याचा प्रयत्न व आग्रह झाल्यास गोंधळाची परिस्थिती तयार होईल. वरिष्ठ पातळीवर धोरणात्मक बाबी ठरविणे, त्यांच्या अंमलबजावणीवर लक्ष ठेवणे, मूल्यमापन करणे, अंमलबजावणीतील त्रुटी दूर करणे, धोरणाचा व अंमलबजावणीतील यशापयशाचा आढावा घेत राहणे, इत्यादी कार्याचा समावेश होतो. यासाठी निश्चित जाणीवपूर्वक वेळ दिला गेला पाहिजे. दैनंदिन व किरकोळ स्वरूपाची कामे विकेंद्रीकरणातील खालील किंवा मध्यम पातळीवर पूर्ण झाली तरच उच्च पातळीवरीत उपर्युक्त कार्यासाठी वेळ राहील. यादृष्टीने माझे सर्व घटकांना नम आवाहन आहे की, त्यांनी नवनवीन संकल्पना विचारात घ्याव्यात, स्वतः ही मांडव्यात. सर्वांच्या विचारविनिमयातून स्वीकारलेल्या योजना राबविण्यासाठी मनापासून सहभाग घ्यावा व त्यांच्या पूर्ततेसाठी प्रयत्नशील राहावे, यासाठी दैनंदिन स्वरूपाच्या कामकाजातून भविष्यकातील योजना आरवण्यासाठी, संकल्प राबविण्यासाठी आपला बराच सा वेळ दिला पाहिजे. आपल्या सहकार्यावरच भावी योजना, संकल्प यशस्वी होतील अशी मता आशा वाटते.

महाविद्यालयात चाकोरीबद्दु अभ्यासेतर उपक्रमांना देखील आपण महत्त्व देतो. आपल्या कार्यक्रमामध्ये देखील आपल्या महाविद्यालयाने उत्कृष्ट कार्य केलेले आहे. या परंपरा देखील आपणास पुढे चालू ठेवावयाच्या आहेत. अशा प्रकारच्या उपक्रमामध्ये विद्यार्थ्यांनी जास्तीत जास्त भाग घेणे आवश्यक आहे. आपणां सर्वांनाच महाविद्यालय कायमस्वरूपी प्रगतिपथावर ठेवावयाचे आहे.

बारामती शहर प्रचंड वेगाने प्रगती करीत आहे. उद्योगधंडे, बँका, व्यापारउदीम याची मात्र आपणा सर्वांना करावयाचे आहे. बारामतीचा शैक्षणिक व सांस्कृतिक विकास करण्याचे कार्य करणार आहोत व बारामती शहराचा शैक्षणिक व सांस्कृतिक नावलौकिक वाढविण्यास हातमार तावणार आहोत, अशी मता रवात्री वाटते.

प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार गांधी

## हार्दिक अभिनंदन

❖ गत फेब्रुवारी १५ मध्ये झालेल्या विधानसभा निवडणुकीत यशस्वी झालेल्या विधानसभा सदस्यांचे आणि त्यानंतर मंत्रिमंडळात समावेश झालेल्या मान्यवरांचे हार्दिक अभिनंदन आणि शुभेच्छा !

कॅबिनेट मंत्री -

- 1) मा. ना. मनोहर जोशी
- 2) मा. ना. गोपीनाथ मुंदे
- 3) मा. ना. सुधीर जोशी
- 4) मा. ना. प्रमोद नवलकर
- 5) मा. ना. शशिकांत सुतार
- 6) मा. ना. एकनाथ खडसे

राज्यमंत्री -

- 1) मा. ना. हर्षवर्धन पाटील
- 2) मा. ना. अनिल देशमुख
- 3) मा. ना. दिलीप कांवळे

विधानसभा सदस्य -

- 1) आमदार मा. अजित पवार

❖ नवीन विद्यापीठ कायद्यातील तरतुदीना अनुसरून पुणे विद्यापीठातील विविध अभ्यास मंडळांवर (बी.ओ.एस.) आमच्या महाविद्यालयातील पुढील शिक्षक निवडून आले आहेत, तरसेच काहींना स्वीकृत सदस्य म्हणून सहभागी करून घेण्यात आलेले आहे. सर्वांचे अभिनंदन व शुभेच्छा !

- 1) प्रा. एस. पी. कदम : समाजशास्त्र
- 2) प्रा. व्ही. जी. पडवेकर : संख्याशास्त्र

स्वीकृत सदस्य

- 1) प्राचार्य डॉ. एम्. एम्. गांधी

- 2) प्रा. आर. जी. पाटील :

- 3) प्रा. डी. बी. जगताप :

- 4) प्रा. के. एम्. जाधव :

- 1) डिफेन्स बजेटिंग : पुणे विद्यापीठ
- 2) बिझनेस फायनान्स : इंदौर विद्यापीठ

- 3) व्यापारी अर्थशास्त्र
- 4) इतिहास

- 5) मानसशास्त्र

- 2) प्रा. ए. बी. देसाई : व्यापारी अर्थशास्त्र
- 4) प्रा. पी. आर. पाटील : संरक्षणशास्त्र

- 3) प्रा. जे. बी. मगदूम : कॉमर्स
- 5) प्रा. एम्. डी. भगत : गणित

## अभिनंदनीय निवड -

पुणे विद्यापीठ कायदा १९९४ कलम ८५ (२) (ड) व (ई) मधील तरतुदीनुसार सन १९९५-२००० या ५ वर्षांच्या कालावधीसाठी गठित करण्यात आलेल्या महाविद्यालयाच्या स्थानिक व्यवस्थापन समितीवर खालील प्राध्यापक व शिक्षकेतर सेवकांची निवड झाली.

- |                                   |                            |
|-----------------------------------|----------------------------|
| 1) प्रा. बाबुराव शिवाप्पा माने    | - शिक्षक प्रतिनिधी         |
| 2) प्रा. रामचंद्र गणपत पाटील      | - शिक्षक प्रतिनिधी         |
| 3) प्रा. मारुती केरबा कोकरे       | - शिक्षक प्रतिनिधी         |
| 4) श्री. पांडुरंग आनंदराव साळुळखे | - शिक्षकेतर सेवक प्रतिनिधी |

## प्राचार्यपदी नियुक्ती -

अमच्या महाविद्यालयातील प्रा. डॉ. सदाशिव भीमराव खरोसेकर (व्याख्याता रसायनशास्त्र विभाग) ह्यांची विद्याप्रतिष्ठान या संस्थेच्या 'कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालया (एम.आय.डी.सी.निवासी विभाग) च्या प्राचार्यपदी नियुक्ती झाल्याबद्दल हार्दिक अभिनंदन !

## उपप्राचार्यपदी नियुक्ती -

- 1) प्रा. आप्पासाहेब भाऊसाहेब देसाई
- 2) प्रा. रमेश वामन जोशी

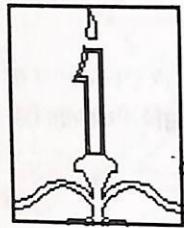
## विषय विभाग प्रमुखपदी नियुक्ती

- |                                   |                             |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| 1) प्रा. एकनाथ कारभारी पाटील      | - विद्युदाण्विकी            |
| 2) प्रा. धनंजय श्रीपाल शहा        | - मराठी                     |
| 3) प्रा. महावीर भाऊराव कंडारकर    | - हिंदी                     |
| 4) प्रा. मारुती दत्तात्रेय भगत    | - गणित                      |
| 5) प्रा. नंदकुमार जर्नादिन सुबंध  | - संगणकशास्त्र              |
| 6) प्रा. सुरेशकुमार नाभिराज पाटील | - ग्रंथपालन व माहितीशास्त्र |

## इतर

- अ) १) डॉ. चंद्रशेखर मुरुमकर :
- i) Life Membership of the Plant Physiology Club Baptala
  - ii) Membership : Society of Plant Physiology, New Delhi
  - iii) सदस्यत्व : अ. भा. दिगंबर जैन महासंघ, मुंबई
- ब) या महाविद्यालयाचा एक विद्यार्थी गोपी वरसंत गायकवाड (शिवनगर) ह्याची इंग्लंड मधील साऊथ-ईस्ट लीगसाठी कौटी क्रिकेट मॅचेसमध्ये खेळण्याठी फास्ट बोलर म्हणून निवड झाली आहे; त्यास हार्दिक शुभेच्छा!





## भावपूर्ण श्रद्धांजली



सन १९१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात विविध क्षेत्रातील नामवंत व्यक्तींचे व आमजनांचे दुःखद निधन झाले. हया सर्वांना आमची विनम्र श्रद्धांजली.

राजकीय नेते :-

भारताचे माजी राष्ट्रपती श्री. ज्ञानी झैलसिंग, भारताचे माजी पंतप्रधान श्री. मोरारजीभाई देसाई, समाजवादी नेते श्री. मधू लिमये.

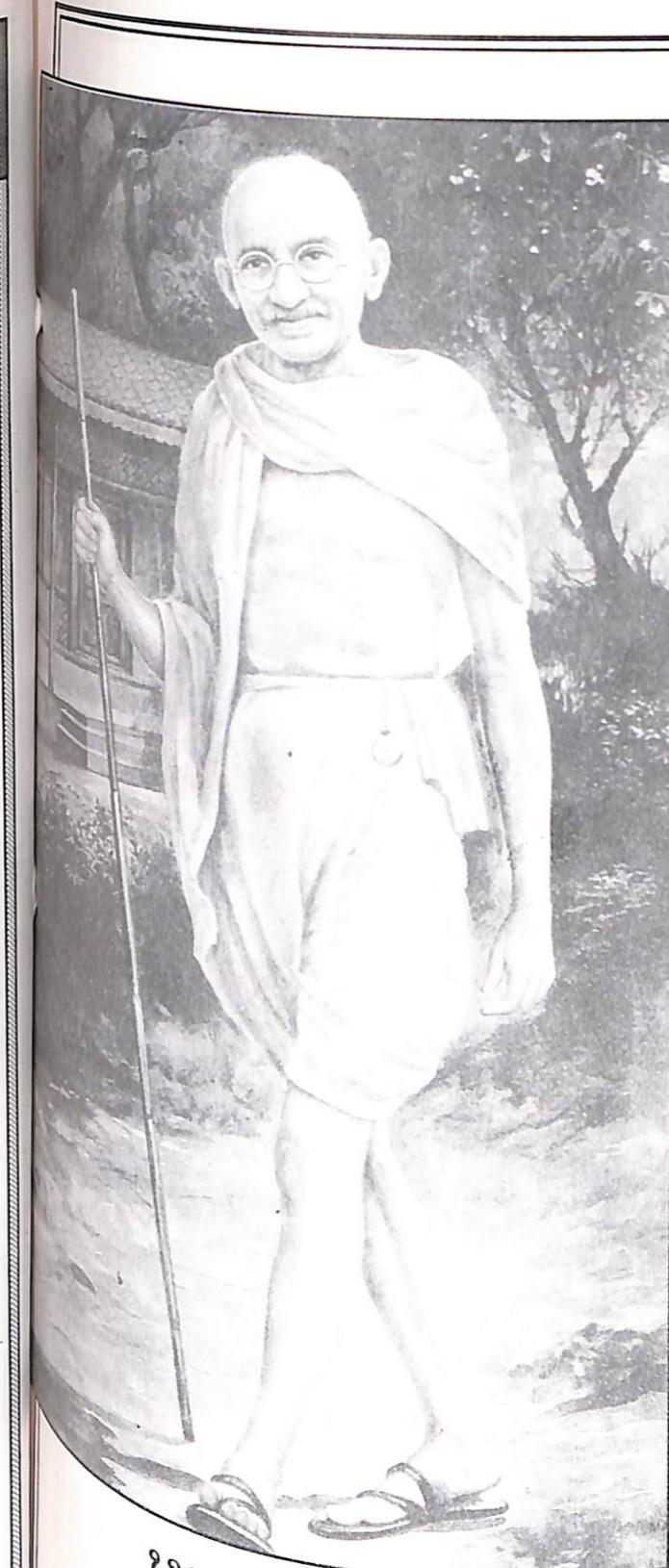
विद्वान साहित्यिक, कलाकार, उद्योजक व मान्यवर :-

तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी, नाट्यसमीक्षक श्री. माधव मनोहर, नाटककार व अभिनेते श्री. बाळ कोल्हटकर, ग्रामीण कथाकार श्री. शंकर पाटील, चित्रतपस्ची श्री. भालजी पेंढारकर, प्रसिद्ध कथा, काढंबरी व नाट्यलेखक श्री. जयवंत दळवी, नाटककार व दिर्दर्शक श्री. मो. ग. रांगणेकर, लष्कर प्रमुख श्री. बी. सी. जोशी, पुणे विद्यापीठातील राज्यशास्त्र व लोक प्रशासन विभागाचे माजी प्रमुख डॉ. एन. आर. इनामदार, भूगोल विभागाचे डॉ. प्रभाकर करमरकर. श्री. बाजीराव दिनकरराव जाचक व उद्योजक श्री. माधवराव पवार.

**कै. मा. शंतनुराव लक्ष्मणराव किलोस्कर (जन्म: २८-५-१९०३-निधन: २५-४-१९९४)**  
प्रसिद्ध उद्योगपती श्री. शंतनुराव किलोस्कर ह्यांचा तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयाशी अत्यंत जवळचा व आपुलकीचा संबंध होता. दि. २१ जून १९६९ यादिवशी या महाविद्यालयाचे “तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय” ‘असे नामकरण मा. शंतनुराव किलोस्कर ह्यांचे शुभहस्ते करण्यात आले. याप्रसंगी त्यांनी अनेकान्त एजयुकेशन सोसायटीस रु. १०,०००/- ची उदार देणी दिली. दि. २५ एप्रिल १९९४ रोजी श्री. शंतनुराव किलोस्कर ह्यांचे वयाच्या ९१ व्या वर्षी दुःखद निधन झाले. त्यांच्या आत्म्यास सद्गती लाभो ही प्रार्थना.

आमच्या महाविद्यालयातील प्राध्यापक व कर्मचारी ह्यांचे आमजन : प्रा. आर. के. नाळे व प्रा. ए. के. नाळे ह्यांचे वडील श्री. कोंडीबा हरी नाळे, प्रा. आर. एम. धालपैंह्यांचे वडील श्री. मारुती संभाजी धालपैंह्ये, प्रा. ए. एस. पंढरी ह्यांचा मुलगा सत्यजित, प्रा. बी. जी. देशमुख ह्यांच्या मातोश्री श्रीमती अनसूया गणपती देशमुख, श्री. आर. जी. शहा ह्यांच्या मातोश्री श्रीमती केशरबाई गौतमचंद शहा, श्री. डी. बी. देवकर ह्यांच्या मातोश्री सौ. कलावतीबाई बुवा देवकर, श्री. टी. के. सातपुते ह्यांच्या मातोश्री श्रीमती यमुनाबाई काशीनाथ सातपुते, प्रा. बी. आर. काळंगे ह्यांचे वडील श्री. रघुनाथ श्रीपती काळंगे.

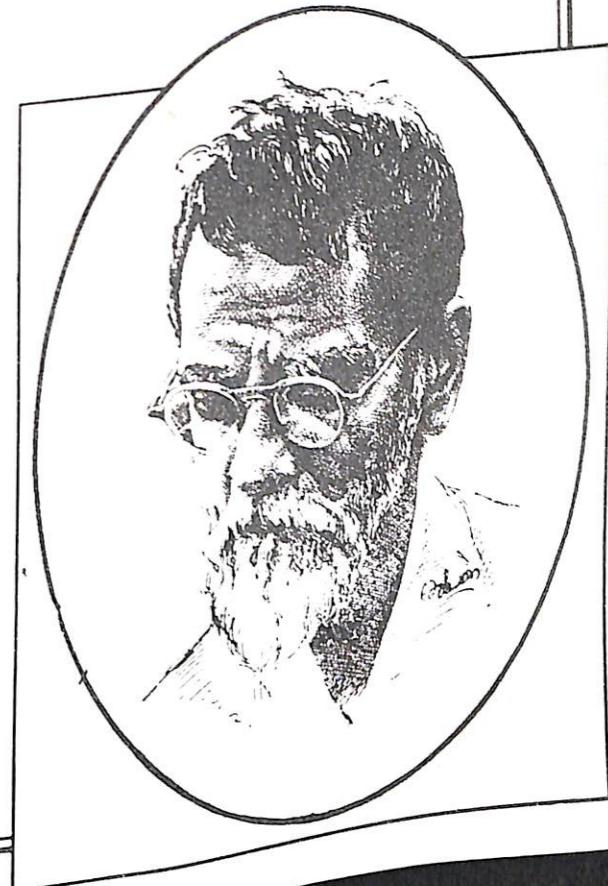
आमचे दोन विद्यार्थी सतीश प्रमोद गायकवाड, एम. ए. हिंदी (प्दि. वर्ष) दि. २२.१२.९४ रोजी ह्याचे अपघाती निधन झाले तसेच राहुल गोविंद शिंदे (१२वी आर्ट्स) ह्याचे दि. २९.१२.९४ रोजी आजारपणात निधन झाले. ईश्वर मृतांच्या आत्म्यास सद्गती देवो, ही प्रार्थना.



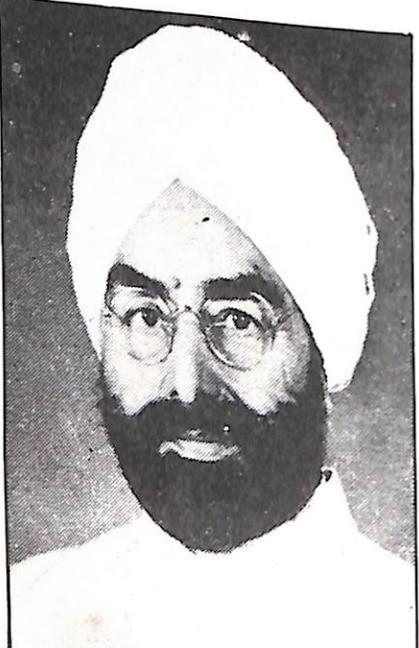
११६ त्या जयंतीनिमित्त

जन्म शताब्दीनिमित्त

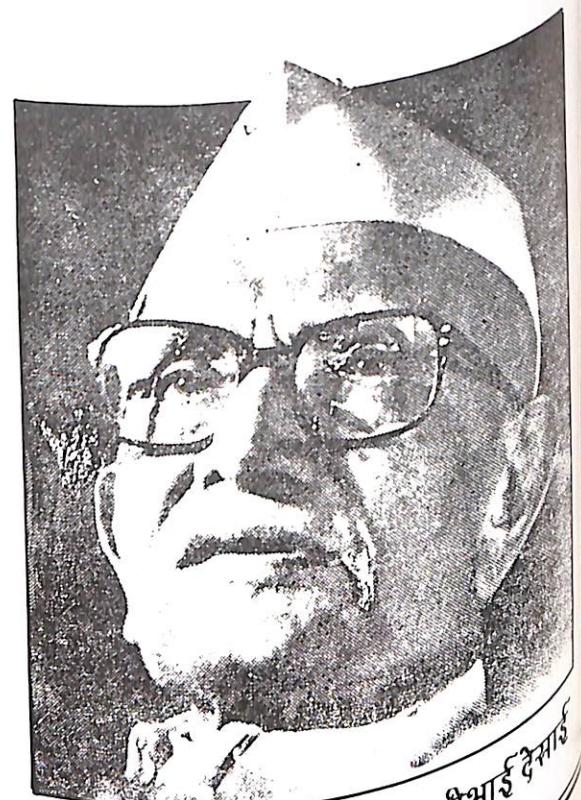
व  
र  
क  
र  
ी  
म  
ी  
व  
र  
ी



## भावपूर्ण श्रद्धांजली



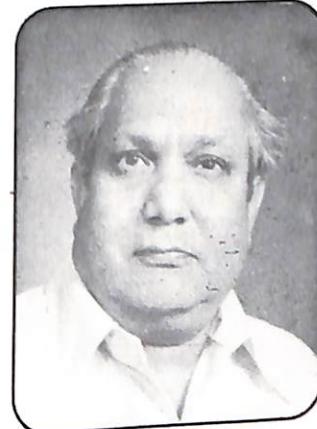
माजी साष्ट्रपती रवानी झैलसिंग



माजी पंतप्रधान मोहराजीभाई देसाई

## भावपूर्ण श्रद्धांजली

स्व. नलिनचंद्र गांधी



श्री. नलिनचंद्र गांधी २ फेब्रुवारी १९९५ कोजी महणजे वयाच्या ६९ व्या वर्षी निधन पावले आणि एक उमदे व्यक्तिमत्व कायमचे काळाच्या पड्याआड गेले.

उक्मानाबाद येथील एका संपन्न, सुसंस्कृत घराण्यात श्री. नलिनचंद्रांचा २९ ऑक्टोबर १९२६ काली जन्म झाला. त्यांचे वडील स्व. श्री. फुलचंद गांधी एक निष्णात वकील व मुंबई भाग घेतला होता. या जुलमी राजवटीविकाई चाललेल्या जनांदोलनाचे ते वेते होते. पं. नेहक, डॉ. राजेंद्र प्रकाश यासाकब्या काष्ठीय नेत्यांमध्ये त्यांची उठाव होती. पुढे हैदराबाद संस्थान भावतीय अंग्रेज्यात विलीन झाल्यानंतर मा. फुलचंदजी उमरव्याहून निवडून आले आणि तकालीन हैदराबाद बाज्याचे ते शिक्षण व कायदामंत्री झाले. असा थोक वाक्सा घेऊन आलेल्या नलिनचंद्रजींनी मात्र वकिली व राजकावण या पलीकडे जाऊन समाजकाक्षणाची कास धरली.

मोडनिंब, उक्मानाबाद येथे शालेय शिक्षण पूर्ण कर्कन ते महाविद्यालयीन शिक्षणाकाठी पुण्यात आले. बेळगांव येथील उद्योगपती कै. शेठ माणिकचंद मोतीचंद शहा ह्यांची कळ्या सुशाकका (गाढुवी बाई) ह्यांचेशी २३ मे १९४९ ला त्यांचा विवाह झाला. वडिलांनी दिलेल्या ५०००/- क. च्या भांडवलावर श्री. नलिनचंद्रांनी पुण्यासाकब्या साहित्य व संस्कृतीचे माहेबद्दल असलेल्या शहवात 'द्विं जवाहिब ट्रेडिंग कंपनी' या नावाने कागदाचा व्यवसाय सुक केला. स्वतः सायकलवर फिकन त्यांनी आपल्या व्यवसायाचा जम बक्सविला. बुधिमतेची कळोटी, व्यवसायातील चिकाटी, हातोटी आणि व्यवहावातील सचोटी या चतु:सूत्रीक आपला मूलमंत्र मानल्याने अल्पावधीत त्यांच्या कंपनीचे नाव मुंबई साकब्या व्यापारकेंद्रातही अब्रगण्य ठकले.

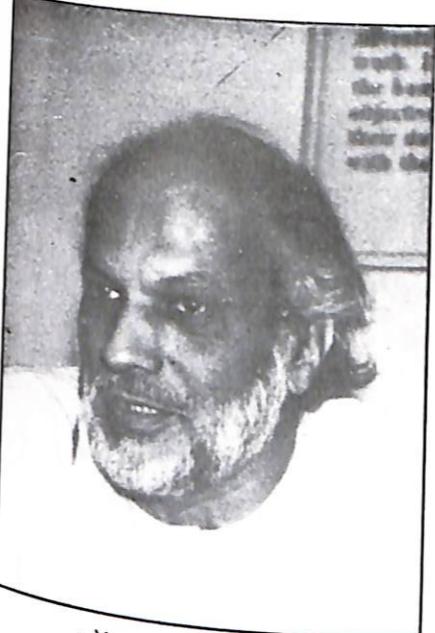
व्यवसायातून वेळ काढून त्यांनी सामाजिक कार्यातही दख घेतला. कै. शेठ वालचंद हिंदूचंद त्यांच्या सुविद्य पत्री सौ. कक्षुबबाई यांच्या स्मृति प्रीत्यर्थ उभावलेल्या पुण्यातील कक्षुबबाई मंगल कार्यालयाच्या व्यवस्थापनाची जबाबदारी श्री. नलिनचंद्रानी स्वीकारली व काटेकोरपणे त्याचे पालव केले. स्वतः व्यवस्थापक असूनही त्यांनी कक्षुबबाई मंगल कार्यालयाची तारीख उपलब्ध न झाल्यावे स्वतःच्या मुलाचे लग्न दोन महिने लांबणीवर टाकले. अशी निस्पृहता विकल्प ! द्रक्ष्याच्या बैठकीमुंबईक्स जाऊनही भत्ता न घेणाऱ्ये व कक्षुबबाई कार्यालयात चहाचा कपही न घेणाऱ्ये नलिनचंद्र फार मोरा आदर्श ठेवून गेले आहेत. या कार्यालयातच नव्हे तब इतकब्र सर्वब्रते 'गांधीवाबा' महणून सुपरिचित होते. कक्षुबबाई मंगलकार्यालयात त्यांनी अनेक सोयी केल्याच पण एक अद्यावत् लॅनिटोवियमही ब्रांथले व महाराष्ट्रातूनच नव्हे तब पक्षांतातून पुण्यात वैद्यकीय उपचावाकाठी येणाऱ्यांसाठी मोठी मोलाची सोय झाली.

पुण्यातील शेठ हिंदूचंद नेमचंद जैन बोर्डिंग ही संस्था श्री. नलिनचंद्रानी फुलासावखी जपली-जोपाकली. तेथे स्वच्छता, वर्कशीषपणा बरोबर शिक्षनीला कधी कैल पडू दिले नाही व याबाबतीत कोणाच्या दउपणास जुमानले नाही. प्रत्येक मुलावर जातीने लक्ष ठेवायचे, जेवणाचा दर्जा तपाकायचे, सोयीकवलतीही दायचे आणि प्रकंगी मुलांमध्ये मिसळून जायचे. शैक्षणिक बाबींवरबरच मुलांच्या सांस्कृतिक व सामाजिक विकासाकडे ही लक्ष देत. विद्यार्थ्यांची मने व शरीरे सुढूळ क्वांती व योग्य असेही आणि बोर्डिंग आदर्श गुक्कुल ठेवले. या कार्याक्रिता त्यांनी काही वेळा कौटुंबिक व व्यावसायिक कामास कटाक्षाने बाजूला साक्ष लंस्थेच्या कामास प्राधान्य दिले.

अशापकावे सामाजिक क्षत्यावर काम करतांना नलिनचंद्रजी हवूहवू पुर्ण क्षमाजाचे ब्रांथले. त्या काशणामुळे ने पूना द्रेडर्स अकास्मिणशनचे अध्यक्ष, श्री सुवर्ण सहकारी बँकचे संचालक, प्रोफेशनल इंजिनियर सोसायटी (मॉर्डर्न कॉलेज व हायस्कूल) च्या नियामक मंडळाचे सदस्य, शेठ माणिकचंद्र मोतीचंद्रलोककल्याण द्रक्ष्यांवरचे विश्वकृत, अनेकानन इंजिनियर नेतृत्वातील बाबामतीचे कल्याणास कमितीचे सदस्य, शेठ वालचंद हिंदूचंद लोककल्याण द्रक्ष्य, कक्षुबबाई हॉल व लॅनिटोवियम पुणे आणि शेठ हिंदूचंद नेमचंद स्मारक द्रक्ष्य मुंबई, शेठ हिंदूचंद नेमचंद जैन बोर्डिंग पुणे या दोन्ही धर्मदायक संस्थांचे कार्यकारी विश्वकृत, जैनप्रभावना मंडळाचे सदस्य बाहून यासर्वसंस्थांचे व्यवहार चोख ठेवले. व्यवसायाव्यतिक्रम अन्य क्षेत्रातील लोकात बरेणे व सतत काम करीत राहणे हा त्यांचा स्थायीभाग बनला. माणसे जोडणे हा त्यांचा दुखदा छंद होता. त्यांच्या कार्यपद्धतीचा बाबक्षा त्यांचे चिकंजीव चकोव गांधी यांगा लाभला; व्यवसायाची धुवा त्यांच्या खांद्यावर सोपवून नलिनचंद्रजीनी अधिक वेळ समाजकार्यासाठी दिला. ते सश्वद होते पण पूजाअर्चा कर्मकांड यांत ते बगले नाहीत. केवळ मिळेल तेव्हा वाचत शाहणे, प्रश्नांचा बाबकाईने अश्यास करणे, परखाड बोलणे, मतभेदाबाबत समोकासमोर चर्चा करणे व प्रश्न सोडवणे, माणसाची उत्तम पावऱ्य करणे, निर्णयावर ठाम राहणे हे त्यांच्यातील काही उल्लेख्य गुण होते.

त्यांच्या स्मृतीक्ष अभिबादन !

स्वागत व अभिनंदन



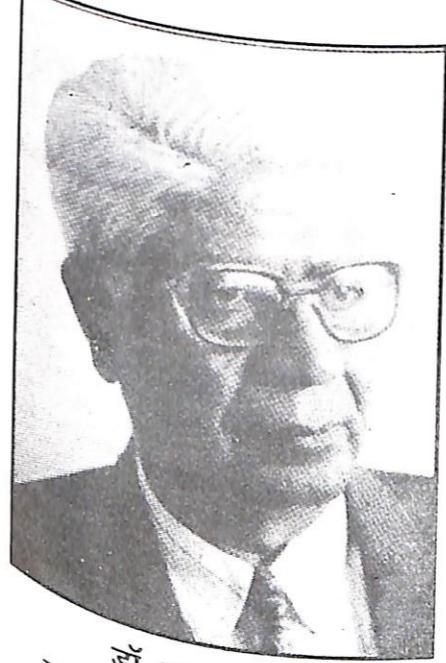
डॉ. वसंत गोवारीकर  
कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ, पुणे

निरोप



डॉ. श्रीधर गुप्ते  
माजी कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ, पुणे

अधिकारी



डॉ. उत्तम भोर्से  
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त  
विद्याधीठ (नाशिक) कुलगुरुपदी निवड



डॉ. जे. के. गोडा  
अधिकारी, व्यवस्थापन विद्याशाखा  
पुणे विद्यापीठ, पुणे

## रेजिस्ट्रल यशाचे मानकरी “अभिनंदन”

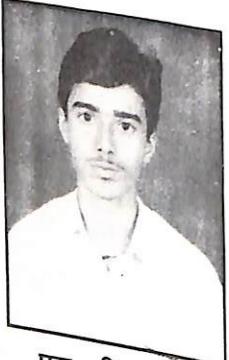
मार्च/एप्रिल १९९४ परीक्षेत महाविद्यालयात प्रथम श्रेणीत प्रथम क्रमांक



कु. जाई कानिटकर  
१२वी सायन्स



ए. आर. भंडारे  
ऑक्टोबर १९९४ च्या उच्च माध्यमिक परीक्षेत  
पुणे विभागात विज्ञान शाखेत प्रथम



एम. जी. माळवे  
१२वी आर्ट्स



व्ही. व्ही. बेदमुथा  
१२वी (ॲटो.)



वी. व्ही. जगताप  
१२वी (हॉटिकल्चर)



सौ. साधना काळे  
बी. लिब. सायन्स



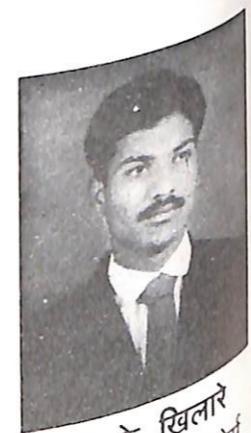
कु. प्रिया तावरे  
डी. टी. एल.



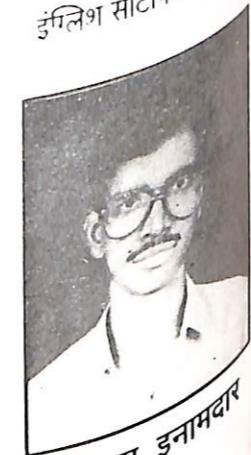
कु. लीना गांधी  
डी. सी. एम.



कु. रेशमा बोराळकर  
१२वी कॉर्मस



एम. के. खिलारे  
इंगिलिश सर्टिफिकेट कॉर्मस



एम. एम. इनामदार  
डी. बी. एम.



कु. सुमित्रा सावंत  
एम. ए. (हिंदी)



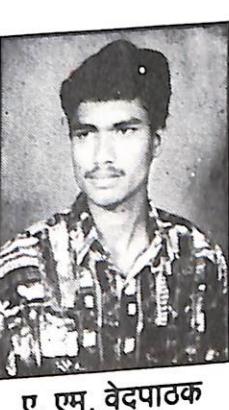
एम. जी. खोमणे  
एम. कॉम.



आर. एस. शहा  
बी. एस्सी.



आर. बी. देशमुख  
एम. एस्सी. (बॉटनी)



ए. एम. वेदपाठक  
बी. कॉम.

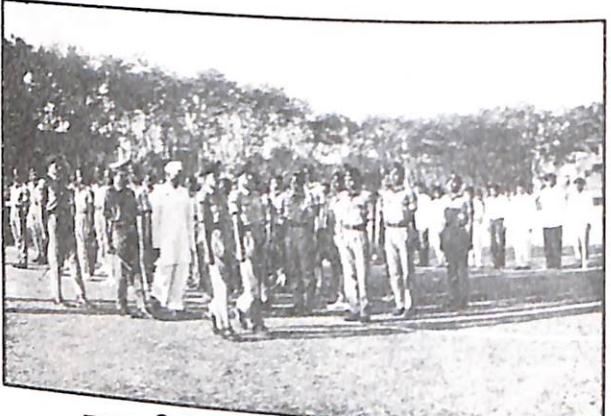


महाविद्यालयाच्या प्रियदर्शिनी कलामंच व अनेकान्त  
युवामंचचे कलाकार : वनराईचे अध्यक्ष  
मा. श्री. मोहन धारिया यांच्या समवेत.

## राष्ट्रीय छान्न सेना



ए. ए. कावजी  
सीनियर अंडर ऑफिसर



पथक निरीक्षण : मा. जंवुकुमार शहा



टी. डी. पाडुळे  
अंडर ऑफिसर



ए. के. शिवतारे  
अंडर ऑफिसर



एफ. एम. सत्यद  
अंडर ऑफिसर



एम. एन. तुपे  
अंडर ऑफिसर



एस. एस. दराडे  
सार्जट आर. डी. परेंड  
दिल्ली, २६ जानेवारी १९९४



मा. प्राचार्यासमवेत कंपनी कमांडर व रैंक होल्डर्स

## राष्ट्रीय सेवा योजना



मा. प्राचार्यासमवेत कार्यक्रम अधिकारी व गटप्रमुख

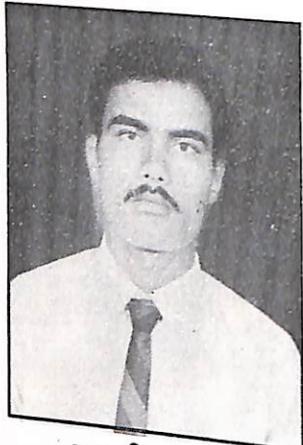


हिवाळी शिवीर, मौजे उंडवडी (क.प.)



मा. प्राचार्यासमवेत कार्यक्रम अधिकारी व विविध जिल्हा विद्यापीठस्तरीय शिविरांमध्ये सहभागी झालेले विद्यार्थी

## विभागीय क्रीड़ा स्पर्धासाठी निवड - १



एस. बी. सालुंके  
विद्यापीठ : योगासन



आर. आर. निवंधे  
टेबल टेनिस



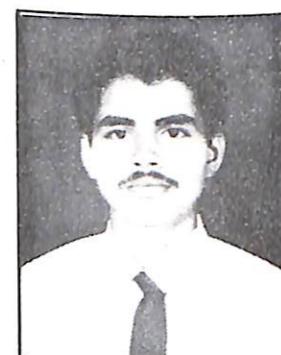
पी. पी. सातव  
विद्यापीठ : कबड्डी



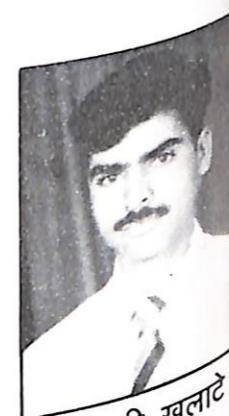
एस. टी. झांडे  
कबड्डी



डी. टी. झांडे  
कबड्डी



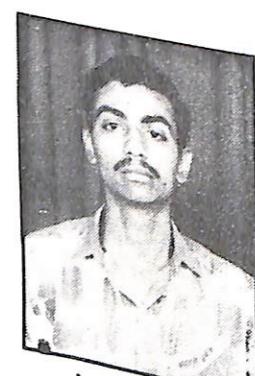
के. यू. भोसले  
मल्लखांब



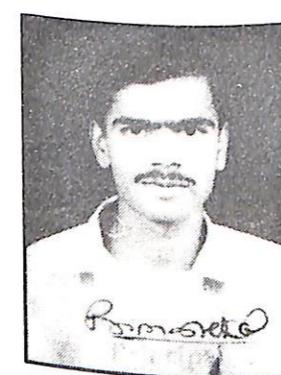
डी. धी. खेलाटे  
मल्लखांब



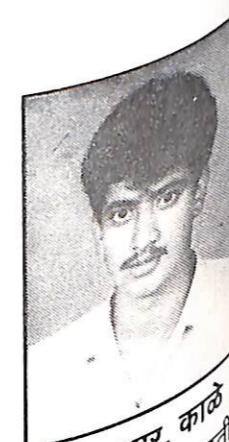
जे. च. वहाण  
व्हॉलीबॉल



जे. एम. पटेल  
व्हॉलीबॉल

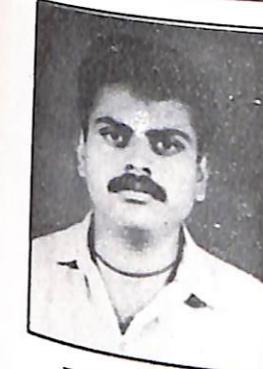


के. एम. कुलकर्णी  
बैंडमिन्टन

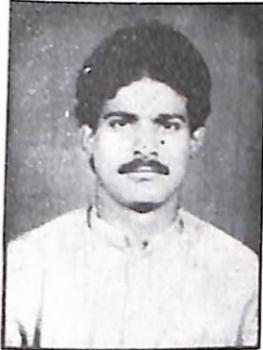


डी. आर. काट्रे  
स्केट बॉल व कुस्ती

## विभागीय क्रीड़ा स्पर्धासाठी निवड - २



एस. आर. काळे  
कुस्ती



सी. के. काळे  
कुस्ती व मैदानी स्पर्धा



जे. एम. भेडा  
बास्केट बॉल



एस. धी. परदेशी  
बास्केट बॉल



कु. ज्योति काळगी  
बैंडमिन्टन



कु. उषा गुलुमकर  
व्हॉलीबॉल, मैदानी स्पर्धा

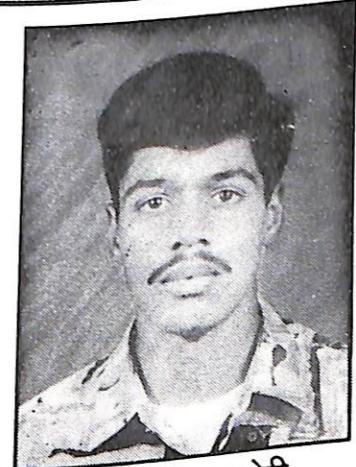


कु. विनिता जराड  
मैदानी स्पर्धा

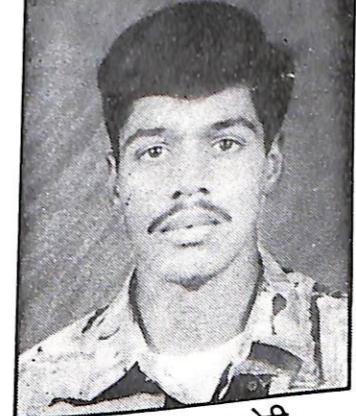


कु. चंदा लोले  
मैदानी स्पर्धा

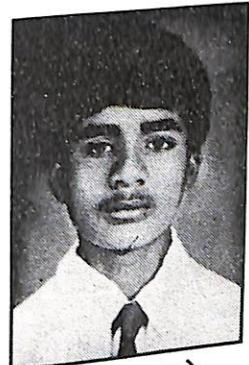
## विभागीय क्रीड़ा स्पर्धा (कर्निज्व इष्टविद्यालय)



कु. सुनिता रिंचंडारे  
विभागीय व्हॉलीबॉल व  
मैदानी स्पर्धा



आर. आर. जाधवे  
अखिल भारतीय कबड्डी स्पर्धा  
(महाराष्ट्र संघात निवड)



पी. एम. नलगे  
विभागीय खेळो स्पर्धा

## आंतरस्थानिक विद्यालयीन क्रीड़ास्पर्धा - १



मैदानी स्पर्धा व  
४ x १०० मी. रिले  
विजयी संघ

बैडमिंटन  
विजयी संघ



आंतरशालेय विभागीय  
कवड्डी विजयी संघ

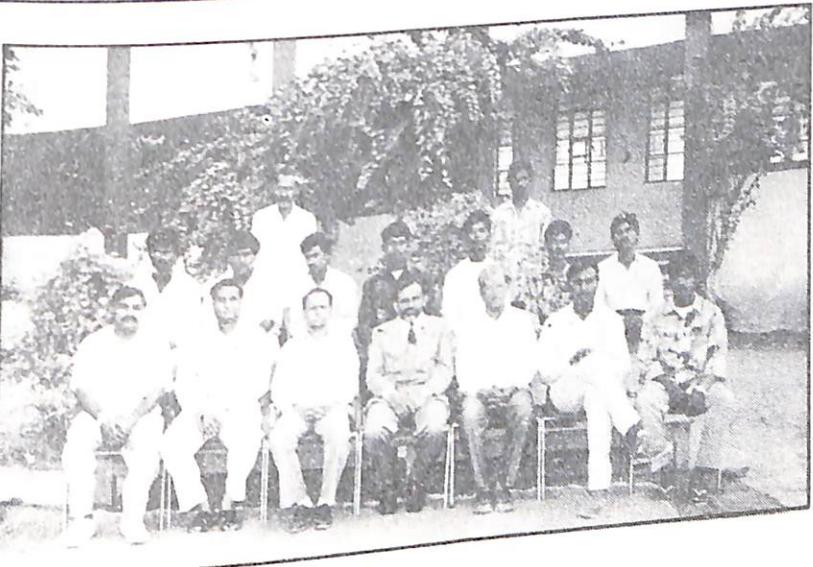


कबड्डी  
विजयी संघ

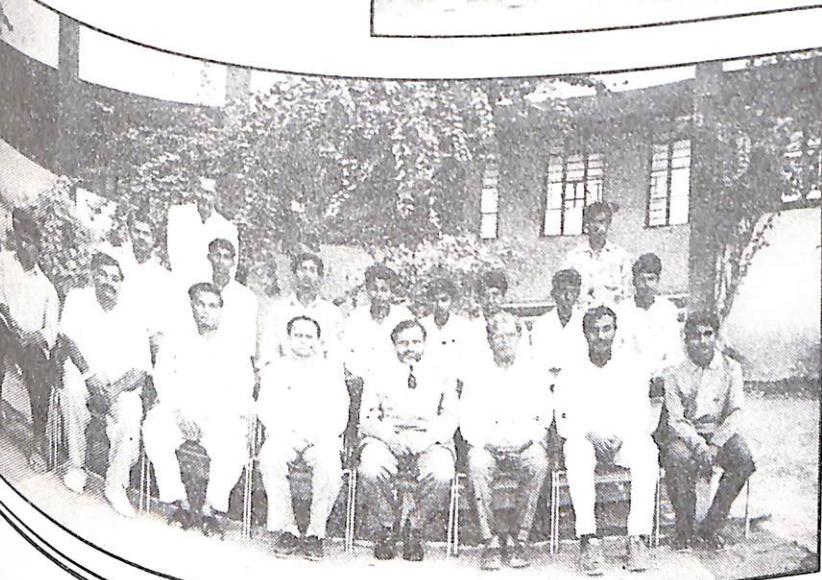
## आंतरस्थानिक विद्यालयीन क्रीड़ास्पर्धा - २



मल्लखांब  
विजयी संघ

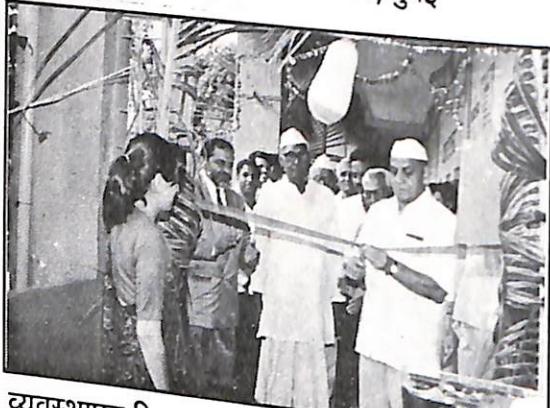


आंतरशालेय जिल्हा  
पातळी खोखो  
उपविजयी संघ



## महाविद्यालय आणि व्यवस्थापन विकास व संशोधन संस्था वधायिन दिन

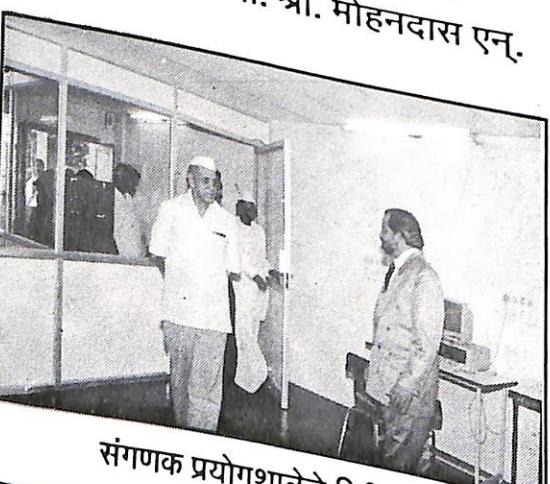
प्रमुख पाहुणे : मा. श्री. मोहन धारिया, माजी केंद्रिय वाणिज्य मंत्री व उपाध्यक्ष नियोजन मंडळ, अध्यक्ष : वनराई पूर्ण  
विशेष अतिथी : मा. श्री. मोहनदास, एन. सहाय्यक शैक्षणिक सलागार व सचिव, पश्चिम विभागीय समिती, अखिल  
भारतीय तंत्रशिक्षण परिषद, मुंबई



व्यवस्थापन विकास व संशोधन संस्था नवीन वर्गाचे  
उद्घाटन हरत्ते : मा. श्री. मोहन धारिया



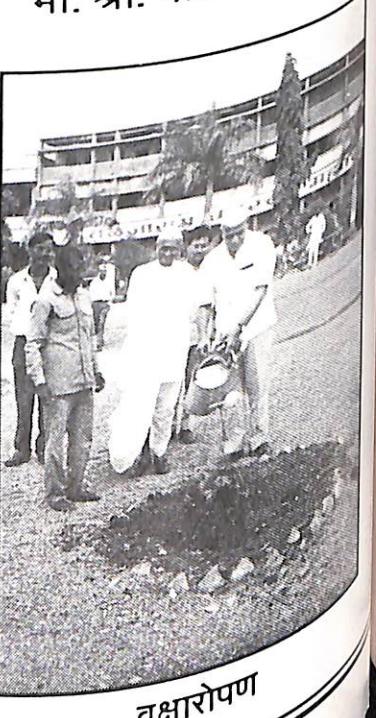
वातानुकूलित संगणक प्रयोगशाळेचे  
उद्घाटन हरत्ते : मा. श्री. मोहनदास एन.



संगणक प्रयोगशाळेचे निरीक्षण



प्रमुख पाहुणे  
मा. श्री. मोहन धारिया  
व विशेष अतिथी  
मा. श्री. मोहनदास एन.



वृक्षारोपण

## कविवर्षी सीरीवंत वाद आणि वकृत्व स्पर्धा

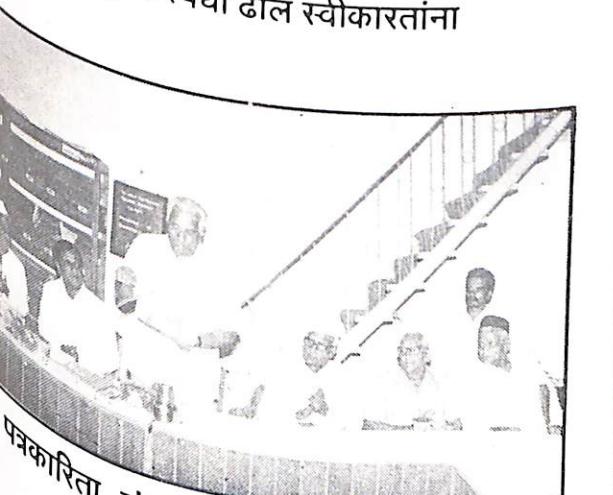
५८६



प्रमुख पाहुणे : आमदार विजयराव मोरे



वकृत्व स्पर्धा ढाल स्वीकारतांना



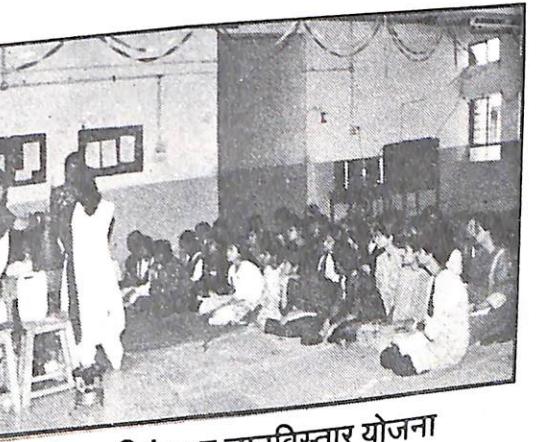
प्रकारिता, संसूचना व माहितीशास्त्र पदविका  
अभ्यासक्रमाचे उद्घाटन करतांना  
मा. आप्पासाहेब पवार



वादस्पर्धा ढाल स्वीकारतांना



उत्पूर्त वकृत्व स्पर्धेचा चषक स्वीकारतांना



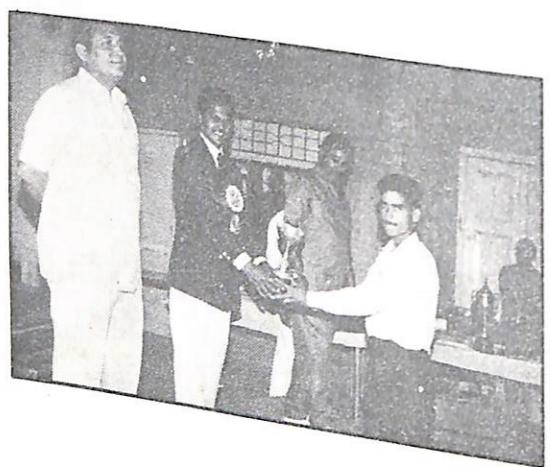
प्रौढ - निरंतर व ज्ञानविस्तार योजना  
सौ. अंजली पंढरी प्रात्यक्षिक करून  
दाखवितांना

## क्रीडा नैयुण्य पारितोषिक वितरण समारंभ

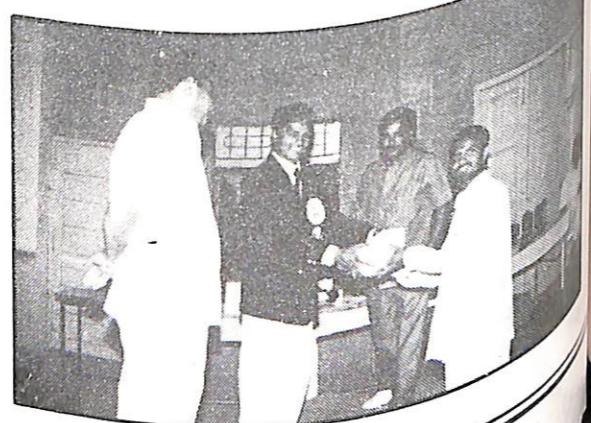
प्रमुख पाहुणे : मा. श्री. रमेशचंद्र मिश्रा, उपसंचालक, क्रीडा व युवक संचलनालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे.  
विशेष अतिथी : आंतरराष्ट्रीय मुदियोध्वा श्री. मनोज पिंगळे



मार्गदर्शन .....



## \* पारितोषिक वितरण \*



## वार्षिक युणवन्ता पारितोषिक वितरण समारंभ

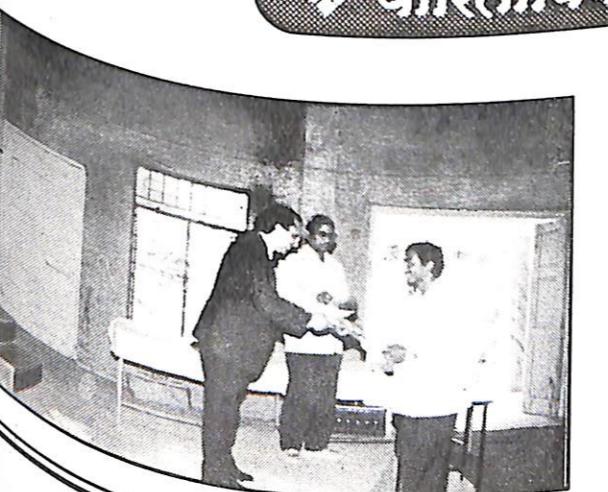
प्रमुख पाहुणे : मा. श्री. डॉ. एन. के. जैन, जॉइन्ट सेक्रेटरी व प्रमुख पश्चिम विभागीय कार्यालय (पुणे),  
विद्यापीठ अनुदान आयोग, नवी दिल्ली.



मार्गदर्शन .....



## \* पारितोषिक वितरण \*



## सेवानिवृत्तांचा सत्कार

❖ ਦੀਪਘੁਜ਼ਲਨ ❖



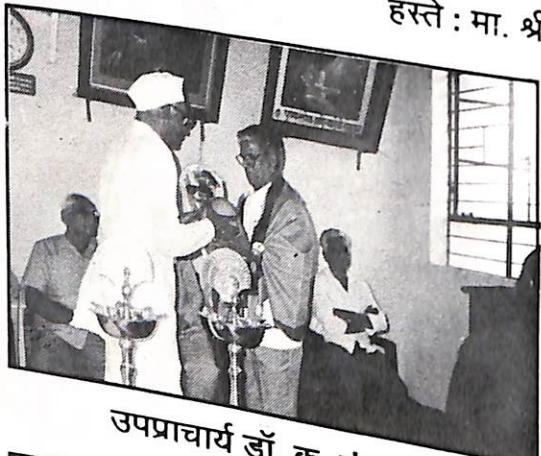
मा. श्री. जंबुकुमार शहा  
अध्यक्ष, अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी



प्राचार्य डॉ. मनोजकुमार गांधी

❖ सत्कार ❖

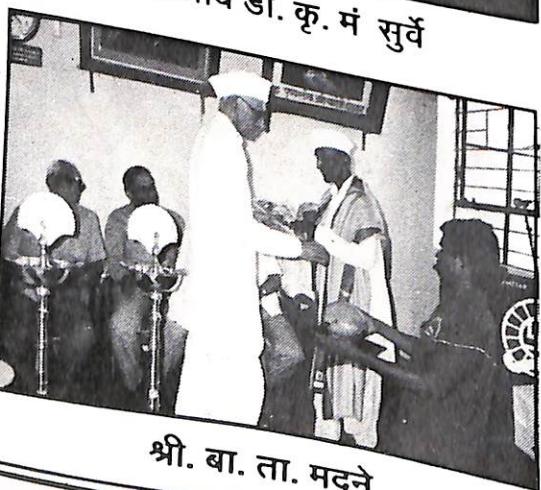
हस्ते : मा. श्री जंबुकुमार शहा



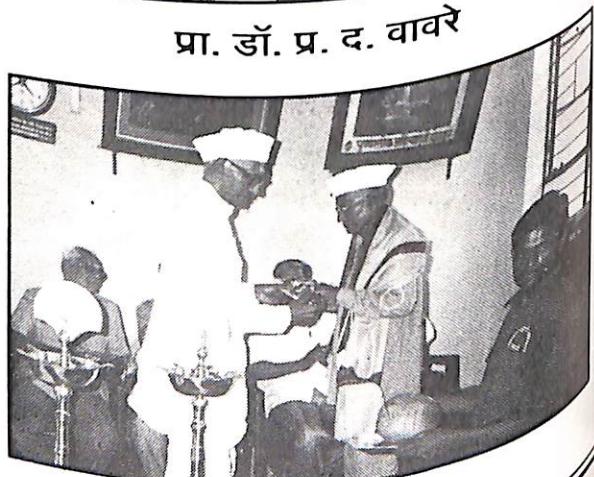
उपप्राचार्य डॉ. कृ. मं सर्वे



प्रा. डॉ. प्र. द. वावरे



श्री. बा. ता. मदने



श्री. मा. आ. सावंत

## अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी शैक्षणिक संकुल : एक परिचय

गुरुकुल शिक्षणप्रणालीचे महान् प्रणेते मा.स्व.फुलचंदजी गांधी, माजी शिक्षणमंत्री: हैदराबाद राज्य हांच्या प्रेरणेतून अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना झाली. या संस्थेने बारामती व जयसिंगपूर येथे दोन महाविद्यालये सुरु केली.

सुरुवातीस या महाविद्यालयाचे नांव 'बारामती महाविद्यालय' असेच होते व महाराष्ट्राचे माजी मुख्यमंत्री 'मा.यशवंतरावजी चव्हाण' ह्यांनी या महाविद्यालयाचे २३ जून १९६६ रोजी उद्घाटन केले होते. १९६२ ते ६६ मा.फुलचंदजी गांधी व ६६ पासून श्रीमान् शेठ लालचंद हिराचंद यांनी अध्यक्षपदाची धुरा वाहिली. त्यानंतर आजतागायत्रे श्री.जंबुकुमार चंदुलाल सराफ हे संस्थेचे अध्यक्ष आहेत. संस्थेच्या सचिवपदाची जबाबदारी सुरुवातीपासूनच मा.डॉ.वर्धमान कोठारी हे सांभाळत आहेत. पहिल्यावर्षी श्री.शा.दा.वणकुद्रे ह्यांनी प्राचार्यपद भूषणले.त्यानंतर प्रा.ए.ए.पाटील, डॉ.आर.टी.अळोळे, प्रा..एस.जी.भोरे, डॉ.जे.के.गोधा, प्रा.एस.पी.कदम हे प्राचार्य पटी होते. ११ डिसेंबर १९९३ पासून डॉ.म.मो.गांधी प्राचार्य आहेत.

२१जून १९६९ पासून डा. म. मा. गांधी प्राचाय आहत.  
उद्योगपती श्री. शंतनुराव किलोस्कर ह्यांचे शुभमहस्ते करण्यात आले. १९७७ पासून या महाविद्यालयात कनिष्ठ महाविद्यालय सुरु करण्यात आले.

सुमारे ३८ एकराचा विस्तार असलेल्या या परिसरांत वरिष्ठ व कनिष्ठ महाविद्यालयाशिवाय “व्यवस्थापन विकास व संशोधन संस्था” स्थापन करून काही नवे अभ्यासक्रमही सुरु केले. गेल्या ३३ वर्षात पुणे जिल्हांतील यांतील भागांतील या महाविद्यालयाने चौफेर प्रगती केली व संख्यात्मक आणि गुणात्मक अशी दोन्ही प्रकारची वाढ केली. सर्व प्रकारच्या शैक्षणिक विभागांमुळे इथे एक शैक्षणिक संकुलच तयार झाले. या संकुलात अनेक इमारती आहेत व त्यांत शैक्षणिक सुविधा व अभ्यासक्रम राबविले जात आहेत.

८० पर्यंत-

वाणिज्य शाखा

विज्ञान शाखा

- (प्रथम ते तृतीय वर्ष बी.ए.) - मराठी, हिंदी, इंग्रजी, इतिहास, भूगोल, राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, संरक्षणशास्त्र, समाजशास्त्र, मानसशास्त्र, योग.
  - (प्रथम ते तृतीय वर्ष बी.कॉम.) - अर्थशास्त्र, अकॉटन्सी, कॉस्टिंग, चिटणीसाची कार्यपद्धती, व्यापार संघटन, इंग्रजी, मराठी, हिंदी, संगणक प्रणाली (कॉम्प्युटर अॅप्लिकेशन )
  - (प्रथम ते तृतीय वर्ष बी.एस्सी.) - रसायनशास्त्र, पदार्थविज्ञानशास्त्र, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, संख्याशास्त्र, गणित, सूक्ष्मजीवशास्त्र, संगणकशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स.

(आ) पदव्युत्तर इलेक्ट्रॉन स्तरावर्ज-

- २) एम. ए. : (संपूर्ण): मराठी, हिंदी, इंग्रजी, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, व इतिहास  
 ३) एम. एस्सी. : प्रदार्पणशास्त्र, सामाजिकशास्त्र, पाणिशास्त्र व वनस्पतिशास्त्र.

(इ) कनिष्ठ - ४) डॉ. कॉम. : पदाथावज्ञानशास्त्र, रसायनशास्त्र, ब्राह्मण  
 ५) डॉ. टी. एल. : (डिप्लोमा इन् टक्सेशन लॉ)  
 ६) वी. लिब. अँड इन्फ. सायन्स (गंथपालन व माहितीशास्त्र)

‘महाविद्यालयरत्तरावर-  
कला, वाणिज्य व विज्ञान शाखांमध्ये पारंपारिक विषयांव्यतिरिक्त विज्ञान शाखेकडे ‘द्विलक्षी अभ्यासक्रम’:  
इलेक्ट्रॉनिक्स’ आणि वाणिज्य शाखेकडे ‘मार्केटिंग ॲंड सेल्समनशिप’

व्यवसायाभिमुख शिक्षणक्रमात - १) ऑटो इंजिनियरिंग, २) हार्टिकल्चर  
 (₹) ३) बेकरी औँड कॉफेक्शनरी हे अभ्यासक्रम सुरु आहेत.

### (ई) इतर कोर्सेस-

- १) सर्टिफिकेट कोर्स इन्‌ इंग्लिश (पुणे विद्यापीठ)
  - २) डिप्लोमा इन्‌ जर्नालिज़म्‌ कम्युनिकेशन, ॲडव्हरटायझिंग अँड पब्लिक रिलेशन्स (स्वायत्त) तसेच-
  - ३) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक ह्यांचे पूर्वतयारी वर्ग - एफ.वाय.बी.ए./बी.कॉम./  
बी.एस्सी.साठी याशिवाय-

या संकुलात स्थापन झालेल्या “व्यवस्थापन विकास व संशोधन संस्थे(आयएमडीआर) मध्ये विविध अभ्यासक्रम सुरु आहेत-  
१) पार्सनल ऑफिस

- मास्टर्स डिप्री इन् पर्सोनेल मॅनेजमेंट(एम.पी.एम.) २ वर्ष
  - डिप्लोमा इन् बिझनेस मॅनेजमेंट(डी.बी.एम.) २ वर्ष
  - डिप्लोमा इन् कॉम्प्युटर मॅनेजमेंट (डी.सी.एम.) १ वर्ष
  - सर्टिफिकेट इन् कॉम्प्युटर ऑप्लिकेशन्स (सी.सी.ए.) ३ महिने (स्वायत्त)
  - डिप्लोमा इन् कॉम्प्युटर ऑप्लिकेशन्स (डी.सी.ए.) ६ महिने (स्वायत्त)

शैक्षणिक वर्ष १९९५-९६ पासून खालील नवे अभ्यासक्रम सुरु करण्याचा मानस आहे.

  - एम. बी. ए.      २) एम. सी. एम.      ३) एम. एम. एस.

संस्थेने नवीन शैक्षणिक वर्षातील

संस्थेने नवीन शैक्षणिक वर्षापासून या संकुलात बालकांसाठी 'अनेकान्त विद्यामंदिर' सुरु केले असून त्यात मराठी व इंग्रजी माध्यंमातून शिकविले जाईल. संशेजा पार्श्वाभिलाखातील अभियान मरु करण्याचा मानस आहे.

उ) अन्य सोयी-ह्याच रमणीय परिसरात  
 १) महाविद्यालयीन शिक्षक व शिक्षकेन्द्र  
 सेन्टरांगे

- सेवकांची सहकारी पतंपेढी

  - २) ग्राहक भांडार
  - ३) मुला-मुलीसाठी स्वतंत्र वसतिगृहे (मेस व कॅन्टी नसह)
  - ४) नोकरी करणाऱ्या महिलांसाठी वसतिगृह
  - ५) योगधाम

४) समाज संस्कार

- १) ग्रंथ संख्या सुमारे ९० हजार  
 ३) २६ वर्तमानपत्र  
 ५) महाराष्ट्र →

(ऐ) इमारती-

- १) ग्रंथालय
  - २) कार्यालय
  - ३) पन्नास लेकचर हॉल्स
  - ४) प्रयोगशाला

२) १८० नियतकालिके

४) गरजू विद्यार्थ्यांना बुक वैकेची सोय  
ग.सी.ए., आय.टी.आय., मेडिकल,  
पाठी आवश्यक ग्रंथसंपदा व माहितीपत्रके.

७) संशोधन करू दिच्छिणान्यांसाठी स्वतंत्र कक्ष.

- ५) विद्यार्थिनी विश्रामिका
  - ६) स्टाफ रूम
  - ७) तीन वसतिगृहे
  - ८) योगधाम

- |                      |                               |
|----------------------|-------------------------------|
| १) अनेकांत मुद्रणालय | १४) व्यायामशाळा               |
| १०) बैकरी            | १५) प्राचार्य निवास           |
| ११) कॅटीन / मेस      | १६) वस्तिगृह व्यवस्थापक निवास |
| १२) गेस्टहाउस        | १७) एन.सी.सी. कार्यालय        |
| १३) जिवराज सभागृह    | १८) सायकल स्टैंड              |

आणि सर्वात शेवटचे पण सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे विविध विषयांचे १९७ अनुभवी व तज्ज्ञ प्राध्यापक व सेवेस सदा तत्पर १०३ शिक्षकेतर कर्मचारी व सेवक आणि या सर्वांचा दरवर्षी लाभ घेणारे विविध विद्याशाखांमधील विद्यार्थी (गतवर्षीची संख्या ४७६९ विद्यार्थी) या फै

या विद्यार्थीसाठी हे महातिहात्या असेही अप्रत्येका सर्वका गवातवे –

- १) कविवर्य मोरोपंत वाद व वकृत्व स्पर्धा  
 ३) "अनेकान्त" वार्षिक नियतकालिक  
 ५) सांस्कृतिक कार्यक्रमांतर्गत काव्यवाचन, नाट्यवाचन,  
     कथाकथन, सुगमसंगीत इ. कार्यक्रम  
 ७) राष्ट्रीय सेवा योजना  
 ९) विविध क्रीडा स्पर्धा  
 ११) लोकसंख्या शिक्षण  
 १३) प्रौढ शिक्षण वर्ग  
 १५) गुणवत्ता व क्रीडानेपुण्य पारितोषिक समारंभ  
 १७) १२ वी साठी उन्हाळी सुटीत ज्यादा अभ्यासवर्ग  
 १९) मुलांसाठी "अनेकान्त युवा मंच"

२) "अस्मितादर्श" भित्तिपत्रिका  
 ४) अभ्यास सहली  
 ६) राष्ट्रीय छात्रसेना  
 ८) तज्ज्ञांची व्याख्याने-आहार, आरोग्य,  
     स्त्रीमुक्ती, व्यवसाय इ. विषयांवर  
 १०) कमवा-शिका योजना  
 १२) निरंतर शिक्षण कार्यक्रम  
 १४) उत्स्फूर्त विषयांवर व्याख्याने  
 १६) मागास विद्यार्थ्यांसाठी इंग्रजी, गणित,  
     विज्ञान विषयांचे तयारी वर्ग  
 १८) मुलींसाठी "प्रियदर्शनी कला मंच"  
 २०) व्यवसाय मार्गदर्शन व स्पर्धा परीक्षा

आज या महाविद्यालयातील अनेक विद्यार्थ्यांनी अभ्यास, कैडास्पर्धा, विद्यापीठ व बोर्डच्या परीक्षा, लांबच्या सायकल सफरी, प्रजासत्ताकदिन संचलन, करमणूक कार्यक्रम पथनाट्ये, दिंडिया, आहार-आरोग्य तपासणी विषयक भाषणे, निबंध, काव्यवाचन, काव्य लेखन, रक्तदान शिविरे, आरोग्य तपासणी शिविरे, नेतृत्व शिविरे, इत्यादींमध्ये भाग घेऊन आपले कौशल्य प्रदर्शित केले आहे व पारितोषिके, गुणानुक्रम प्राप्त केले आहेत व महाविद्यालयाच्या लौकिकांत भर घातली आहे. तसेच येथील प्राध्यापकांनी आपल्या शैक्षणिक गुणवत्तेत व योग्यतेत वेळोवेळी भर घातली आहे.

## महाविद्यालयाचे अंतरंग

### \* विद्यार्थी संख्या ३०

#### अ) वरिष्ठ महाविद्यालय :-

पदवी अभ्यासक्रम	मुले	मुली	एकूण
कला विद्याशाखा	८२६	२०४	१०३०
विज्ञान विद्याशाखा	३६५	१४६	५११
वाणिज्य विद्याशाखा	१८३	८८	२०१
<b>एकूण</b>	<b>१३७४</b>	<b>४३८</b>	<b>१८१२</b>

#### पदव्युत्तर अभ्यासक्रम

एम. ए.	५२०	१२०	६४०
एम. कॉम	११४	३४	१४६
एम. एस.सी	७७	२९	१०६
बी. लिब. सायन्स	१३	१५	२८
<b>एकूण :</b>	<b>७२४</b>	<b>१९८</b>	<b>१२२</b>

#### पदवी व पदविका अभ्यासक्रम (व्यवस्थापन) :-

डी. बी. एम.	४१	०४	४२
डी. सी. एम.	३९	१३	०४
एम. पी. एम.	०५	--	१२
डी. टी. एल.	०८	०४	११४
<b>एकूण :</b>	<b>९३</b>	<b>२१</b>	<b>१७५</b>

#### प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम :-

सर्टिफिकेट कोर्स इन् इंग्लिश

कला विद्याशाखा	१५	०२	०००
विज्ञान विद्याशाखा	४९७	२०३	६४९
वाणिज्य विद्याशाखा	५३३	१३८	१४४
व्यवसायाभिमुख	०८८	०६७	०८०
<b>एकूण</b>	<b>११९५</b>	<b>४०८</b>	<b>१६०३</b>

यु.जी.सी. टीचर  
फेलोशिपसाठी  
पाठविलेले शिक्षक  
सन १९९४ - ९५

अ.क्र.टीचर फेलो शिक्षकाचे नांव विषय

- |                                                |                |
|------------------------------------------------|----------------|
| (अ) पीएच.डी. साठी निवड                         | वनस्पतिशास्त्र |
| प्रा.सौ.पाटील नीलम अनिल दि. १/८/९४ ते ३१/७/९५  |                |
| (१) प्रा.नारे नारायण मारुती - वाणिज्य          |                |
| प्रा.पाटील प्रकाश रत्न दि. १/८/९४ ते ३०/६/९५   | संरक्षणशास्त्र |
| (२) प्रा.वडु हावप्पा मल्लिकार्जुन रसायनशास्त्र |                |
| प्रा.कोकरे मारुती केरबा पदार्थ-                |                |
| प्रा.गावडे शिवाजी हरिभाऊ विज्ञान               |                |
| प्रा.वडगांवकर प्रमोद दिगंबर विद्युदाण्विकी     |                |
| दि. ३/८/९४ ते ३०/६/९५                          |                |
| प्रा.वडगांवकर प्रमोद दिगंबर इंग्लिश            |                |
| दि. १७/८/९४ ते ३०/६/९५                         |                |

टीचर फेलोशिप : पर्यायी  
शिक्षक नेमणूक १९९४-९५

- |                                   |                |
|-----------------------------------|----------------|
| १) प्रा.जोशी अनिरुद्ध गोविंद      | संरक्षणशास्त्र |
| २) प्रा.वाडेकर संपत्ति सिताराम    | इंग्लिश        |
| ३) प्रा.जोंजाळ प्रदीप सुरेश       | वनस्पतिशास्त्र |
| ४) प्रा.सुरवडे विजयकुमार रामकृष्ण | वाणिज्य        |
| ५) प्रा.कानगुडे भारत उद्घवराव     | पदार्थविज्ञान  |
| ६) प्रा.घोडेकर दशरथ सयाजी         | पदार्थविज्ञान  |
| ७) प्रा.कु.महाजन वैशाली वसंतराव   | विद्युदाण्विकी |
|                                   | रसायनशास्त्र   |

सन १९९४ - ९५  
नेमणूक झालेले  
शिक्षक

- |                                   |                   |
|-----------------------------------|-------------------|
| १) प्रा.सौ.गांधी मयुरी मनोजकुमार  | इंग्लिश           |
| २) प्रा.सौ.नेमाडे रंजना श्रीकांत  | मराठी             |
| ३) प्रा.काकडे विकास चिंतामण       | संख्याशास्त्र     |
| ४) प्रा.माळी शशिकांत नामदेव       | संख्याशास्त्र     |
| ५) प्रा.काळंगे अशोक एकनाथ         | पदार्थविज्ञान     |
| ६) प्रा.प्रधान नाना सदाशिवराव     | पदार्थविज्ञान     |
| ७) प्रा.साळुंखे श्रीकृष्ण ठानसिंग | रसायनशास्त्र      |
| ८) प्रा.पवार रामदास अंबादास       | रसायनशास्त्र      |
| ९) प्रा.मोरे परमेश्वर एकनाथ       | सूक्ष्मजीवशास्त्र |
| १०) प्रा.मराठे राजेंद्र जगन्नाथ   | ग्रंथालयशास्त्र   |
| ११) प्रा.कु.पवार सुजाता पांडुरंग  | भूगोल             |
| १२) प्रा.भोसले विश्वास नारायण     |                   |

१९९४-९५ मध्ये  
महाविद्यालयाच्या सेवेतून  
निवृत झालेले प्राध्यापक व सेवक

- |                                                           |  |
|-----------------------------------------------------------|--|
| १) प्रा.डॉ.कृष्ण मं. सुर्व : हिंदी : ३१-५-१९९५            |  |
| २) प्रा.डॉ.प्रभाकर द.वावरे : गणित : ३१-५-१९९५             |  |
| ३) श्री.बबन सदाशिव कोथमिरे : प्रयोगशाळा परिचर : ३०-६-१९९४ |  |
| ४) श्री.मारुती आबा सावंत : प्रयोगशाळा परिचर : १-६-१९९५    |  |
| ५) श्री.बाबू तात्या मदने : वॉचमन : ३०-६-१९९५              |  |

# या शैक्षणिक वर्षात महाविद्यालयात संपन्न झालेले कार्यक्रम

दिनांक	कार्यक्रम	पाहुणे
१) १३ ऑगस्ट १४	महाविद्यालयाचा ३२ वा वर्धापन दिन	प्रमुख पाहुणे मा.श्री. मोहन धारियाजी, माजी केंद्रिय वाणिज्य मंत्री व नियोजन मंडळाचे उपाध्यक्ष. अध्यक्ष : मा. श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा अध्यक्ष, अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी.
२) २२ सप्टेंबर १४	कर्मवीर डॉ. भाऊराव पाटील जयंती	प्रमुख पाहुणे मा.श्री. किरण गुजर, अध्यक्ष: नटराज नाट्य कला मंडळ व सभापती, पाणी पुरवठा कमिटी बा.न.प., अध्यक्ष: मा. श्री.पी.डी. कोळकर, मुख्याधिकारी : बा.न.प.
३) २९ सप्टेंबर १४	कविवर्य मोरोपंत आंतरमहाविद्यालयीन वक्तृत्व व वाद स्पर्धा उद्घाटन	प्रमुख पाहुणे: मा. आमदार विजयराव मोरोव सौ. अलकाताई मोरे, अध्यक्ष: डॉ. व. मा. कोठारी, सचिव : अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी
४) ३० सप्टेंबर १४	कविवर्य मोरोपंत आंतर महाविद्यालयीन वक्तृत्व व वाद स्पर्धा समारोप	प्रमुख पाहुणे डॉ. म. मो. गांधी प्राचार्य विषय : नवीन विद्यापीठ कायदा १९९४.
५) २५ ऑक्टो. १४	प्राध्यापक प्रबोधिनी व्याख्यान:	प्राचार्य डॉ. म. मो. गांधी
६) ७ फेब्रु. १९९५	प्राध्यापक प्रबोधिनी व्याख्यान:	प्राचार्य डॉ. म. मो. गांधी
७) २१ फेब्रु. १९९५	सांस्कृतिक कार्यक्रमांचे उद्घाटन	प्राचार्य डॉ. म. मो. गांधी
८) २५ फेब्रु. १९९५	फिशपॉण्डस (शेला पाणोटे)	सादरकर्ते : डॉ. कृ. मं. सुर्वे
९) १८ मार्च, १९९५	वार्षिक क्रीडा नैपुण्य पारितोषिक वितरण समारंभ	प्रा. वि. भि. परकाळे प्रमुख पाहुणे मा.श्री.रमेशचंद्र मिश्रा उपसंचालक क्रीडा व युवक कल्याण, पुणे. विशेष पाहुणे : मा. श्री. मनोज पिंगळे आंतरराष्ट्रीय मुऱ्युद्धा अध्यक्ष मा. श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा, अध्यक्ष अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी.
१०) १९ मार्च, १९९५	वार्षिक गुणवत्ता पारितोषिक वितरण सोहळा	प्रमुख पाहुणे : मा.डॉ. एन.के. जैन, प्रमुख व सहसचिव अनुदान आयोग पश्चिम विभागीय कार्यालय (पुणे) अध्यक्ष: मा. श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा, खजिनदार, अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी.

## २२९४ - १५ या शैक्षणिक वर्षात आमच्या महाविद्यालयातील प्राध्यापकांनी कैलेच्या कायद्या त घातीचा आलेख युटील प्राप्ताचे

### \* उजळणी वर्ता (स्थिरकारोर्स)

- प्रा. एस.एन. गोसावी
  - प्रा. अप्पासाहेब भा.देसाई
  - प्रा. आर.डल्ल्यू.जोशी
  - प्रा. के.एम. जाधव
  - प्रा. (सौ.) पदमजा केळकर-प्रभुणे
  - प्रा. अरुण एस. पंडरी
  - प्रा. नंदकुमार जे. सुवंध
  - प्रा. पी. सी. पिंगळे
  - प्रा. (सौ.) सुरेता सु.दोशी
- पुणे विद्यापीठ, पुणे  
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर  
सौराष्ट्र विद्यापीठ, राजकोट  
सौराष्ट्र विद्यापीठ, राजकोट  
पंजाब विद्यापीठ, चंडीगढ  
डॉ.बी.ए.मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद  
स.पटेल विद्यापीठ, वल्लभनगर गुजरात  
पुणे विद्यापीठ, पुणे  
पुणे विद्यापीठ, पुणे
- मराठी  
अर्थशास्त्र  
अर्थशास्त्र  
प्रायो.मानसशास्त्र  
समाजशास्त्र  
गणित  
संख्याशास्त्र  
पदार्थविज्ञान  
प्राणिशास्त्र
- १७-१-१४ ते १३-२-१५  
जून-जुलै, १४  
५-१२-१४ ते २४-१२-१४  
५-११-१४ ते ३१-११-१४  
२३-१२-१४ ते ११-१-१५  
२-१-१५ ते २८-१-१५  
१६-१-१५ ते ५-२-१५  
११-७-१४ ते ८-८-१५  
१-१२-१४ ते २८-१२-१५

### \* उद्बोधन वर्ता (ओरिएंटेशन कोर्स)

- प्रा. एस.आर.डी. अहमदनगर  
(एन.एस.एस.)
  - प्रा. एस.आर.डी. अहमदनगर  
(एन.एस.एस.)
- १) प्रा. ए.एन.सावळकर  
२) प्रा. आर.जी.कुदळे

### \* चर्चासत्रे / परिसंवाद / कार्यशाळा / परिषद / अधिवेशने यामध्ये सहभाग

- प्रा. एस.एन.गोसावी  
१) प्रा. अप्पासाहेब भा.देसाई
- प्रा. आर.जी.कुदळे

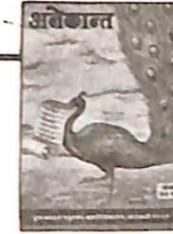
चर्चासत्रात निबंध वाचन  
Indian Society of  
Agricultural Economics  
Conference

४, ५ सप्टेंबर १४

२६ ते २८ डिसेंबर, १४

३) प्रा. आर. डल्लू, जोशी	न्यू आर्ट्स, कॉमर्स व सायन्स कॉलेज, अहमदनगर	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	८-४-१९९५ जानेवारी, १९९५ २८-२-१५ ते १-३-१५	
४) प्रा. के.एम.जाधव	आर. पी.डी. कॉलेज, बेळगांव (मराठी अर्थशास्त्र परिषद) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र विद्यापीठ, नासिक	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-१२-१४ ते २१-१२-१४ २८-२-१५ ते १-३-१५	
५) प्रा. (सौ). पद्मजा केळकर-प्रभुणे	नवीनी समाजशास्त्र परिषद, चंदपूर	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २०-११-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
६) प्रा. भास्कर पा. जोहरापूरकर	महाराष्ट्र राज्य पर्किमिन संमेलन, पंढरपूर	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २०-११-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
७) प्रा. एम.जे.साठे	उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
८) प्रा. के.एम.जाधव	एम.जे.कॉलेज, जळगाव	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
९) प्रा. एस.एन. पाटील	नासिक रोड महाविद्यालय	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
१०) प्रा. अरुण एस.पंडरी	सातारा	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
११) प्रा. एस.एन. पाटील	विज्ञान प्रकारिता शिवीर, औरंगाबाद	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
१२) प्रा. लक्ष्मा नाईक	पुणे विद्यापीठ, पुणे	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
* व्याख्याने		संत बाणेश्वरा शाळा, मनमाड	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५
१) प्रा. विलास दि. काकडे	राष्ट्रीय सेवा योजना शिवीर, उंडवडी	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
२) प्रा. वर्धमान अ. संगाई	लोकसंख्या शिक्षण शिवीर	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
३) प्रा. के.एम.जाधव	शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय, अकलूज साखरवडी	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
४) प्रा. भास्कर पा.जोहरापूरकर	मयूरेश्वर विद्यालय, मोरगाव कला, विज्ञान, वाणिज्य महाविद्यालय, नासिक रोड	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
५) प्रा. अरुण एस.पंडरी	प्राध्यापक प्रबोधिनी	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
६) प्रा. दिलीपकुमार का.गुरुव	मानविकी ताण व योगोपचार पोस्टर प्रदर्शन व भाषण	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
७) प्रा. ए.वी. भगाटे	महाराष्ट्र वारामती	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
८) प्रा. श्रीमती सीमा नाईक	उंडवडी (क.प.)	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
९) प्रा. ए.वी. गोडसे	तहसिल कार्यालय, वारामती	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
* लेख - कविता प्रकाशन	तालुका साक्षरता मंचार्क माहिला मंडळ	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
१) प्रा. विलास दि.काकडे	तालुका, वारामती शिवीर, वारामती	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
ज्ञानोदय, अहमदनगर	कला, विज्ञान, वाणिज्य महाविद्यालय, नासिक रोड	चर्चसित्र : नवीन आधिक धोरण व आतरराष्ट्रीय व्यापार भारतीय रूपयाची परिवर्तनीयता कृतिसंब्र	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
विवाहाचा खर्च कमी कसा करता येईल ?	ज्ञानोदय, अहमदनगर	गणित मार्गदर्शन	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	
ऑकटो.नोव्हें. १५		महानगरांच्या समस्या	१९-११-१४ ते २१-१२-१४ ७ व ८ जानेवारी, १९९५ मे, १५	

२) प्रा. भारत्कर पा. जोहरापूरकर	बारामती वैभव, बारामती अमृत, नासिक	पक्षी जाय दिगंतरा भारतीय संस्कृतीत वृक्ष कविता	१९-१-१४ दिपावली विशेषक नोव्हेंबर १४
३) प्रा. प्रभाकर दा. फरसोले	बारामती वैभव, बारामती	Super conducting Bi-Sr.-Ca-Cu-O films via an Electronic position	Sept. 94
४) प्रा. डॉ. विलास एन. शिंदे	Indian Journal of Physics Calcutta	Tephrosia Purpurea Pers	1995
५) प्रा. डॉ. चंद्रशेखर व. मुरुमकर	Biology Plantarum (Italy)	Ecophysiological Studies in some weeds of Baramati II Phosphorus metabolism in Thlaspias arvensis L By M.B.Jadhav & Dr.C.V. Murumkar	Sept. 94
६) प्रा. इन्डियन जॉर्नल ऑफ क्राइोजेनिक्स	Shivaji University, Kolhapur	लोकन्यायालयामध्ये पॅनल जज्ज म्हणून कार्य	सप्टेंबर १९९४
७) प्रा. डॉ. विलास एन. शिंदे	Cryogenics and its applications Ed. 18th Vol. of Indian Journal of Cryogenics (A Research Paper)	पुणे विद्यापीठ, पुणे	१९९४
८) प्रा. कु. मीरा दि. वैद्य	बारामती	पुणे विद्यापीठ, पुणे	१९९४
९) प्रा. एम. डॉ. गोडसे	एम.फिल. (भूगोल)	लघु प्रबंधाचा विषय - कांद्याच्या बदलत्या किंमतीचा उत्पादकावर होणारा परिणाम (लोणंद कांदा मार्केट : एक विशेष अभ्यास)	१९९४ मे १९९५ मे १९९५
१०) प्रा. एम. डॉ. गोडसे	एम.फिल. (भूगोल)	पीजीसीटीई (इंग्लिश) एम.ए.ड. (शिक्षणशास्त्र) एम.लिब औण्ड इफर्मेशन सायन्स	१९९४ मे १९९५ मे १९९५
११) प्रा. एम. डॉ. गोडसे	एम.फिल. (भूगोल)	लघु प्रबंधाचा विषय - कांद्याच्या बदलत्या किंमतीचा उत्पादकावर होणारा परिणाम (लोणंद कांदा मार्केट : एक विशेष अभ्यास)	१९९४ मे १९९५ मे १९९५
१२) प्रा. बाळासाहेब जी. देशमुख	२) प्रा. बाळासाहेब जी. देशमुख	पीजीसीटीई (इंग्लिश)	१९९४
१३) प्रा. बी. आर. घाडो	३) प्रा. बी. आर. घाडो	एम.ए.ड. (शिक्षणशास्त्र)	१९९४
१४) प्रा. सुरेशकुमार एन. पाटील	४) प्रा. सुरेशकुमार एन. पाटील	एम.लिब औण्ड इफर्मेशन सायन्स	१९९४



## वार्षिक नियतकालिक, एक आकर्षण

‘महाविद्यालयीन क्षेत्रात ज्या ज्या गोष्टींबद्दल विद्यार्थ्यांना उत्सुकता असते, अशाच गोष्टींपैकी एक म्हणजे महाविद्यालयांची वार्षिक नियतकालिक. यामध्येही ज्या विद्यार्थ्यांना विशेष उत्सुकता असते ते विद्यार्थी म्हणजे या नियतकालिकांसाठी जे विद्यार्थी आपले कथा, कविता, लेख देत असतात, असे विद्यार्थींव जे विद्यार्थींव वर्षभरात विविध स्पर्धामध्ये बक्षिसे मिळवतात. एनसीसी, एनएसएस मध्ये विशेष प्रावीण्य दाखवतात, वक्तृत्व स्पर्धामध्ये बक्षिसे मिळवतात. विविध कीडास्पर्धामध्ये महाविद्यालयांचं नेतृत्व करतात. अशा ज्या विद्यार्थ्यांचे फोटो व माहिती असते, असे सर्व विद्यार्थीं या नियतकालिकांची वाट पाहत असतात. पण, असे असलं तरी वार्षिक नियतकालिके ही त्या त्या महाविद्यालयाचे चित्र स्पष्ट करतात. या अर्थात नियतकालिके ही त्या त्या महाविद्यालयाचे चित्र स्पष्ट करणारे आरसेच असतात.

विद्यार्थ्यांच्या साहित्याबोराच महाविद्यालयातील प्रत्येक विभागाचे वर्षभराचे अहवाल, महाविद्यालयात संपन्न झालेल्या अनेक कार्यक्रमांचे रिपोर्ट्स व फोटो तसेच अनेक ठिकाणी गेलेल्या सहलींची माहिती, एनसीसी व एनएसएसची हिवाळी शिबिरे इ. विषयीची माहिती या नियतकालिकांमध्ये असते.

पुण्यातील महाविद्यालयांमध्ये एस.पी. कॉलेज, फर्युसन कॉलेज, गरवारे कॉलेज, लॉ कॉलेज यांची नियतकालिकेही चांगल्या प्रकारे प्रसिद्ध होत असतात. पण, महाविद्यालयांचे वार्षिक नियतकालिक कसं असावं, याची उत्कृष्ट उदाहरण म्हणजे वारामतीच्या तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय व शिरूरच्या सी.टी. बोरा महाविद्यालयांची ‘अनेकान्त’ हे नियतकालिक. हे नियतकालिक अगदी पहिल्या पानापासून ते शेवटच्या रितीने केलेली असते. मुद्दामहून मी या महाविद्यालयांचे काही जुने अंक संग्रही ठेवले आहेत.

इतरही महाविद्यालयांच्या नियतकालिकांची कामे सध्या बहुतेक सर्व काम करणारी, प्रोत्साहन देणारी ही नियतकालिके महाविद्यालयीन क्षेत्रातील अनिवार्य घटक आहेत.’

(लोकसत्ता दि. १/४/९५ मधील बातमीतील वेचक भाग:  
विविध महाविद्यालयांच्या नियतकालिकांचे तुलनात्मक परीक्षण)



# तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयीन सेवकांची सहकारी पत्रसंरथा मर्यादित, बारामती जिल्हा पुणे

नोंदणी क्र. पी. एन. ए. / बीएमटी / बीएनके / १०१० / १९८३ दिनांक : ४-८-१९८३

♦ दिनांक ३१ जानेवारी १९९५ अखेर संस्थेची सांपत्तिक स्थिती ♦

- १) सभायाद रांगवा १७३
- २) अधिकृत भागभांडवल ३० लाख
- ३) वर्गल भाग भांडवल १६.०५ लाख
- ४) राखीव निधी २.१७ लाख
- ५) सभायाद रेवी १० लाख
- ६) संस्थेची गुंतवणूक ४.३९ लाख
- ७) सभायाद कर्ज येणे ३४.५० लाख
- ८) लाभांश दर १० टक्के
- ९) आँडीट वर्ग "अ"

## ♦ संस्थेची ठळक वैशिष्ट्ये ♦

- १) माफक दराने रु. ६०,०००/-ची कर्ज मर्यादा.
- २) तातडीचे कर्ज मागताक्षणी उपलब्ध.
- ३) मयत सभायाद वाटार यहाय निधिद्वारे मृत सभायादाचे वाटारार रु. २५००/- मदत
- ४) सभायादांचे रेवीवर आकर्षक व्याज दर.
- ५) दिवस ११.५ टक्के, १० दिवस १२ टक्के, १८१ दिवस १३ टक्के,
- ६) दिक्किंदिग रेव योजना. व्याज दर १२ टक्के.
- ७) अक्षदा रेव योजना. व्याज दर १२ टक्के.
- ८) पुनर्गुंतवणूक रेव योजना व दामदुप्पट रेव योजना लवकर द्युम्ह होत आहे.

श्री. व्ही. डी. महामुनी

खणिनदार

डॉ. डी. व्ही. सरोदे

सचिव

## ♦ संचालक सदस्य ♦

- प्रा. डी. ए. शहा  
श्री. आरू. के. गलांडे  
प्रा. नतिनी कृ. शहा
- प्रा. ए. एम. वडे  
श्री. ए. एम. मोरे  
प्रा. अदिगता अ. पाढ्ये

प्रा. इ. के. पाटील  
अध्यक्ष

प्रा. आरू. एम. बनकर  
श्री. ए. जी. खोमणे  
श्री. हिवरकर डी. डी. - अकॉर्ट



## २१ व्या शतकातील शिक्षणाची दिशा

श. भा. घान्देकर  
शिक्षण सहसंचालक, पुणे

२. गणिती पांडित्याचा प्रभाव; त्यामुळे विश्वाची रचना ही केवळ गणिती स्वरूपाची असावी असा समज.

३. पदार्थ (Basic Building Blocks) हाच विश्वातील सर्व घटनांचा पाया असून भौतिक विश्व हे केवळ वेगवेगळ्या पदार्थमय वस्तू जोडून तयार केलेले एक महायंत्र आहे आणि ते न्यूटनने शोधून काढलेल्या गतिविषयक नियमांनीच चालते अशी दृष्ट्वा. माणसांनी तयार केलेल्या यंत्राप्रमाणेच या वैशिक महायंत्राचेही काही मूलभूत भाग असून संपूर्ण विश्व म्हणजे या सर्व मूलभूत भागांची गोळाबेरीज होय, असा समज.

४. शरीर आणि मन ही दोन स्वतंत्र, भिन्न तत्त्वे आहेत. शरीर किंवा पदार्थ जड असून, त्यात हेतू, जीवन किंवा चैतन्य नसते आणि त्याचे सर्व कार्य यांत्रिकी नियमांनी होत असते अशी धारणा.

५. "मी विचार करतो म्हणून माझे अस्तित्व आहे"; ज्या वस्तूबद्दल आपण अगदी स्पष्टपणे विचार करू शकतो त्याच तेवढ्या सत्य आहेत. अंतःप्रज्ञा (intuition) आणि निष्कर्ष (deductivism) हीच ज्ञान मिळविण्याची साधने आहेत अशी आग्रही भूमिका.

६. पृथक्करणात्मक, विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धती हीच खरीरीशस्त्रीयपद्धती (Scientific Method) आहे असा दृढविश्वास

७. तंत्रज्ञान व त्यावर आधारित यंत्रनिर्मिती; निसर्गावर मात करण्याची आसुरी महत्वकांक्षा.

वरील पाश्वभूमीवर विकसित ज्ञालेली विचारप्रणाली ही न्यूटनची विश्वदृष्टी (Newtonian View of the Universe), कार्टेशियन विश्वदृष्टी (Cartesian View of the Universe), किंवा यांत्रिकी विश्वदृष्टी (Mechanical View of the Universe)

शाळा कॉलेजात शिक्षणाचे माध्यम त्या त्या प्रावेशिक भाषा असल्या पाहिजेत.

या नावांनी ओळखली जाते. या यांत्रिकी विचारप्रणालीचा  
जीवनाच्या सर्वच क्षेत्रावर प्रचंड प्रभाव पडला. गेल्या दोन अडीच  
शतकातील विज्ञानाची प्रगतीव त्यावर आधारित संशोधन आणि  
तंत्रज्ञानाच्या दैदियमान यशाने मोहित होऊन राज्यशास्त्र,  
समाजशास्त्र, मानसशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षणशास्त्र, वाणिज्य व  
व्यापार -शास्त्र, व्यवस्थापनशास्त्र इ. सर्व सामाजिक शास्त्रांनी  
देखील याच विचारसरणीचा पुरस्कार केला. विसाव्या शतकात  
या विचारप्रणालीवर आधारितविज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीने  
परमोच्च विंदू गाठला. तेथे पोहबल्यावर माणसाला ऐहिक सुखाच्या  
स्वर्गातच आपण पदार्पण केले आहे असा भास झाला. या  
सुखासीनतेच्या आहारी जाऊन सर्व मानवी मूळ्ये पायदळी  
तुडवीत शोषणावर आधारित असलेल्या चंगल्वादी संस्कृतीच्या  
भस्मासुराने आज सर्वत्र आपले साम्राज्य प्रस्थापित केलेले  
दिसते. या साम्राज्याची दुसरी भयाण अंधकारमय आणि  
महाविनाशक बाजू जसजशी माणसाच्या दृष्टीपथास येऊ लागली  
तसेतसा हा सुखाभास मृगजब्बाप्रमाणे असून त्याचा पाठलाग  
करीत राहिल्याने आपली तृष्णा आणि तृष्णा तृप्त न होता अधिका  
-धिक वाढतच चालली आहे हे आता जगातील विवेकी स्त्री-  
पुरुषांना जाणावू लागले आहे.

विसावे शतक हा या वैज्ञानिक क्रांतीच्या इतिहासातील संक्रमणावस्थेचा महत्त्वाचा टप्पा म्हणावा लागेल. या शतकाच्या प्रारंभी डॉ. अलबर्ट आइन्स्टाईन यांच्या मूलभूत संशोधनाने गेली तीन शतके विकसित झालेल्या भौतिक विज्ञानविषयक संकल्पनांचा पायाच हादरला. आइन्स्टाईनच्या विशेष सापेक्षता सिद्धान्त (Special Theory Of Relativity) आणि विद्युत-चुंबकीय प्रभा (Electromagnetic Radiation) या दोन प्रवंधांनी आधुनिक विज्ञानाच्या (Modern Science) क्रांतिकारी युगास सुरुवात झाली. डॉ. आइनस्टाईनचे समकालीन (Max Planck), नीलस बोर (Niels Bohr) लुईस डी ब्रोगली (Louis-D-Broglie), इरविन स्ट्रूदिंजर (Erwin Schrodinger), वुल्फार्ग फॉली (Wolfgang Pauli), वॉर्नर हायसेनबग (Warner Heisenberg) आणि पॉल डिरक या आंतरराष्ट्रीय कीर्तीच्या शास्त्रज्ञांनी एकत्र येऊन सहविचाराने 'क्वांटम सिद्धान्त' (Quantum Theory) आणि 'क्वांटम यंत्रशास्त्राची' (Quantum Mechanics) सूत्रबद्ध मांडणी केली. डॉ. आइनस्टाईन यांनी याच कालावधीत आपल्या व्यापक सापेक्षता सिद्धान्ता (General Theory Of Relativity) द्वारे भौतिक शास्त्राचा एकात्म पाया (Unified Base) शोधण्याचा

ह दाघही सारखेच अनभिज्ञ आहत जे।  
हिंदी ही संपूर्ण देशासाळी व्यवहाराची माषा उंधीकाशप्रयात आली पाहिज.

प्रयत्न केला. या सर्वांचा परिपाक म्हणून या गतिमान विश्वाकडे पाहण्याचा एक नवीन दृष्टिकोन विकसित झाला. या दृष्टिकोनानुसार भौतिक विश्व हे जड यंत्रवत् नसून ते एकात्म (Unified), सेन्द्रिय (Organic), अभेद्य (Indivisible), गतिशील (Dynamic) आणि संपूर्ण (Whole) आहे. विश्व ही एक अखंड जीवनप्रणाली असून त्याचे सर्व भाग एकमेकाशी अनिवार्यपणे जोडले गेले आहेत. त्यांच्यात परस्पर नैसर्गिक सुसंवाद आहे या दृष्टिकोनालाच पूर्णात्मक दृष्टिकोन (Wholistic View), पर्यावरणात्मक दृष्टिकोन (Ecological View), किंवा प्रणाली दृष्टिकोन (Systems View) असे म्हणतात.

न्यूटन आणि देकार्तप्रणीत विश्वविषयक 'यांत्रिकी दृष्टिकोन' आणि त्यातून विकसित झालेले कठोर विज्ञान आणि तंत्रज्ञान (Hard Science and Technology) जीवनाच्या सर्वच क्षेत्रात इतके खोलवर रुजले आहे की, विसाऱ्या शतकात नवभौतिक शास्त्रज्ञांनी (Modern Scientists) विकसित केलेला हा 'प्रणाली दृष्टिकोन' स्वीकारण्याची अपूर्व तरी सामाजिक शास्त्रज्ञ, तंत्रज्ञ, राजकीय नेते, आणि उद्योगपती यांची मानसिक तयारी दिसत नाही. परंतु आघाडीचे नेतृत्व करणाऱ्या भौतिक शास्त्रज्ञांमध्ये त्याबद्दल चर्चा होते आहे आणि त्याला विस्तृत व स्थायी स्वरूप देण्यासाठी ते प्रयत्नशील आहेत. आज या शास्त्रज्ञांच्या गटाचे अग्रणी आहेत डॉ.फिट्टिंजॉफ कापरा. त्यांनी आपल्या 'The Turning Point' ग्रंथात वरील दोन्ही दृष्टिकोनांचे यथार्थ दर्शन घडविले आहे.

ग्रथात वरील दोन्ही दृष्टिकानाच याच  
नवभौतिकशास्त्राच्या (Modern Science)  
विज्ञानविषयक संकल्पनांचे प्राचीन पौराण्य संस्कृतीमधील व  
विशेषतः भारतीय संस्कृतीमधील अध्यात्मविषयक संकल्पनांशी  
बन्याच प्रमाणात साम्य आढळून येत असल्यामुळे डॉ. क्रिट्यांजली  
कापरासारखे शास्त्रज्ञ आज भारतीय अध्यात्मवादाकडे (Mysticism)  
ज्ञुकलेले दिसतात. हे पहाताच आहोत भारतीय  
अध्यात्मवादीही आपण किती विज्ञाननिष्ठ आहोत हे  
भासविष्ण्याच्या अहमहमिकेत गूळून गेलेले दिसतात. परंपरा  
भौतिकविज्ञान (Science) आणि अध्यात्म (Mysticism)  
संशोधनकार्य भारतामध्ये विसाव्या शतकाच्या पूर्वार्धात झाला  
आहेत्याविषयी भारतीय अध्यात्मवादी आणि नवभौतिकशास्त्रावे  
हे दोघेही सारखेच अनभिज्ञ आहेत असे खेदाने म्हणावे

अनेकान्त अनेकान्त अनेकान्त अनेकान्त

Q6

अनेकान्त अनेकान्त अनेकान्त अनेकान्त

विसाव्या शतकाच्या प्रारंभी जसे भौतिकशास्त्रात मूलभूत संशोधन झाले, तसेच मूलगामी संशोधन याच कालावधीत भारतामध्ये 'अध्यात्म विज्ञानात' झाले. भगवान श्रीमायानन्दचैतन्य (इ.स. १८६८ ते १९३४) यांनी वेदविद्येच्या प्रदीर्घ संशोधनानंतर इ.स. १९०९ साली 'दिव्यहृषी' प्रकाशित केली आणि तिच्या प्रचारार्थ भारतात सर्वत्र भ्रमण करून इ.स. १९२३ साली मानव आणि विश्वाच्या समग्र एकात्मतेचे प्रत्यक्षयथार्थ दर्शन घडविणारा 'सर्वाग्योग' हा अप्रतिम सूखबद्ध ग्रंथ प्रसिद्ध केला. श्रीमायानंदांचे हे मूलभूत संशोधन म्हणजे वेदविद्येचे पुनरु-ज्जीवन होते. या अभूतपूर्व संशोधनाने रुढ अध्यात्मशा -स्नातील गृद्धवादाचे समूळ उच्चाचाटन होऊन 'वेदविज्ञान' पुनर्श्च प्रगट झाले. हे विज्ञान सर्वांना सुलभतेने विनामूल्य प्राप्त व्हावे म्हणून त्यांनी श्रीक्षेत्र ओंकार-मान्धाता येथे नम्रदेव्या दक्षिण तटावर इ.स. १९२३ साली 'विज्ञानशाला' स्थापन केली.

युगाचा उषः काल झाला आहे हे मात्र निविवाद आहे. या विज्ञान निष्ठेकडे, समग्र जीवनप्रणालीकडे, विश्वात्मकतेकडे काना - डोळा करून २१ व्या शतकात भारताचाच नव्हे, पृथ्वीवरील कोणत्याही राष्ट्राचा टिकाव लागणे शक्य नाही. विज्ञान-प्रबोधनाची एक प्रचंड लाट भारतातच उदयास येत असून येणाऱ्या शतकात भारताला जगद्गुरुंची भूमिका पार पाडा - वायाची आहे हे या भूमीच्या सुपुत्रांनी पक्के ध्यानात ठेवून अखंड जागृतीने ब्रतस्थ राहून कार्यास लागणे आवश्यक आहे. भगवान् श्रीमायानंदांच्या शब्दात सांगायचे झाल्यास

“विद्यार्थीजन हो स्वर्धम तुमचा आणूनिया सन्मनी ।  
वेदाचे निज-बीज एकचि दिले व्हावे सताचे धनी ॥  
येणान्या सुयुगार्थ जन्म तुमचा हे ध्यान ठेवा सदा ।  
६७ मध्ये सोड नये ती कवा ।

विद्येची स्थिती बाणवल्याविण मधे साडू नय ता कदा ॥  
हा संदेश अंतःकरणात धारण करून विद्यार्थी, शिक्षक  
व आचार्यांनी कार्यप्रवण होण्याची गरज आहे.

व आचार्याना कायप्रवण हाण्याचा पत्ता सर्वप्रथम शिक्षण व्यवस्थेतून या विज्ञान प्रबोधनाची सुरुवात होऊन शेवटी विज्ञान प्रबोधनाची भारतव्यापी, विश्वव्यापी चळवळ उभी राहणे आवश्यक आहे. या विज्ञानदृष्टीवर आधारित '२१ व्या शतकातील शिक्षणाचा पाया' कसा राहील याचे तात्त्विक विवेचन 'शिक्षणाचे विज्ञान' (शिक्षणसमीक्षा, ॲगस्ट-सप्टेंबर १९९४) या लेखातून केले आहे. त्याचा गांभीर्याने विचार करून शिक्षकांच्या सेवापूर्वव सेवांतर्गत प्रशिक्षण अभ्यासक्रमात आमूलग्रं बदल करावे लागतील. शिक्षणाचे तत्त्वज्ञान, शैक्षणिक मानसशास्त्र, अध्यापनशास्त्र व पद्धती, मूल्यमापनशास्त्र इ सर्वांची समर्पजीवनप्रणालीच्या दृष्टिकोनातून पुनर्रचना करावे लागेल. यासाठी ही विज्ञानदृष्टी पूर्णपणे आत्मसात केलेल्या त्यानुसार आचरण-व्यवहार करणाऱ्या विज्ञाननिष्ठ शिक्षकांची आचार्यांची मांदियाळी निर्माण व्हावी लागेल. स्वयंस्फूर्तीने समर्पित भावाने युगपरिवर्तनाच्या या महान कार्यासि वाहून घेणा आचार्यं २१ व्या शतकातील शिक्षणव्यवस्थेचे आधारस्तं राहतील. २१ व्या शतकाचे हे आव्हान स्वीकारण्यासाठी लेखाद्वारे सर्व विज्ञाननिष्ठांना आवाहन करण्यात येत आहे.

पत्रव्यवहाराचा पत्ता-  
हिलटॉप अपार्टमेंट्स, बी-१६,  
सेनापती बापट रोड,  
पणे - ४११ ०५३

इत्यर मृणाल व्याख्या करता न येण्यासारखे, आपल्याला सवता अनुभवी होणारे परतु अगम्य असे काही तरी.

हादिक शुभेच्छा



तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती ढारा संचलित

## अनेकांत मुद्रणालय

महाविद्यालयाच्या आवारातच  
सुबक व मोहक छपाईची सेवा उपलब्ध आहे.  
चौकशी महाविद्यालयाच्या कार्यालयात करावी.

स्थापना-१९८३

नोंदणी क्रमांक-PNA/BMT/CONS/1962/83

सभासद संख्या ४९४०

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय

## विद्यार्थी सहकारी ग्राहक भांडार मर्यादित

बारामती ४१३१०२ जि. पुणे.  
विद्यार्थ्यांची खाली अपलतीच्या दराने  
टेक्टेशनरी उपलब्ध केली जाईल.

अनेकांत १९९४ - ८५



साहित्य व्यवहार हा केवळ आनंद देणारा व्यवहार आहे किंवा साहित्य ही केवळ कलानिर्मिती आहे, एवढ्यापुढता साहित्याचा विचार बँदिस्त कळून चालणार नाही - तसेच्या व्यतीदिक्क एकूण जीवकाचे जे काही संदर्भ आहेत, सहभाग आहेत, त्यातील बदलत्या नवस्वेदना, नव्या जागिरा किंवा नव्या संभाव्यता यांच्याशीही तो निंगाडीत असते.

- श्री. नारायण सुर्वे

(प्रभाणी येथील दृव्या)

अ. भा. मराठी साहित्य समेलनातील  
अध्यक्षीय भाषणारूप दि. २० ते २२ जानेवा. १९)

## कराठी विमाग

विभागीय संपादक - प्रा. धनंजय शहा

\*\*\*\*\*

## अंतरंग

### गद्य विभाग

अ.नं.	नांव	लेखक	पा.नं.
१)	स्वरूपानिषद्दास्क	म. दत्तो वामन मोतदार	२९
२)	वठलेला औंदुंबर	संजय सागडे	३०
३)	नादब्रह्मी रंगू चला	केतन अत्रे	३२
४)	बिन्हाड	कु. अनुपमा इनामके	३४
५)	श्रीमान भ्रष्टाचार (पत्र)	राजेंद्र गावडे	३७
६)	जीवन	कु. रेखा बोरकर	३९
७)	प्रेमगंध	कु. वर्षा कांबळे	४१
८)	अवघे द्विजेण	नाना लोंडे	४३
९)	महाराष्ट्राचे महिला धोरण-नवे आहवान	कु. रेशमा खरात	४५
१०)	भारतातील शैक्षणिक समस्या	सोमनाथ वाघचौरे	४८
११)	राष्ट्रीय विकासात संस्कारांचे स्थान	संजय भिसे	५०
१२)	एडस् बाबत अधिकाधिक जनजागृती	मिलिंद संगई	५२
१३)	गरजेची संस्कार	उदय सुपेकर	

### पद्य विभाग

पद्य विभाग	विनय मावळणकर	३१
१)	क्रांती	३६
२)	पाऊस	३६
३)	मी	३८
४)	सल्ला	३८
५)	तू कुरे होतास ?	४०
६)	तुझ्याचसाठी	४२
७)	प्रतीक्षा	४४
८)	नातं	४७
९)	हसून घे	४९
१०)	उरली फक्त राख	५१
११)	हायकू	५५
१२)	वेडा	५५
१३)	ग्रीष्म	५६
१४)	एक उत्कट इच्छा	५६
	शकील शेख	
	अभिजित भिसे	
	समर भोईटे	
	प्रमोद पाटसकर	
	सौ. छाया जगताप	
	कु. प्रज्ञवला खंडळे	



## वठलेला औंदुंबर

संजय सागडे  
(तृतीय वर्ष कला)

चिमुकल्या खेड्याजवळून वाहणारी एक नदी. काठावरील तहानलेल्यांना जीवनदान करणारी, जिच्या पाण्याने कित्येक वृक्ष, फळांच्या बहराने नम्र झालेले. संथवहाणारे व वृक्षांना लपेटणाऱ्या वेली, पाणी. याच पाण्यात माशांच्या प्राप्तीसाठी एका पायावर उभा राहून ध्यान करणारा बगळा आणि अधांतरी स्थिर राहून वेळ साधून पाण्यात सूर मारून मासा पटकाविणारा बहुरंगी खंड्या.

नदीकाठावर लोण्यासारखी मुलायम वाळू, याच वगळू चमचमणारे शंख, शिंपले व विविध आकाराचे सदाहरित असा “‘औंदुंबर’” व त्याच्या आश्रयाने राहणारे असंख्य पक्षी.

पूर्ण क्षितिजावर सूर्यनारायणाची चाहूल ती उपःकालची स्तोत्रेच गात आहेत असे वाटे. जलभरणा -साठी गोपी शिरी कुंभ घेऊन येत. प्रातःस्नान करणाऱ्या व याच वेळी भक्ताने देवासमोर आळवलेली भूपाळी ऐकू येत असे. माध्याह्न समयी ‘गोपाळ’ आपल्या गायी या नदीकाठच्या हिरवळीवर घेऊन येत. पक्ष्यांचा कलरव व त्यात गोपाळांच्या बासरीचे सूर मिसळून एक मंत्रमुग्ध विर्वकल्प समाधीचा अनुभव येथे प्रवेश करताच प्राप्त होई. एके दिवशी नदीवर मोठमोठ्या वाहनांचा एक तोंडा घेऊन थबकला व त्यांनी आपले कार्य सुरु केले.

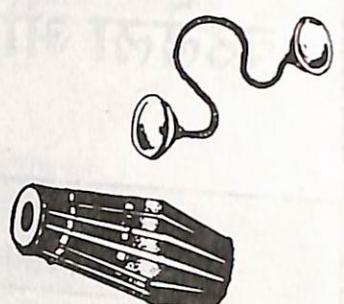
हलुहलू नदीच्या प्रवाहाला अडविणारी भिंत तयार होऊ लागली. काही महिन्यातच ती भिंत पूर्ण झाली. नदीचे पाणी अडविले गेले. त्याचा शेतीसाठी वापर सुरु झाला. नदीच्या वरच्या बाजूलाच एक कारखाना होता. त्यातून रासायनिक द्रव्ये या नदीच्या प्रवाहात सोडण्यात येऊ लागली. या रसायनांचा परिणाम स्वच्छंदपणे विहार करणाऱ्या माशांवर झाला. असंख्य मासे मरु लागले. नदीकाठची मुलायम वाळू व हिरवळ अदृश्य झाली.

एका पायावर उभा राहून ध्यान करणाऱ्या धवल बगळ्याने केव्हाच्या नदीचा त्याग केला आहे. सूर मारणारा ‘खंड्या’ बेघरासारखा वणवण भटकत परागांदा झाला आहे. अनेकांना अगम्य असणारा ‘औंदुंबर’ रासायनिक पाण्याने वठला व एक दिवस झांझावातात कडकडाट करीत नाहीसा झाला. त्यामुळे त्याच्या आश्रयाने असणाऱ्या पक्ष्यांची किलबिल थांबली. गोपाळांच्या बासरीचे सूर आणि गायींचे हंबरणे आता विद्युत पंपाच्या घरघरीत लोपले आहे. पाणी दूषित झाल्याने गोपींची जलभरणाची घाई दिसत नाही. निर्विकल्प समाधीचा भंग झाला आहे.

बालकवींच्या कवितेतील मनोरम सुंदरता आता उरली नाही. स्वच्छ पाणी घेऊन धावणारी नदी व तिचे पूर्वीचे वैभव आता आठवताच हृदय भरून येते व बालकवींच्या काव्यपंक्ती फक्त ओठावर येतात.

“ऐल तटावर पैल तटावर हिरवाळी घेऊन, निळा सावळा झरा वाहतो बेटाबेटांतून.....”

॥ जेथे प्रेम आहे तेथे जीवन आहे; द्वेषाचा पाणी विनाशाप्रत जातो ॥



## नादब्रह्मी रंगू चला

केतन अत्रे  
(तृतीय वर्ष कला)

नादब्रह्मी म्हणजेच संगीत. नादब्रह्मी ही एक सर्व कलेला परमेश्वराची भाषा मानले जाते. ज्येष्ठ कवयित्री आपल्याशी कधी खळखळणाऱ्या किंवा संथ वाहणाऱ्या पाण्यातून तर कधी सोसाट्याने अथवा मंद वाहणाऱ्या वाच्यातून संगद साधत असतो. तो आपल्याशी बोलत असतो, नव्हे तो आपल्याला बोलके करत असतो. या वाह नाच्या पाण्यातून अथवा वाच्यातून संगीताची निर्मिती होते. काही नैसर्गिक गोष्टी अत्यावश्यक आहेत, त्याचप्रमाणे संगीत ही एक अभिजात कलासुद्धा तेवढीच आवश्यक आहे.

जेव्हा एखाद्या व्यक्तीचे जीवन संगीतमय होते तेव्हा त्याचा जीवन जगण्यातील आनंद द्विगुणित होतो. निरनिराळ्या क्षेत्रातील अनेक कलाकार आपआपल्या कलांमध्ये मग्र असतात, त्यातून ते संगीताचा आनंद प्राप्त करत असतात. परंतु त्यांच्या कलेला जेव्हा संगीताची झालर प्राप्त होते तेव्हा त्यातून त्यांना मिळणारा आनंद काही वेगळाच असतो. या जगामध्ये असे काही चित्रकार आहेतकी, ज्यांची चित्रकला ही पूर्णपणे संगीतावर अवलंबून आहे. उदाहरणार्थ, तो चित्रकार जेव्हा चित्र काढतो, तेव्हा ते चित्र एका विशिष्ट लयीमध्ये साकार होते. अशा प्रकारे निरनिराळ्या तालांच्या वलयकारीच्या सारचाने तो विविध रंगठांची निर्मिती करतो.

हे झाले मानवजातीच्या बाबतीत, परंतु संगीत ही एकमेव अशी कला आहे की, जी मुक्या प्राण्यांवर व

॥ चारित्र्यसुपी भाडवलावाचून सत्याग्रहाचा लळा अशक्य आहे ॥

लढण्याची एक प्रकारची चेतना त्यांच्यामध्ये जागृत केली. जेव्हा पु.ल.देशपांड्यांसारखे थोर साहित्यिक म्हणतात की, 'मला मल्लिकार्जुन मन्सूर, कुमार गंधर्व, वसंतराव देशपांडे यांच्या गायनाने (सुरांनी) जगविले, नव्हे, त्या सुरांवर मी जगतो आहे.' तेव्हा संगीतामध्ये माणसाला खेळ्या अर्थाने जगविण्याचे सामर्थ्य आपणांस दिसून येते.

संगीत ही परमेश्वराची भाषा असल्याने ओघाने या कलेचा संबंध अध्यात्माशी जोडला जातो. मनुष्य, परमेश्वराशी जवळीक करण्याकरिता (साधण्याकरिता) या माध्यमातून करतो. हा परमार्थ तो कीर्तन, प्रवचन, ध्यानधारणा अभंगाच्या समसुरांमधून व टाळ मृदुंगाच्या गजरातूनच तो वेळी होणारा 'ॐ कार' हा मंत्रघोष सुध्दा एका विशिष्ट कल्पना शास्त्रीय संगीत या प्रकारामध्ये आध्यात्मिक बैठक असणे अतिशय आवश्यक आहे. विख्यात गायक. पं.भीमसेन जोशी, पं.जसराज, डॉ.प्रभा अत्रे यांसारखे फलोत्पादन वाढवता येते. औषधशास्त्रामध्ये तर काही शास्त्रज्ञांनी शास्त्रीय संगीतातील विशिष्ट रागांचे रुग्णोपचारासाठी केलेले प्रयोग यशस्वी झाले आहेत. त्यामुळे संगीत कलेला प्रगत विज्ञानाच्या दृष्टिकोनातून अतिशय महत्त्व प्राप्त झाले आहे.

संगीत ही एक मनःशांतीसाठी दिलेली इश्वरी देणगी आहे. प्रत्येक मानवाचे जीवन म्हटले की, त्यामध्ये आनंद-दुःख, यश-अपयश, सन्मान-अवमान या गोष्टी आल्याच. परंतु जेव्हा दुःख, अपयश, अवमान हे त्याच्या वाट्याला येतात तेव्हा संगीत ही, त्या मनःशिक्षित अशी कला आहे. या संगीत कलेते अतिशय परिणामकारक अशी कला आहे. या जीवनातील सर्व एवढे सामर्थ्य आहे की, ती माणसाच्या जीवनातील लावते. त्याच्या दुःखे, अपयश इत्यादी गोष्टी विसरायला लावते. खंबीरण्या प्राप्त मनाची दुर्बलता झटकून देऊन त्याला खंबीरण्या काळात अनेक करून देते. छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या काळात अनेक शाहिरांनी व संतांनी, संगीताच्या माध्यमातून पोवाड्यातील व अभंगांनी, हजारो तरुणांना प्रेरित केले. स्वराज्यासाठी

### चार हायकू

- 1) मोठ्या हार-गुच्छांनी केलेलं स्वागत खरं असतं असं नाही,  
ओठातून बाहेर पडलेलं मनोगत असतं असं नाही.....
  - 2) दूर पळाली कबूतरे नभातून गिधाडांचेच राज्य माजले प्रस्थ आहे,  
सर्वत्र गाजवितो सत्ता दुर्जन कारण आजचा सज्जन तटस्थ आहे
  - 3) या अजब निष्ठुर दुनियेमध्ये सांडपाण्यावर आळूचं पान आहे  
पण कुठे घाम गाळा कष्टाचा तरी ओसाड कोरडंच रान आहे.....
  - 4) एखाद्याचं आस होऊन जगावं अन् आयुष्याची मजा ध्यावी  
केवळ प्राप्त म्हणून जिणाऱ्यांनी आयुष्यातूनच रजा ध्यावी.....
- विनय माळवणकर (द्वितीय वर्ष विज्ञान)

॥ धर्म म्हणजे कर्मकांड किंवा रुढीबळ धर्म नव्हे ॥

सर्व संगीत प्रकारांमध्ये 'हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत' हा एकमेव संगीत प्रकार माणसास आनंद व मनःशांती देतो. ते आपण कानांनी ऐकतो, पण हृदयापर्यंत जाते. पाश्चात्य संगीतामुळे आपले शरीर डोलते पण, आपले हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत आत्म्याला डोलवायला लावते. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतात प्रत्येक रागामध्ये वेगळे सामर्थ्य आहे. 'ललत' रागामध्ये पहाटेचे, तर 'भूप' रागामध्ये प्रभातीचे वातावरण निर्माण होते. 'मेघ' या रागामध्ये मेघवर्षाव करण्याचे सामर्थ्य आहे. 'जोगिया', 'मारवा' करूणरसपूर्ण वाटतात, तर 'शंकरा', 'अडाणा' यांसारखे राग वीरसपूर्ण वाटतात.

शास्त्रीय संगीताची बैठक म्हणजे, विद्यादेवी सरस्वतीची केलेली पूजाच असते, जी आपल्याला सर्वाई गंधर्व संगीत महोत्सवासारख्या जगविख्यात कार्यक्रमात पहावयास मिळते. प्रत्येक कलाकार आपल्या, गायन अथवा वादन कलाप्रकारातून समसुरांच्या, तालांच्या व लयींच्या साहाने देवी सरस्वतीची पूजा करीत असतो.

म्हणे सुरांना रंग नाही, गंध नाही ! पण मानवी भावनांच्या सूक्ष्म स्पृहांना जेव्हा त्याचा स्पृश होतो, तेव्हा निर्गुण निराकार साकार होतो !



## विन्हाड

कु. अनुपमा इनामके  
(तृतीय वर्ष कला)

झापाझप पावल टाकीत मी बिन्हाडावर आलो. चार ठिगळाचं लुगडं असलेली, नाकात नथीचा आकडा असलेली आणिंगंगेवाणी निर्मळ डोळं असणारी माझी आई भाकरी टाकीत होती. वाकडे-तिकडे हात फिरवून पिठाचा गोळा करून आपल्या हातांनी शुभ्र चंद्रकोरच जणू घडवत होती. दोन-चार भाकच्या करून आईनं हात धुतला. मी होतो. आईनं मला बघितलं, अन् म्हणाली, “तिथं काय उभा राहिलाय? घराला काय उंबरा हाय होय?”

आई माझ्याशी काहीतरी बडबडली. पण मी मात्र तसाच उभा होतो. चार पोती फाझून तयार केलेल्या लहान कोकरं बिन्हाडत इकडून तिकडं करीत होती.

उघड्या अंगाला भाजून काढणारा सूर्य मावळ्याला चालला होता. गरमाईनं थरथरणारी जमीन आता शांत झाली होती. इतक्यात वेंडवेंड करीत आमची मेंढंरं आली, त्यामागं बा होता. हातात काठी घेऊन तो होता. बानी मला पाहिलं अन् म्हणाला, “आरं, कवा गेलो नाय.” मी साफ म्हणालो.

आईनं जेवायला हाक मारली. मी आलोय अस्सं माझ्याभोवती जमली. खरं तर या चार-पाच बिन्हाडामध्ये

मीच फक्त जास्त शिकलो होतो. चांगल्या मार्कानी मी सातवी पास झालो होतो.

जेवायला बसलो. आईनं मरस्तपैकी कांदा घातून कांदवणी केलं होतं. तसंच मेंढराचं घट्ट दूध तापवून आणून दिलं होतं. मला मेंढराच्या दुधाचा वास येई. मी ते पीत नसे. पण आजी रागवे. ती म्हणे, “अरं, मेंढराचं दूध लई गुणकारी हाय. ते घेतलं म्हंजी झोप वी चांगली लागते आणि ताकद वी वाढते.” पण आता मला त्याची चांगलीच सवय झाली होती.

आज चार वर्षातून मी बिन्हाडावर आलो होतो. आणि जेवत होतो. भाकरी कुस्करून मी घास केला. तोंडापर्यंत नेला आणि मला मागचे दिवस आठवले.

आईनं कसला तरी कोंडा दळून दोन भाकरी केल्या. बा तवा मेंढरामागं जात नव्हता. मीच आत्या अन् मामासंगं आमची मेंढंरं न्यायचो. घरी यायचो तवा बा घरी नसायचा. झाकाड पडल्यावरच तो डुलत-डुलत यायचा. मला त्याला पाहून मजा वाटायची. मी त्याला म्हणायचो. “बा, तू कुठं जातोस रं, ह्या वकाला? अन् डुलतो करा तू?” त्यो म्हणायचा, “आरं, मी गावात अमृत व्यायला जातो.” “अमृत! मग मला वी दी की.” बा खाडकात पाय झाडत बसायचो. बा मात्र गप उभा राहायच्या. माझ्या मुस्काटात लावायचा. मी दोन्ही हातांनी बांबूत

जरा वेळानं बानं आईला हाक मारली. अगूने मला भूकलागलीय. भाकरी घेऊन ये. यावर आई म्हणाली,

“आवं, मध्या लेकरु रडत होतं तवा त्याला दिली.” हे ऐकलन् वा जाम भडकला. मला दिलेली भाकरी तेवढीच शिलकीतली होती. घरात तुकडाबी नव्हता, पाणी पायपुरता.

भाकरी नाही, म्हणजे उपाशी झोपावं लागणार. या रागानं लाल झाला होता. त्यानं मेंढराच्या कडेनं जाळं पाहित घातली. आईनं हू का चू केलं नाही. फक्त अश्रूंच्या खालीनकोसळ्या माझ्या हृदयात कोसळत होत्या. मनाच्या शावासकी दिली. मी खाली पडलो. मग बानं मलाबी घातला. मी जागा झालो. तवा आत्या बा ला फाडफाड वेलत होती. म्हणत होती. --

“आरं, तुला काय दहा-पाच लेकरं हायती क्य, मेंढरावानी, तवा बडवतोय पोराला मरस्तोवर.”

बा ओशाळ्या होता. आई गाठोड्यात काहीतरी तर काहीतरी रस्ते. हात लावला. पाहिलं तर बानं पासल्यावर त्यातून रगात वाहात होतं. ते वाया जाऊ नाय म्हणून हळद गरम करून त्यावर पट्टी बांधली होती. आईनं पाझा सदरा हातात घेतला अन् जोरात रडायला लागली. मलाबी रडायला आले. आईनं मग मलाच मिठी मारली.

तशात बा ओरडला, “तुझा नवरा मेलाय होय, जावसंवय होय. गेली तर तिकडंच हिरीत जीव दे. पुन्हा मग आत्याचं म्हणाली,”

मात्र तेवा माझी सातवी झाली. तू काय त्याला जिता ठेवायचायं आत्यानं मला स्वतःच्या पोराकडं पाठविलं.

लागलो. पन्नास ईक रुपये महिन्याला माझी मिळकत होत होती. तीन-चार महिन्यात माझ्याजवळ दीडशे रुपये जमले. दीडशे रुपये तसेच ठेवले आई-वा साठी आणि बाकीच्या पैश्यात मला एक साधी चप्पल घेतली. माझ्यासंग मेव्हण्यालाबी घेतली. बिन्हाडावर यायच्या आदल्यादिवशी आम्ही खीर चपाती केली. खीर शेजारच्या कांकूकडून करून घेतली. चपातीचे नकाशे मात्र आम्हीच घडविले.

दुसऱ्या दिवशी माझा मेव्हणा लवकरच उठला होता. तो माझ्यापेक्षा चार-पाच वर्षाचा मोठा होता. आंघोळ चहा आवरला नि मी बिन्हाडाकडं निघालो तवा तो रडायला लागला. म्हणाला, “रास्या, तू परत माझ्याकडं ये. तिथंच बिन्हाड करून राहू नको.”

मी काहीच बोललो नाही. मुकाट गाडीत बसण्यासाठी निघालो. पुन्हा मेव्हण्यानं हाक मारली. मी वळून पाहिलं, तर त्याच्या हातात मी आई-बाला घेतलेलं लुगड-धोतर कागदात गुंडाळलेलं तसंच राहिलं होतं. मी ते माझ्या हातात घेतलं. गाडीत बसलो. धावत्या गाडीच्या आधी मी मनानं घरी पोहोचलो होतो.

त्यादिवशी आई माझ्याशी काहीच बोलली नाही. इतक्या दिवसातून आलो तरी आई मला काहीच बोलली नव्हती. ती का बोलली नाही? मी मनातून चडपडूलागलो. ती संपूर्ण रात्र मी चांदपण्यांशी गप्पा मारण्यात घालवली. पाझा सदरा हातात घेतला अन् जोरात रडायला लागली. पाखरांच्या आवाजांनी मी खडबडून जागा झालो. समोर लांबपर्यंत क्षितिज पसरलं होतं. दिवसाची चाहूल लागत होती. तवा बा मेंढंरं रात्रीच्या जागेवरून बाजूला काढीत होता. आईनं गुळांच पाणी उकळायला तीन दगडांच्या चुलीवर ठेवलं होतं. मला आश्चर्य वाटलं. याच तीन दगडांच्या चुलीवर आई लाल जाड खरपूर साय येईपर्यंत दूध तापवून सकाळी मला द्यायची. मी विचारायसाठी तिच्यापाशी गेलो.

मला पाहताच आई ढसाढसा रडायला लागली. माझ्याही डोळ्यातून अश्रू आले. मला पाठविताना जी आई रडत होती, तीच आता मी आल्यावरही रडत होती. मीच म्हणालो, “आं आई, रहू नकोस. गेले ते दिवस आता.” मग तर आई जास्तच रडायला लागली. मी तिच्याजवळ जाऊन बसलो. माझ्या अंगावर झोपडीतून कोवळी सूर्याची किरण हिन्याप्रमाण चमकत होती. मी वर पाहिलं, तर त्या फाटक्या कपड्यांची ती झोपडी होती. काल पाहताना मला पहिल्यासारखी चार पोती फाझून केलेल्या झोपडीसारखीच दिसली होती. झोपडीतून बाहेर पाहिलं तर वा मेंद्रं घेऊन वड्याच्या दिशेनं निघाला होता.

मी गप्प पाहून आईच म्हणाली, “राम्या, राम्या तुझ्याचसाठी हा फाटका संसार ठेवलाय बघ. समद्या बिन्हाडावरची फाटकी कापडं हायती ही.” तिला पुढं कोणीही जवळच्या बायका तिची समजूत काढायला आल्या नाहीत. कारण ती नवे, आम्ही आता भिकारीच झालो होतो. बानं दारुपायी सारी मेंद्रं येईल त्या भावात विकली आणि मोकळा झाला. आता तो सालकरी गडी झाला होता. आत्याची, मामाची आणि भावांची समद्यांची मेंद्रं एकटाच चार आणे दारुसाठी मिळायचे.

मी गेल्यावर मला एक बहीण झाली होती. महिन्यांची झाली तवा घरात आईला खायला काहीचं नव्हतं. तवा बानं चार मेंद्या विकल्या अन् माल घेतला. त्यात दारुचा खर्च. चार-चार करत समद्या मेंद्या संपल्या. अन् शेवटी बाला दारुला पैसा मिळाना. बाला वाटलं या पोरीपायीच मला दारु मिळाना. हिच्यामुळं घरात कोवळी पोर पटकन गेली.

बा मात्र म्हणाला, “बरं झालं, अवदसा गेली.”

आईच्या काळजाच्या हजार ठिकन्या उडाल्या. एक माझ्यापाशी आली. मला मेव्हणाकडं पाठवलं म्हणून आईला बारोज मारायचा. एकदा तरबानं आईच्या डोक्यात

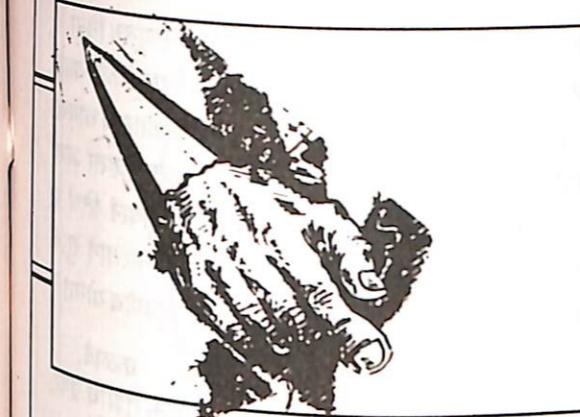
काठीच घातली. आई रक्तानं न्हायली. तिनं ते तसंच भांगात भरलं.

तिच्या हातात विटलेल्या रंगाच्या बांगड्या होत्या. नाकात मला काल दिसलेली नथी नव्हती. तीतर केव्हांच सोनार आळीला गेली होती. लुगडं मात्र चार ठिगळांच च होतं. फक्त त्यात ज्यादा दोन्यांची नक्षी झाली होती.

मला वाटलं, कागदात गुंडाळलेलं ते नवीन लुगडं आईला देऊन तिलाते नेसायला द्यावं, पण पाय मात्र जागचे हालेनात. घोरपडीसारखे ते जमिनीला चिकटले होते.

गुळांच पाणी उकळलं. आईनं मला एक फुटक्या कपात ते दिलं. मी ते फक्त पाहिलं. त्यात दारुच नाचताना दिसत होती, आईच्या डोळ्यातल्या पाण्याची बनवलेली. मी तसाच बसून राहिलो. पण आई तो घटाघटा प्याली अन वाहेर उठून गेली.

परत आली तवा तिच्या हातात एक स्टीलचा ग्लास होता. त्यात तिनं माझ्यासाठी कुटूनतरी दूध आणलं होतं. ती ग्लासात बघत होती. मी मात्र तिच्या डोळ्यात बघत होतो. आता मला बिन्हाडावरच राहावं लागेल. हेच जणू ती सांगत होती. पण मला त्या उसन्या दुधपेक्षा माझ्या फाटक्या घरातल्या, कुजक्या झोपडीतलं दूध म्हणूनच हे बिन्हाड मी आता काढीच सोडाणार (सूर्यकिरण) जास्त आवडलं. मी तेच घटाघटा प्यायला यांते संपेना. म्हणूनच हे बिन्हाड मला अनेक सुखांनी सजवायचं. नाही. असं हे बिन्हाड मला तेच नव्हतं. पण आमचं नशिवच वाईट. आम्हाला या जगाचा त्याच्या जखमेची ती बिळं मला बुजवायलाच हवी. आणि त्याच्या बिन्हाडाला पुन्हा हसायला लावायचं. खूप हसायला लावायचं. मग माझ्या बिन्हाडात सूर्यच काय पण चांदालाही डोकवावं लागंल. माझ्या बिन्हाडातील सुख चांदालाही त्यांनाही परतावं लागंल.



“आदरणीय श्रीमान् भ्रष्टाचारं”  
स.न.वि.वि.

तुझ्याविषयी आता काहीच न बोललेले बरे. नाही अशी जागा सापडणे कठीणच. तू अगदी सर्वव्यापी प्रसार होत आहे. जेवणात मीठ जेवढे आवश्यक आहे, तेवढाच तू सर्वांना हवा हवासा वाटू लागला आहेस.

या जगाचा निर्माता ईश्वर सर्वव्यापी आहे, असे संत हुकारामांना प्रत्येक ठिकाणी ईश्वर भेटायचा. गोरा कुंभाराला तर तो मातीत दिसायचा, जनावाईस दळताना बदत करायचा, तर सावता माझ्याबरोबर भाजी खुडायचा. एव्हेच नव्हेतर रोहीदासाला कातड्यात भगवान दिसायचा. म्हणूनच ‘कणकण में है भगवान’ असे ही संतमंडळी उद्धारकर्ता, सृष्टीचा निर्माता थोडाच भेटणार! आम्हाला त्या रामरावाकडून चक्र पन्नास रुपये उकळले बघ. अन म्हणतो कसा, ‘पूजा केल्याशिवाय आम्ही कोणतेही काम करीत नाही म्हणून!’

आपल्या देशातील राज्यकर्त्यांचं तर विचारल नकोस. गळीपासून ते दिलीपर्यंत सारी नेतेमंडळी तुझी परमभक्तच आहेत. तुझी जोपासनाकरण आता शिष्टाचारां झालंय. शिक्षण देणारी सर्व पवित्र मंदिरे आता तुझ्या आणि जिकडे-तिकडे तुझे शिष्यगण पसरले असले तरी,

## श्रीमान भ्रष्टाचारास पत्र

राजेंद्र गावड  
(प्रथम वर्ष करता)

आम्हाला तुझ्याबद्दल प्रेम वाटत नाही. तुझ्या यावागण्यामुळे आम्हाला फार चीड येते, पण करणार तरी काय? पाण्यात राहून माशाशी वैर कसे करावे? म्हणून आम्ही गुपचूप बसलो आहोत. तुझ्याबद्दल आम्ही खूप ओरडतो, निरनिराळ्या पेपरमध्ये लिहितो. तुझ्याविरुद्ध जोर-जोरात नारे देत मोर्चंही काढतो, पण आमचं ऐकतंय कोण? सगळे तुझ्या भक्तीत बुडालेले, अगदी खालपासून (शिपाई) ते वरपर्यंत (अधिकाच्यापर्यंत) सगळेच तुझ्या प्रेमळ साखळंडात अडकलेले आहेत. सगळ्यांचेच हात तुझ्या बेड्यात अडकल्यानंतर त्यांच्या बेड्या खोलणार तरी कोण? अशा स्थितीत आमच्या चिमुटभर लोकांचं तुझ्याविरुद्ध ओरडणं फुकट जात नाही काय?

तुझं वागांही तसंच आहे रे, अगदी संताप येते बघ, नको त्या वेळेला तू टपकतोस. बड्या लोकांच जाऊ दे रे, पण या गरीबांची, निस्वार्थी लोकांची थोडीफार तरी गय कर, त्यांच्याशी तू असाच वागतोस. आता परवाचीच म्हणून चूळाकाळपर्यंत जेथे-जेथे जावे तेथे तुझेच दर्शन होते. जेथे जावे तेथे तू आमचा सांगाती’. ईश्वराच्या ‘अस्तित्वाएवजी तुझेच अस्तित्व आम्हाला जाणवत आहे. ‘कणकण में है भगवान’ या ऐवजी, ‘कण कण में है भ्रष्टाचार’ असा साक्षात्कार आम्हाला नेहमी होतोय.

आपल्या पोटाची खळगी भरण्यासाठी उन्हातान्हात कष्ट करणाऱ्या मजुरांच्या मागेही तू लागलास. बडे-बडे अधिकारी, व्यापारी, स्मगलर्स, देशद्रोही या सगळ्यांना तुझ्यामुळं फावतं. तुझी पूजा केली की, कामचुकार, ज्याला आपल्या आपल्या कर्तव्याची जाण नाही, अशांना भराभर बढत्या मिळतात आणि इमाने-इतबारे सेवा करणारे मात्र मागेच राहतात. कारण त्यांना तुझ्याशी मैत्री करणे कधीच आवडत नाही. अशा लोकांना मात्र तुझा नेहमीच त्रास बंड पुकारत आहेत, मोर्च काढत आहेत, तुझी पाळेमुळे नष्ट होतो. आता असे लोक तुझ्याविरुद्ध संघटना बांधत आहेत,

करण्याचा जोरदार प्रयत्न करीत आहेत. म्हणूनच मित्रा, तू आता येथून काढता पाय घे. अरे या भारतीय लोकांचं काही खरं नाही. एकदा मनावर घेतलं ना मग ते कशालाच घावर नाहीत. अरे ज्यांच्या सत्तेवर सूर्य मावळत नव्हता अशा इंग्रजांना या भारतीय लोकांनी पळवून लावलं तिथं तू 'किस झाड की पत्ती?' म्हणून मित्र या नात्याने तुला शेवटचे सांगतो की, 'तू आता येथून पळ काढणेच योग्य!'

कळावे,  
फक्त तुझीच द्वेषी,  
'मी'

## तो असाच येत असतो

तो असाच येत असतो  
येण्याआधी काही तरी सांगत असतो  
निव्या स्वच्छ आकाशाला  
काळ्या ढगांनी धरलेलं असतं,  
का कुणास ठाऊक पण ऊनही नसतं,  
वारा मात्र तरीही वाहत असतो,  
पक्ष्यांचे थवे दूर उडतांना दिसतात  
त्याच्या येण्याने सारे खुश असतात  
तो गेल्यानंतरही

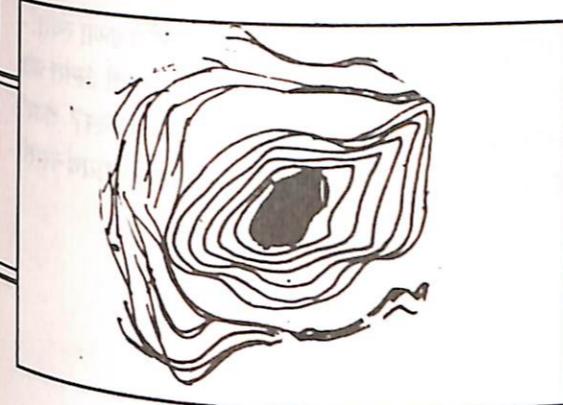
काही तरी सांगत असतो म्हणूनच  
फूल अन फूल फुललेलं असतं  
सारा निसर्ग बहरून जातो  
निव्या स्वच्छ आकाशाला  
काळ्या ढगांनी सोडलेलं असतं

कु. क्रांती गोसावी  
११ वी कला

## क्रांती

अस्मितेची राख झाली  
समाजकंटकांनी ती कोळून प्याली  
समाजमने आज मृदू झाली  
आच नाही कोणालाच आली  
वासनाकांडे फार झाली, रक्षक म्हणतात चार झाली  
हत्याकांडे दिवसा झाली, लोकशाही नपुसंक झाली  
बलात्कार रोज होतात  
बाप, भाऊ उघड्या डोळ्यांनी पाहतात  
काही जण आडवू पाहतात आणि - हुतातमे होता  
अबला धावत न्यायदारी जाते पदरी मात्र बेअॳॳ घेते  
तेव्हा मात्र संताप येतो  
ह्यांच्या नरडीचा घोट घ्यावासा वाटतो

पण बाप म्हणतो - पोरा  
क्रांतीचा सूर एकट्याने काढायचा नसतो  
त्यासाठी समाज 'प्रौढ' व्हावा लागतो  
श्री. दिगंबर प्रिंसिपि  
(द्वितीय वर्ष कला)



## जीवन

कु. रेखा बोरकर  
(प्रथम वर्ष कला)

त्याचं उत्तर शोधायला हवं. नाहीतर सुख म्हणजे काय हे न समजता इतरांच्या सुखाच्या कल्पनेमागेच आपण धावतो. अन् मग फक्त दमछाक होते.

जीवनात माणसाचे मन हा एक मुख्य केंद्रबिंदू असतो. मन हे विचित्र असते. एकदा इकडे तर एकदा तिकडे. मनाला आवरण्याचा प्रयत्न केला की ते जास्तच अनावर होत जातं. या जगत जगत असताना आपले ध्येय कुठे आहे? कोणत्या रस्त्याने गेल्यानंतर ते आपल्याला लवकर सापडेल? याचा अगोदर विचार करावा. नाहीतर आपल्या मूर्खपणाने आपल्याच विनाशाचे खड्डे खणणारा मानव हा या जगतला एकमेव प्राणी आहे.

जीवनात आशा ही एक महान शक्ती आहे. प्रत्येकालाच पुढे काय होणार याची-आशा असते. कधी कधी जास्त केलेली आशा ही वाईट ठरते. मग तिचे निराशेत रूपांतर होते. हे जग ही विधात्यांची भव्य आणि अखंड पाठशाला आहे. जीवन म्हणजे अनंताकडून अनंताकडे चालू असणारा अखंड प्रवास आहे. या जीवनात जीवनातील प्रत्येक गोष्ट आठवून माणूस वेडाच झाला असता!

संस्काराचेच दुसरे नाव जीवन आहे असे म्हणतात. आनंदाची वृद्धी नसली तरी दुःखाची तीव्रता कमी करणे याचेच नाव जीवन. या जीवनात सुख आणि दुःख हे बरोबरचं असावं लागतं. यात दुःख जरी झाले तरी ते सुख मानूनच पुढे जायचे असते. दुःखाचा जेवढा विचार

करीत जावं तेवढं ते वाढतचं जातं. यासाठी आपल्या वाट्याला काहीही येवो- त्याचा आनंदाने स्वीकार करावा आणि या जीवनाचा पैलतीर गाठावा.

विश्वाच्या या विराट चक्रात आपण कोण आहोत? या चक्राच्या कुठल्या तरी अरुंद पट्टीवर क्षणभर

## पाऊस

पाऊस तुइया सौंदर्यासारखा,  
डोऱ्यात अलगद मिटून घ्यावा असा

पाऊस तुइया पापणीसारखा,  
हलकेच उघडझाप करणारा.

पाऊस तुइया डोऱ्यासारखा,  
भावस्पर्शी, भावुक असा.

पाऊस तुइया ओठांसारखा, गोड गुलाबी,  
पाऊस तुइया आठवणीसारखा.  
मनाशी गुजगोटी करणारा.

पाऊस तुइया स्वप्नांसारखा  
सुंगंधी फुलांप्रमाणे मनात दरवळणारा

पाऊस तुइयासारखा, अगदी तुइयासारखा.  
पाऊस तुइया आठवणींसारखा  
अगदी अचानकपणे येपारा.

पाऊस तुइया लटक्या रागासारखा,  
काही क्षणासाठी रागवणारा,

पाऊस तुइया हसण्यासारखा, खळखळून  
पाऊस तुइयासारखा, अगदी तुइयासारखा !

कु. दुर्गा हाडके  
(द्वितीय वर्ष कला)



## मी

बहरलेल्या रात्रीचा मी एक चंद्र आहे.

दुःखितांच्या जीवनातला मी एक आनंद आहे.

उमलत्या फुलाचा मी एक सुरंग आहे.  
भिजणाऱ्या मातीचा मी एक गंध आहे.

आकाशातल्या इंद्रधनुष्याचा मी एक रंग आहे.  
सागराच्या पाण्यावरचा मी एक तरंग आहे.

निराधार जीवाचा मी एक आधार आहे.  
सतारीच्या तारेवरचा मी एक झँकार आहे.  
सुदाम नेवरे  
(तृतीय वर्ष कला)



## प्रेमगंध

कु. वर्षा कांदळे  
(द्वितीय वर्ष कला)

प्रेम! या दोन अक्षरी शब्दामध्येच संपूर्ण आयुष्याचे (जीवनाचे) रहस्य दडलेले आहे. प्रेम हे केवळ एक मुलगा किंवा एक मुलगी करत नाहीत तर आई आपल्या करतो. आपल्या नातेवाईकांवर आपण प्रेम निःस्वार्थी भावनेने प्रेम करतो.

हो, पण हे रहस्य प्रत्येकाने आपापल्या परीने फुले कधी ना कधी कोमेजून जातातच. त्याप्रमाणे जीवन वर्तो प्रत्येकाने अनुभवला पाहिजे. जेव्हा तो आनंद आपण अनुभवतो तेव्हाच जगण्याचा अर्थ जवळून कळतो.

जीवनात प्रेम हे सर्वानाच हवेहवेसे वाटते. आपण आयुष्यात सफल होऊ. प्रत्येक व्यक्तीचे सुख-दुःख वाटून पैंजन त्यांना सहानुभूती देणे आपले कर्तव्यच असते. परंतु आपण तसेन करता त्यांच्यावर आलेल्या परिस्थि- तीला हसत असतो. अशावेळी त्या लोकांना मायेचा एक शब्द जेरी बोलला ना तरी त्यांचे समाधान होते व त्याच आपुलकीच्या, प्रेमाच्या दोनच शब्दांनी ते आनंदून जातात. निदान करून दाखविले नाही तरी नुसत्या बोलण्यानेच त्यांची वृमी होत असते. खरंच, ह्या बोलण्यालाच जास्त महत्त्व असते. ते शब्द कधीच विसरत नाहीत.

जगामध्ये कितीतरी असे दुर्दैवी असतात. त्यांना प्रेमाचा व मायेचा कधीच स्पर्श झालेला नसतो. (उदा.

आश्रमातील मुले-मुली) खरोखरच आपण भाग्यवान आहोत. कारण या जगात आपणावर प्रेम करणारी कित्येक माणसे भेटतात. परंतु आपण त्यांच्या प्रेमास पात्र असावे लागते. काही लोक प्रेमाचा गैरफायदा घेतात. आपल्या मित्रास फसवितात व संकटाच्या वेळी त्याची साधी विचारपूस करत नाहीत. आपण सर्वांशी चांगले बोललो, तर आपणांस कोणीच तोडून बोलणार नाहीत. जीवनामध्ये सफल व्हायचे असेल तर, प्रेम हा त्यातील केंद्रबिंदू आहे. म्हणतात ना, “प्रेमाचा अर्थ जगूनच कळतो, जग हे प्रेमानेच जिंकता येते.” प्रेमाचा अर्थ अनुभवावाच लागतोतो शब्दांनी कळत नाही.

“जीवनाचा कितीही आस्वाद घ्या, तरी तृप्ती वाटत नाही हीच तर जीवनाची खरी गंमत आहे.” असे कुणीतरी म्हटले आहे. हो, ते अगदी बरोबर आहे, जीवनामध्ये चांगले निर्माण करण्यासाठी प्रेमाशिवाय दुसऱ्या पर्याय नाही, तर ते सत्यसृष्टीत उतरूनच समजते. ही तृप्ती प्रत्येकास अनुभवण्याची संधी आयुष्यात फक्त एकदाच येते. स्वतः चंदनाप्रमाणे झिजून दुसऱ्यास गंध घावा हे घ्येय प्रत्येकाचे असायला हवे.

“आनंद या जीवनाचा  
सुंगंधापरी दरवळावा  
भिजूनी स्वतः चंदनाने  
दुसऱ्यास मधुगंध घावा”

प्रेमाबद्दल सर्वांची मते सारखीच असतात असे नाही, काहीजण प्रेम हे फक्त स्वार्थ साधण्यासाठी करतात. गरज पूर्ण झाली की, केलेले उपकार विसरून कृतघ्न बनतात.

प्रेम करणे न करणे प्रत्येकाच्या अंतरंग गुणांवर अवलंबून असते. त्यामध्ये कुणाचे डडपण वा जबरदस्ती नसते. खरे प्रेम हे मनातून उचंबळून यावे लागते. कली जशी सूर्यप्रकाशाने हळूहळू उमलते तशीच मैत्री ही उमलतच असते. त्याला जर सतत मायेचा प्रकाश मिळाला तर ती कधीच कोमेजून जात नाही. प्रेमाचे रोपटे लावाताना, प्रथम तिला सतत सहानुभूतीचे पाणी घाला. नंतर त्यास मायेचे खतघाला, ते रोपटे कायम टवटवीत राहील व त्याचा प्रचंड वृक्ष बनून तो सतत दुसऱ्यांना सावली देत राहील.

आई किंवा घरातील नातेवाईक एकमेकांवर प्रेम करतात. हे प्रेम सर्वात श्रेष्ठ असते. आईच्या पदराखाली जगण्यात फार आगळा आनंद असतो. आई आपले सुख मुलाला, कुटुंबाला देते व त्यांची दुःखे स्वतः घेते. हाफी प्रेमाचाच एक भाग आहे. तिच्या प्रेमाची थोरवी सांगणारी कविता अनेक थोर कवींनी केली आहे.

प्रेम हे निष्पाप असते. त्याला स्वार्थाची भाषा कळत नाही. प्रेमासाठी काही लोक भुकेलेले असतात. खरोखरचं ते सुदेवी असतात. या जगात आल्याचे सार्थक करायचे असेल तर प्रत्येकावर प्रेम करा. प्राण्यावर, वेळीवर,

फुलांवर, कळ्यांवर, जे-जे दिसेल त्याच्यावर प्रेम करा. प्रत्येक व्यक्तीवर विश्वास ठेवा. विश्वासाने प्रेम सतत वाढत जाते, कुणाचाही द्वेष वा मत्सर करू नका. असे केले तरच तुम्ही यशस्वी व्हाल. जीवनाचे डडलेले रहस्य वा कोडे उलगडाल व त्यात पदोपदी आनंद लाभेल.

स्वतः साठी तर प्रत्येकजण जगत असतो परंतु दुसऱ्यासाठी जगण्यातला आनंद अनुभवा. आपले दुःख विसरण्यासाठी दुसऱ्यावर प्रेम करा. तोच आनंद लुटा. तेहाच जीवनाचा खरा अर्थ कळेल. प्रेमाचे मोल पैशात करू नका. प्रेम अनमोल आहे. त्याचे मोल कशानेच करता येणार नाही. त्या प्रेमाचा मोबदला प्रेमानेच मिळतो. तो फार मोठा ठेवा आहे. ह्याची जपणूक करा. त्यास लोखुंडाप्रमाणे गंजू देऊ नका. प्रेमाचे हे गाणे सदैव गा. त्याचे सूर अंयंत आठवणी हृदयातून कधीच जात नाहीत. या प्रेमामुळे मरणालाही मरणकळा प्राप्त होते. जगण्याची ईर्ष्या निर्माण होते. तोंडातून आपो आपच शब्द बाहेर निघतात.

“या जन्मावर या जगण्यावर शतदा प्रेम करावे.”

## सरल्ला

आकाशातील तारका कधीच मोजू नये माणसानं  
कारण त्या कधीच अचूक मोजता येत नाहीत  
सुखाची आशा कधीच करू नये मानवानं  
कारण पूर्ण सुख कधीच मिळत नाही  
संपत्तीची लालसा कधी धरू नये  
कारण ती कधीच पूर्ण होत नाही.

थोड्याशा सुखानं कधीच मोहून जाऊ नये  
कारण नंतर दुःखाचा डोंगर पार करणं  
खूप अवघड जात.

भविष्याकडे पाहताना थोडा भूतकाळ आठवावा  
कारण भूतकाळ भविष्याकडे नेणारा एक मार्ग आहे.

सर्वबाजूंनी विचार करून जर प्रत्येकानं  
जीवन जगण्याचा मार्ग स्वीकारला तर  
मग बघा कसं मस्त जीवन जगत येतं

आणि आयुष्यातील सुखाचं कोडं  
आपो आप कसं उलगडत जातं !

कु. वैशाली दरेकर  
(द्वितीय वर्ष कवा)



## द्विजगण अवघे

नाना लोँढे  
(तृतीय वर्ष कला)

सतत देत असतात. वातावरणातील कीटक भक्षण करून त्यावर नियंत्रण ठेवतात व निसर्गाचा समतोल राखण्याचा प्रयत्न करतात.

‘वृक्ष तेथे विहंग’ या न्यायाप्रमाणे विविध प्रकारच्या विहंगानी आपल्या महाविद्यालयाच्या प्रांगणास आपले माहेर, मानले आहे म्हणूनच ते येथे स्वच्छंदपणे विहार करताना दिसतात. आपल्या परिसराला लाभलेल्या वृक्षांच्या वरदानामुळे येथे विहंगांची वस्ती वाढीला लागली आहे. आपल्याला शांततेची जाण करून देणारे कबूतर, हवेतील कीटक भक्षण करून वातावरण स्वच्छ राखणारा परंतू वेड्यासारखा हालचाली करणारा वेडाराघू, भारद्वाज, पोपट, बुलबुल, सूर्यपक्षी, घुबड इ. विहंगांनी आपले वसतिस्थान महाविद्यालयाच्या परिसरात निवडले आहे.

सुप्रसिद्ध कवी मुहम्मद इकबालनी लिहिले आहे,

“सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्ताँ हमारा ।  
हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा ।”

बुलबुल पक्षी बगीचाच्या सौंदर्यात भर घालतात. हे पक्षी हळ्ळी काश्मिर सरहदीवरच्या पर्वतात आढळतात. यांचे शरीर उदी रंगाचे असून, डोके काळे व गाल पांढरे असतात. हे नेहमी जोडीने राहतात. यांच्यात आपसात नेहमी भांडण चालू असते. परंतु ते आपले घरटे मात्र मोठे सुबक व स्वच्छ ठेवतात.

सुंदर अशा पाळीव पक्ष्यांमध्ये पोपट हा प्रमुख आहे. त्याला बोलायलाही शिकवता येते. पोपटाच्या तीनशेपेक्षा जास्त जाती आहेत. ‘माकास’ नावाचा पोपट

सर्वत मोठा असतो, तर 'पिझी' हे आकाराने लहान पोपट होत. पोपट हा शाकाहारी पक्षी आहे. फक्त 'किया' नावाचे पोपट यास अपवाद आहेत. उलटे पाय हे या पोपटाचे वैशिष्ट्य होय. चोच लहान, जाड व टोकाला बाकदार असते. वैशिष्ट्यपूर्ण चोचीमुळे पोपट कठीण कवचाची फळे खाऊ शकतो. कधी कधी झाडावर चढताना चोचीचा आधार घेतात. संध्याकाळी पोपट प्रचंड संख्येने एकत्र येतात व ठरलेल्या झाडावर विश्रांतीसाठी उतरतात. निवाच्याकरता निवडलेल्या झाडाकडे व झाडापासून येण्याजाण्याचे मार्ग पक्के ठरलेले असतात.

बायबलच्या गोटीनुसार जेव्हा जलप्रलय झाला,  
 तेव्हा नोहाच्या कुटुंबाने कुठे भूमी आहे काय? हे  
 पाहण्यासाठी एक कबूतर सोडले व तो सुरक्षितपणे  
 जमिनीवर उतरला. कबूतर हे शांतिसूचक आहे. कबूतर  
 आपल्या जातीतल्या किंवा अन्य कोणत्याही पक्ष्यांशी  
 सहसा झगडत नाही. आजही विशेष कार्यक्रमावेळी कबूतर  
 पक्षास आकाशात सोडले जाते.

भारद्वाज या पक्ष्याचे एक वेगळे स्थान आहे. सकाळी हा पक्षी दृष्टिपथास आल्यास शुभशकुनी समजले जाते. याउलट स्थिती 'घुबड' या पक्ष्यांची आहे. उंदीर भक्षण करणारा हा प्राणी आहे. युरोपात या पक्षाला मान आहे. यास विद्येचे प्रतीक समजले जाते. वेडा राघूही

वैशिष्ट्यपूर्ण कार्य करतो (हवेतील) वातावरणातील कीटक भक्षण करून वातावरणाचा समतोल राखण्याचा प्रयत्न करतो. परंतु हालचाली वेड्यासारखा करतो. म्हणून यास वेढा राघू समजले जाते. सर्वात चिमुकला पक्षी म्हणून आपण 'सुर्योपक्षी' मानतो. या पक्ष्याचे घरटे आपल्या कॉले -जच्या लेडीज कॉमन रुमजवळील झाडावर आढळून येते

पक्ष्यांना मानवाची गरज आहे की नाही हे सांगा  
येणार नाही पण मानवाला मात्र पक्ष्यांची गरज नक्कीच आहे.  
निसर्गाशिवाय मानव जगू शकत नाही. म्हणजेच आपल्याला  
असेच म्हणावे लागेल की मानव जीवन, पाणी जीवन आणि  
वनस्पती जीवन हे एकूण परस्परावलंबी आहेत. त्यातल्या  
त्यात निसर्ग आणि पक्षीजीवन हे तर निश्चितच परस्परावूक  
आहेत.

आहेत. झाडावरील फळे, झाडांची पाने आणि कृती-  
कीटक हे या पक्ष्यांचे अन्न. मानवाप्रमाणे या पक्ष्यांनासुधादा  
अन्न, वस्त्र म्हणजे त्यांचे संरक्षणात्मक पर्यावरण, आणि  
निवारा ह्या प्राथमिक गरजा आहेत.

आम्हा माणसांना सुद्धा ह्या इवल्या पक्षीया खूप खूप शिकण्यासारखे आहे. निसर्गाशी पक्षीजीवन असे एकरूप झालेले आहे. ते निसर्गातील एक सुरेल आनंदगीत आहे.

## तू कुरे होतास ?

तेहा तू कुठे होतास ?

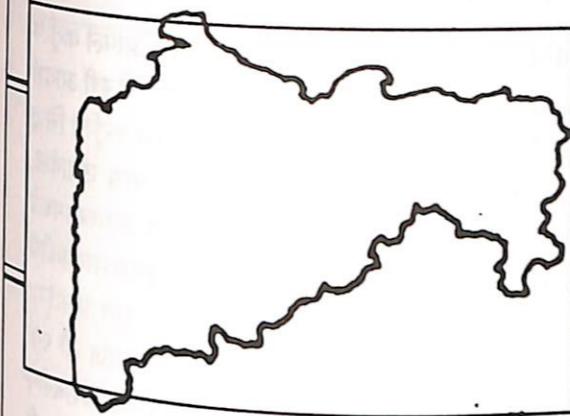
जेव्हा डोळ्यात अक्षंची लांडा,

... जग्रूना गदा कली होती.  
हृदयाशी वेदना कि

पूर्वी मनामध्ये घर करून बसलेल्या आठवणी  
हळूहळू दार उघडत होत्या.

याच आठवणीनी डोऱ्यातील अशूना  
आपलंसं करून घेतलं होतं  
अशा असहाय्य वेळी मला फक्त

कु. सीमंतिनी चौधरी  
(१२ वी क्लास)



## महाराष्ट्राचे महिला धोरण नवे आव्हान !

कु. रेशमा खरात  
(१९ वी कला अ)

**‘तुम्हीच ठरवा कसं जगायचे ते  
रडत कुढत का गाण म्हणत’**

हे मंगेश पाडगांवकरांचे शब्द वाचले की आठवते  
ती स्वातंत्र्याचे पंख कापलेली स्त्री आणि आजची सुशिक्षित,  
जागरूक नागरिक-स्त्री.

महाराष्ट्रात नुकतेच राज्य सरकारने महिलाविषयक धोरण जाहीर केले आहे. स्त्रीही एक माणूस आहे ही कल्पना जनमानसात-समाजात रुजू लागली आहे, ती या महिलाविषयक धोरणामुळे.

स्त्रीला प्रत्येक क्षेत्रांत ३० टक्के जागा देण्याची कल्पना उत्तेजनपर आहे. स्त्रियांच्या बाबतीत हा एक कांतिकारी बदलच म्हणावा लागेल. शासनाची ही संधी म्हणजे स्त्रियांना उत्तेजन देणारी पर्वणीच आहे. यामध्ये खियांच्या विकासाबाबत तरतुदी केल्या आहेत. साक्षरतेसाठी केलेला प्रयत्न, स्त्रियांसाठी राज्यमहिला आयोगाची स्थापना, महिला पोलिसांच्या संख्येत वाढ, संपत्तीवर नवराबायकोचा एकत्रित अधिकार इत्यादींच्या समावेश आहे. त्यामुळे सध्याच्या काळातील स्त्रियांने स्थान थोडैवहुत उंचावलेले दिसते. स्त्रीची प्रगती हे आल्याखेरीज राष्ट्राची जगाची प्रगती होणार नाही हे विवेकानंदाचे वाक्य खरे ठरले आहे.

आपल्या देशात मदर तेरेसा सारख्या आदर्श  
गता तसेच किरणबेदीसारख्या कर्तृत्ववान स्त्रिया किंवा  
पी.ली.उषा सारख्या अनेकांना स्फूर्ती देणाऱ्या खेळाढू,

सौदामिनी देशमुख सारख्या वैमानिक दिसून येतात. ही भारताला! लाभलेली रल्नेच आहेत. परंतु हे धोरण खरेच सार्थक होऊ शकेल काय? की नुसते शब्दांचे बुडबुडे राहतील? स्त्रीविषयक धोरणामुळे त्यांचे प्रश्न सुटणार आहेत का? त्याची काटेकोरपणे अम्मलबजावणी कितपत होणे शक्य आहे? आजपर्यंत बंधनात जखडल्या गेलेल्या स्त्रियांना खरच मुकी मिळू शकेल काय? असे अनेक प्रश्न मनात निर्माण होतात. पण खरेच या धोरणामुळे स्त्रियांची शारीरिक, मानसिक, भावनिक गुणवत्ता वाढवण्यास हे धोरण यशस्वी ठरू शकेल असे वाटते.

द्घोरण यशस्वा ठरु रापवरी असले तरी किंमत आहे. स्त्रियांचे दुय्यम स्थान ही समाजात असलेली विषमताच आहे. स्त्री शिकलेली, नोकरी करणारी असली तरी तिच्या विचारांना, मतांना शून्य किंमत असते. पत्नीने पतीच्या म्हणण्याप्रमाणेच तो सांगेल तसेच वागावे, परंतु पतीने पत्नीच्या म्हणण्याप्रमाणे वागावे हा नियम कोठेही नाही. किंत्येक ठिकाणी हुंड्यासाठी मुलींना त्रास दिला जातो. नवीन कायद्यान्वये इस्टेटीत बहिणीला समान वाटा देण्याचे ठरले पण तो खराच कितपत मिळ्यात युक्तिसंग्रही? ग्रामसभेतील स्त्रियांना दारुची दुकाने बंद करता येतील पण शहरातील दुकाने कोण बंद करणार? स्त्रियांना नोकरीत राखीव जागा ठेवण्यात आलेल्या आहेत, पण याचा फायदा समाजातील मूठभर स्त्रियाच घेतील. ज्यांना नोकरीची खरीखुरी गरज आहे त्यांना समाजातील वशिलेबाजीमुळे नोकरी मिळत नाही, अशांचे प्रश्न कोण सोडविणार? नुसती स्त्री-मुक्तीची मंडळे

चालवून शहरी व खेड्यातील (पददलित) स्त्रियांवरील पाशवी अत्याचार कमी होणार नाहीत. नुसते भाषणाचे ढिंडोरे पिटवणे योग्य होणार नाही. पूर्वी स्त्री चार भिंतीच्या आड संरक्षित होती त्यामुळे अत्याचार कमी होत. राक्षसी वृत्ती समाजामध्ये दिसून येते. संपत्ती, शरीरभोग हेच सर्वस्व समजणाऱ्या समाजात संस्कृती कितपत आहे? शासनाने काही चांगल्या योजना राबवूनही हे समाजाचे मूर्तिंत चित्र दिसते.

'जिच्याहाती पाळण्याची दोरी ती जगते उद्धारी' हे मर्म ओळखून स्त्री-शिक्षणाचे महत्त्व ओळखलेल्या फुले दांपत्याने राष्ट्रमातोंना घडविण्यास प्राधान्य दिले, सावित्रीबाईंनी झेललेल्या दगडांची, शेणकाल्यांची आज फुले झाली आहेत. स्त्रियांच्या कायदेशीर हक्काचे श्रेय अंबेडकराना आहे. त्यांनी स्त्रियांच्या कायदेशीर हक्काचा पाया घातला तसेच आगरकरांसारख्या विचारवंतानी वृत्तपत्रातून स्त्रीमुक्तीसाठी बंड सुरु केले. या समाजसुधारकांनी स्त्री शिक्षणावाबत केलेली प्रगती लक्षणीय आहे. स्त्री बाबत त्यांनी रंगवलेले स्वप्न आजच्या

स्त्रीने पूर्ण केले आहे, पुरुषांच्या बरोबरीने आपले कर्तृत्व सिद्ध करून प्रसंगाता न डगमगता तोंड देणारी स्त्री आदर्श ठरली आहे. कोणत्याही क्षेत्रात तिने आपले कर्तृत्व सिद्ध केले पाहिजे तरच आजच्या स्त्रीचे व्यक्तिमत्व उंचावेल. आपण कुठले क्षेत्र निवडायचे याबाबत त्यांच्यामध्ये आत्मविश्वास हवा. आज स्त्रियांचे जीवन खूपच धावपक्कीचे झाले आहे. ती कुणाची मुलगी, पत्नी, आई, सून असते या भूमिका पार करून तिला जायचे असते. आज ती एक आदर्श नागरिक म्हणून जगत आहे. पुरुषांच्या बरोबरीने वागते आहे. वाढती गुन्हेगारी, भ्रष्टाचार, पारंपारिक रुढी परंपरा बदलून टाकण्यासाठी राजकारणाच्या क्षेत्रातही स्त्री शक्तीची झलक दाखविणे जरूर आहे. पण एखादे रोप आज लावले म्हणून उद्या त्याला लगेच फक्के येत नाहीत! टप्प्याटप्प्याने ही आहवाने स्वीकारायला हवीत. त्यासाठी कणखरपणा हवा. कायद्याने काही देऊ केले, तरी ते घेण्याची क्षमता असावी, त्यासाठी लोकशिक्षणाचे महत्त्व आजेंद्रियांनी स्त्री शिक्षणावाबत केलेली प्रगती ओळखायला हवे.

## तुझ्यासाठी

पण, जसा मी वेगात चाललोय  
तसेच लांब होत चाललंय  
क्षितिजही आणि तूही  
तरीही मी अनंतार्पर्यंत सुधदा

येणार आहे तुझ्यासाठी  
कारण, मी प्रेम केलंय तुझ्यावरती  
फक्त तुझ्याचवरती

रमेश जगताप (१२ वी कळा)

स्वप्नसागराच्या पैलतीरी  
क्षितिजापाशी आहेस तू  
मावळ्याच्या संधीप्रकाशात  
दिसतात मला तुझे बाहु  
माझ्यासाठी पसरलेले

मी भावनेची नौका  
मनाच्या वेगात सोडलीय  
तुझ्या दिशेने

॥ विद्यार्थी सासामिलापी राजकारणापासून अलिस्त असले पाहिजात ॥



## भारतातील शैक्षणिक समर्थ्या

सोमनाथ वाघळौरे  
(तृतीय वर्ष कळा)

आजचे शिक्षण, शिक्षक, शिक्षणसंस्था आणि विचारमंथन चाललेले दिसते. समाज समृद्ध व्हावा यासाठी आयोगाचा अहवाल हाती येऊन १९ वर्ष झाली तरी शैक्षणिक क्षेत्रात इतके प्रश्न का?

भ्रिटिश अंमलात इ.स. १८८२ साली नियुक्त नेहेंनी - फुले, नौरोजी यानी शिक्षणावर भर दिला. तसेच जनजागृतीसाठी असणाऱ्या शिक्षणाची गरज त्यांनी शिक्षणाची आणली. गोखलेंनी देखील सार्वत्रिक प्राथमिक आयह सरकारपुढे धरला.

### भारत सरकाराच्या इ.स. १९८५ साली प्रसिद्ध केलेल्या 'शिक्षणाचे आहान' या निवेदनामध्ये म्हटले आहे

खर्च आहे. एवढा खर्च करून देखील भारताने कोणते शिक्षणिक यश गाठले आहे? सरकाराच्या आकडा वाढत आहे. तै १४ वयाची ७७ टक्के मुले अद्याप शाळेबाहेर आहेत. त्यामध्ये १-२ वर्षात शाळा सोडून देणाऱ्या मुलींची संख्या कार मोठी आहे. तसेच भारताच्या आर्थिक विकासातील औद्योगिक क्षेत्रात काम करणाऱ्या ५० टक्के कामगारांना लेंगातील कामगारांपैकी बहुतेक कामगार अकुशल असतात.

### आर्थिक प्रश्न :

अनेक देश उत्पन्नाच्या ६ ते ८ टक्के खर्च राष्ट्रीय शिक्षणावर करतात. तर भारतात हे प्रमाण ३ टक्के आहे. प्रत्येक पंचवार्षिक योजनेत खर्चाचा आकडा वाढत आहे. पहिल्या योजनेत १६९ कोटी रुपये इतका खर्च वाढला. परंतु यामधील ७५ टक्के भाग हा शिक्षकांच्या पगारावर खर्च होतो. त्यामुळे अन्य शैक्षणिक सुधारणासाठी पैसा उपलब्ध होत नाही. तसेच प्राथमिक शिक्षणावरीलही खर्च हा कमी होत नाही. इ.स. १९५० साली प्राथमिक शिक्षणावरील खर्च हा एकूण शिक्षणविषयक खर्चाच्या ४३% होता. तो इ.स. १९७७ मध्ये २७% झाला. तसेच ग्रामीण भागासाठी अधिक रक्कम उपलब्ध होणे जरूरीचे आहे.

## मनुष्यबळ विकास व शिक्षण :

भारताच्या आर्थिक विकासातील एक मोठा अडसर म्हणजे जास्तीत जास्त जनतेची निरक्षरता. आज विद्यार्थीवर्गामध्ये शिक्षणपद्धती संबंधी तीव्र विफलतेची भावना आहे. या वैफल्याने समाजात अपप्रवृत्तींचे पीक वाढत आहे. शिक्षणाच्या अकार्यक्षमतेला अनेक जटिल घटक कारणीभूत असले तरी त्यामध्ये आपली परीक्षा पद्धती आणि प्रमाणपत्रे देण्याची पद्धती यांची भूमिका महत्वाची आहे. ५ लक्ष प्राथमिक शाळा, ६० हजार माध्यमिक शाळा, ५ हजार विद्यालये आणि १५० विद्यापीठे असलेली आपली शिक्षणपद्धती बाजारावृत्तीव सामुदायिक कॉर्पीसारख्या रोगाने पोखरून निघत आहे.

कोठारी आयोगाने शिफारस केलेले शिक्षणाचे व्यावसायीकरण गोगलगाईच्या गतीने पुढे चालते आहे. १० वी नंतरचे २+३ स्तरावरील शिक्षण विविध शाखांकडे वळले पाहिजे व त्याने नोकरीच्या बाजारपेठेच्या गरजा पुरविल्या पाहिजेत. जगातिक बँकेच्या अहवालानुसार इ.स. १९७९ साली २० ते २४ वयोगटातील १% भारतीय उच्च शिक्षणात होते. हे उच्च शिक्षणाचे स्वरूप हे गुणात्मक निकषांवर बदलावयास हवे. इ.स. २००० पर्यंत भारतातील निरक्षरांची संख्या जगाच्या निरक्षरांच्या ५०% वर जाईल. ही गंभीर बाब आहे. हे टाळण्यासाठी प्रौढ शिक्षणासारखे प्रयोग अस्तित्वात आले. परंतु त्यास अपेक्षित पत्रिकांमध्ये मिळाला नाही.

## प्राथमिक शिक्षण :

राज्यघटनेतील ४५ व्या कलमानुसार प्राथमिक शिक्षण सार्वत्रिक करण्याचा कार्यक्रम इ.स. १९८६ पर्यंत करण्यात यावा असे नमूद केले होते. मात्र ही व्यवस्था व्यवस्थित राबविण्यात आली नाही. अजून ६ कोटी २० लाख मुलांना शाळेमध्ये आणले तरच या योजनेचे मूळ हेतू पूर्ण होईल. खालील घटकांमुळे हे काम कठीण झाले आहे.

१) आर्थिक व सामाजिक दृष्ट्या मागासवर्गीय पालकांची मुलांना पूर्ण वेळ शाळेमध्ये पाठविण्याची असमर्थता.

- २) मुलींना शिक्षण देण्याबाबत उदासीनता.
  - ३) अध्ययन-अध्यापन सामग्रीचा अभाव.
  - ४) संचार सुविधांचा अभाव.
  - ५) अनियमित उपस्थिती व त्यामुळे येणारे अपयश व गळती.
  - ६) योग्य प्रशिक्षित शिक्षकांची नेमणूक न होणे.
  - ७) साक्षरतेचा वापर करण्याची संधी नसल्याने परत येणारी निरक्षरता.

येणारी निरक्षरता.

तेव्हा कोणत्याही वर्षी सुमारे ११ वर्ष वायची केवळ ३४-३५% मुलेच ५ वर्षांचे प्राथमिक शिक्षण पूर्ण करतात. मुलींच्या बाबतीस हे प्रमाण २०% एवढेच आहे. थोडक्यात प्राथमिक शिक्षणाचे सार्वत्रीकरण होणे जरुरीवे आहे.

### **माध्यमिक शिक्षण :**

कोठारी आयोग आणि मुदालियार यांचे  
माध्यमिक शिक्षणाविषयी काही ठळक द्येय समोर ठेवला  
होती. त्यासाठी सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षण, कार्यात्मक  
शिक्षण आणि व्यवहारज्ञान यावर भर दिला होता. परंतु  
गेल्या १५ वर्षात माध्यमिक शिक्षणाचा दर्जा घसरला  
आहे. अजून सुद्धा शालांत परीक्षेत उत्तीर्ण होणाऱ्या  
विद्यार्थ्यांची संख्या ही ५०% दिसत नाही.

माध्यमिक शिक्षण हे व्यवहार ज्ञानावर आधारात असावे, तेव्हा ज्या मुलांना पूर्ण वेळ शाळेत बसता येत असावी असाव्यात.

उच्च शिक्षण :

नाही त्यांच्यासाठी काही सुवधा पै

उच्च शिक्षण :

हिंदुस्थानात गरिबी, अज्ञान व ४५ वर्षांपूर्वीच्या  
पारतंत्र्याने निर्माण झालेले दोष दूर करून वैज्ञानिक  
दृष्टिकोन व तांत्रिक प्रगती करणे फार प्रचंड आव्हान आहे.  
उच्च शिक्षणाच्या माध्यमातून हे प्रयत्न आजतागायत्र चालू  
आहेत. आधुनिक औद्योगिक जीवनात उच्च शिक्षण  
आवश्यक आहे. उच्च शिक्षणाचे सार्वत्रीकरण झाले पाहिजे,  
असे मत मा. राम ताकवले, माजी कुलगुरु, पुणे विद्यापीठ

यांनी म्हटले आहे. उच्च शिक्षण घेण्यास असणाऱ्या  
वयोगटातील फक्त ४.७% विद्यार्थीच उच्च शिक्षण घेत  
आहेत. प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षणामधील गळती  
थंबवल्यास यामध्ये वाढ होणे शक्य आहे.

स्त्रियांचे शिक्षण

वर्णभेद, जातिभेद, अस्पृश्यता अशी अनेक अर्थशून्य सामाजिक बंधने आपला समाज मोडीत आहे. परंतु स्त्रियांच्या स्वातंत्र्याबाबत पर्यायाने तिच्या विकासास पूरक ठरणारे शिक्षण याबाबत बहुतेक लोक उदासीनता दर्शवितात. इ.स. १९८१ च्या जनगणनेनुसार भारतात साक्षर स्त्रियांचे प्रमाण ४८% आहे. महाराष्ट्रात स्त्रियांच्या साक्षरतेचे प्रमाण ग्रामीण भागात ३८% तर शहरी भागात ६४% आहे. समाजातील उभय घटकांनी वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून पाहून स्वीच्या शिक्षणास महत्त्व दिले तर समाजातील अनिष्ट प्रथा व घटना आपो आपच नष्ट होतील. तेसेच सरकारने देखील स्त्रियांना शिक्षण हे सक्तीचे करणे आवश्यक आहे.

## जाति-जमाती व शिक्षण :

अनुसूचित जाती-जमाती हा आपल्या देशातील सामाजिक, आर्थिक तसेच शैक्षणिक दृष्ट्या मागासलेला घटक आहे. महाराष्ट्रामध्ये ४७ अनुसूचित जमाती आहेत.

इ.स. १९८१ च्या जनगणनेनुसार ३२.३८% आदिवासी पुरुष तर ११.९४% आदिवासी स्त्रियां साक्षर आहेत. दारिद्र्य व उदासीनता यामुळे ते लोक आपल्या मुलांना शाळेत पाठविण्याबाबत उदासीन असतात.

समाजातील अज्ञानाचे समूळ उच्छाटन करण्या  
-साठी शिक्षण हे प्रभावी माध्यम आहे. या साधनाचा  
तेवढ्याच प्रभावीपणे उपयोग करावयास हवा. आतापर्यंत  
शिक्षणात किंती गुंतवणूक करतो, यावर भर दिला गेला  
परंतु आता जास्तीत जास्त मुलांना प्राथमिक, माध्यमिक  
पर्यायाने उच्च शिक्षण कसे देता येईल यावर भर द्यावयास  
हवा. तसेच प्राथमिक शाळा ह्या शहरी भागात न वाढवता  
त्या ग्रामीण भागात जास्त हव्यात. ५३% शाळांना  
कायमच्या इमारती नाहीत तर ७१% शाळात ग्रंथालये  
नाहीत. ५९% शाळात पिण्याचे स्वच्छ पाणी नाही तर  
४०% शाळांना फलासुध्दा नाही. प्रौढ शिक्षण व रात्रीची  
शाळा इत्यादी उपक्रम सक्तीने राबवून घेणे आवश्यक  
आहे, नाहीतर स्वातंत्र्य प्राप्तीच्या वेळेस जी लोकसंख्या  
होती त्यापेक्षा अधिक लोकसंख्या आज निरक्षरांची आहे.  
म्हणजे आज ४३ कोटी ७० लक्ष (१९८१) लोक निरक्षर  
आहेत, आणि माझ्या दृष्टिकोनातून आधुनिक  
हिंदुस्थानच्या विकासास हे नक्कीच मारक ठरेल.

प्रतीक्षा

तोंडातील पाणी गिळत  
दाढीचे केस खाजवत  
पाहतोय वाट वशिल्याविना  
कोणाच्या तरी उपकाराची.

## संजय ठम (द्वितीय वर्ष कला)



## राष्ट्रीय विकासात संस्काराचे स्थान

संजय भिसे  
(द्वितीय वर्ष कला)

निसर्गांही कायम चालणारी एक प्रक्रिया आहे. या प्रक्रियेमध्ये सातत्याने काहीना काही घडत असत. या घडण्याचा संबंध मानवी जीवनाशी असतो. म्हणूनच मानवी जीवन या प्रक्रियेशी जुळवून घेण्यासाठी रुढी-परंपरेने चालत राहिलेल्या संस्कृतीमध्ये बांधले जात असते. ही बांधणी संस्कार नावाच्या संस्कृतीमध्ये आकृतीमध्ये माणसाला अनुभवायला मिळते. या संस्कारांनी मानवी जीवन घडत असत. आणि मानवी जीवनामधून राष्ट्राचं जीवन घडत असत. एकाचं जीवन घडविण्यासाठी अनेकांच्या जीवनांची गुंतवणूक हे राष्ट्रीय जीवनाचे सार असते. म्हणूनच अनेकांवरचे संस्कार राष्ट्र नावाच्या एकाचं जीवन घडवत असतात. हे संस्कार भारतीय संस्कृतीतल्या १६ संस्करांच्या रूपानं पुरस्कृत केले जात असतील किंवा पाश्चात्यांचे संस्कार मैर्नसच्य रूपातून माणसालावघायला मिळत असतील. संस्कार कोणते आहेत याहीपेक्षा ते का आहेत हे जास्त महत्वाचं ठरत.

भारतीय संस्कृतीमध्ये माता ही मुलांची मूळ मार्गदर्शक आहे किंवा पहिली गुरु आहे असं मानलं जातं. कारण मुलांवर संस्कार करणारी ती प्रमुख व्यक्ती असते. बालपणी तिने शिकवलेली 'शुभंकरोति' किंवा आज इतिहास जमा झालेले 'परवचे' हे त्या मुलाच्या आजन्म उपयोगाचे घटक ठरतात. मात्र या संस्कारामागचा अर्थ देवपूजेमध्ये गणपतीचं प्रतीक म्हणून सुपारीची पूजा करण्याची पद्धत बालपणापासून मुलांना बघायला मिळते. गणपतीच्या जागी सुपारीची पूजा का करायची, या

॥ उत्कट इच्छा व पूर्ण अनासवती ही यशाची गुरुकिल्ली आहे ॥

मुलाच्या देखत किंवा पश्चात स्वतः खोटं बोलत असतील तर ते संस्कार फार काळ टिकणं कधीच शक्य नसतं.

बालपणी 'श्यामची आई' हा चित्रपट लहान मुलांना त्यांची इच्छा नसली तरी बघायलाच लागतो. या 'श्यामची आई' चित्रपटात एक दृश्य आहे. श्याम आंघोळ करून आल्यानंतर माती लागलेले पाय पुसण्यासाठी आईच्या पदराचा हटू करतो. आई पदराने पाय पुसते पण त्याचवेळी ''पायाला माती लागू नये म्हणून जसा जपतो स ती माता नकळत करून जाते. असे संस्कार वडील बालकांना मिळाले तरच हजारो साने गुरुजी बनू शक्तील. पण त्यासाठी त्या सर्वच बालकांना 'श्यामची मूर्ख घडविले जातात हे रामदासांचे शब्द आई-बापांनी समजून घेणे आवश्यक आहे.

वासुदेव बळवंत फडक्यांनी आद्यक्रांती अपेक्षित यश मिळाले नसलं तरी सुधात्यांनी त्यातरुणांवर घडविलेले संस्कार पुढची पिढी घडविण्यासाठी उपयुक्त वासुदेव बळवंत फडक्यांची रामोशांच्या पोरांना

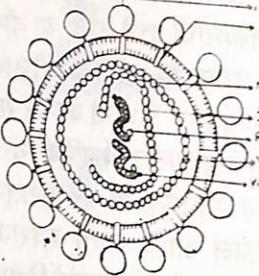


### नाते

वाचाशी असली दोस्ती तरी  
गुलाबाच्या वाटे जाऊ नये  
पळसाला पाने तीनच  
आपलंच घर काचेचं  
मग दगडाशी नातं जोडू नये

शेळी होउन जगू नये  
इथून तिथून सगळीकडे  
गुलाबाचे गुलकंद चांगले  
जेगलाशी नातं सांगून  
राहुल रासकर (द्वितीय वर्ष वाणिज्य)

॥ संयम खराखुरा असेल, तर त्यामुळे कोणीही उल्लासित होईल ॥



## एडस्बाबत अधिकाधिक जनजागृती गरजेची

भिलिंद संगई  
(पत्रकारिता व माहिती शास्त्र)

एडस या महाभयानक रोगाचे नांव माहित नाही असे सहसा कोणीही आढळणार नाही. जगामधील जवळपास प्रत्येक देशात आज या रोगाचा प्रादुर्भाव झालेला आढळून येतो. एडस रोग असा आहे की ज्याचे निदान पद्धती किंवा प्रतिकार जैविके आज तरीवैद्यकीय शास्त्रामध्ये असे या रोगाचे वर्णन केले जात आहे. एडस या रोगाबाबत या बाबतचे अज्ञान व अर्धवट, ऐकीव स्वरूपाची माहिती ऐकण्यात येतात. त्यामुळे विशेषत: महाविद्यालयीन युवक युवतींना काही प्राथमिक स्वरूपाची माहिती देण्यासाठी या लेखाचा खटाटोप आहे.

एडस या रोगाची पार्श्वभूमी पाहिली तर सर्वप्रथम १९८२ साली अमेरिकेमध्ये या रोगाचे निदान झाले. HIV च्या विषाणुमुळे हा रोग होतो असे निष्पत्र झाले. सुरुवातीला समलिंगी संभोगामुळे हा रोग होतो असा अमेरिकन डॉक्टर्सचा अंदाज होता. हे HIV चे विषाणू आले तरी कोटून? या प्रश्नाचे नेमके उत्तर आजही कोणी देऊ शकत नाही. अफिकेत असणाऱ्या काही जंगली माकडांच्या अंगावर हे विषाणू होते ते काही माणसांच्या शरीरामध्ये (त्या भागात रहाणाऱ्या अदिवासींच्या शरीरामध्ये) गेले व तेथून हळू हळू या विषाणूचा सर्वत्र प्रसार झाला.

HIV म्हणजे Immune Deficiency Virus म्हणजे रोग प्रतिकारक शक्ती नाहीशी करणारे विषाणू. या

॥ जिभवरील संयमाचा द्रास्यक्षयाशी फार जवळचा संबंध आहे ॥

विषाणूचा शरीरात प्रवेश झाला की मनुष्याची रोगप्रतिकारक शक्तीच संपूर्ण येते, मात्र यात सर्वात दुदैवाची बाब अशी आहे की या विषाणूनी शरीरात प्रवेश केल्याचे लवकर निदान होत नाही, निदानाचा कालावधी हा एक वर्षांपासून ते आठ वर्षांपर्यंतचा असू शकतो, त्यामुळे जेव्हा निदान होते. तेव्हा फार उशीर झालेला असतो. यातही दिलासा देणारी एक बाब अशी आहे की P. R. S. नावाचे एक तंत्र अमेरिकेत विकसित केले गेले आहे. या तैत्रानुसार HIV च्या विषाणूनी मानवी शरीरात प्रवेश केल्यानंतर मानवाच्या सर्वसामान्य जीवनशैलीत बदल होतो. ही बदललेली जीवनशैली या तंत्राने ओळखता येते.

Acquired Immune Deficiency Syndrome म्हणजे एडस होण्याची कारणे काय आहेत हे समजावून घेणे अतिशय महत्वाचे आहे. एडस होतो तो तीन कारणामुळे आणि ही तीन कारणे लक्षात ठेवणे गरजेचे आहे.

१) असुरक्षित संभोगाद्वारे २) HIV बाधित रक्ताद्वारे ३) HIV बाधित आईकॉड्न गर्भातील बालकाला. या तीन कारणांव्यतिरिक्त एकत्र बसणे, हस्तांदोलन, स्पर्श, एकमेकांचे कपडे वापरणे, शिंक, खोकला या कशानेही. एडस होत नाही. थोडक्यात हा रोग संसर्जन्य नाही. याव्यतिरिक्त आजारपणात जेव्हा इंजेक्शन घेण्याची वेळ येईल तेव्हा आपल्याला ज्या सुईद्वारा इंजेक्शन दिले जाणार आहे ती उकळलेली आहे की नाही याची डॉक्टरांना विचारून खात्री करून घ्यावी. शक्यतो "डिसपोजेबल" सुयाच वापराव्यात.

एडसचे सामाजिक परिणाम भयानक आहेत. अफिकेतील एक संपूर्ण पिढीच या रोगाने नामशेष झालेली व भारतात २० लाख लोकांना या रोगाची लागण झाली आहे. अनधिकृत आकडेवारी प्रमाणे जगात १ कोटी लोकांना वैड लाख लोकांना हा रोग आहे आणि दररोज सरासरी ५० यक्किंचा या रोगाची बाधा होते आहे. हा रोग होण्याचे पाणीनुसार नववीते बारावी व पदवीपर्यंतच्या महाविद्या-आहे व हीच सर्वात चिंताजनक बाब आहे. चित्रपटांचा वाटणेर लैंगिक आकर्षण यामुळे १७ ते २७ यावयोगटातील एका संस्थेने वेश्याव्यवसायांची पाणी केल्यानंतर दहावी असतो अशी धक्कादायक माहिती समार आली. महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना वाटणारे आकर्षण हे साहजिक व नैसर्गिक आहे. परंतु त्यामुळे उद्भवणाऱ्या या एडस रोगाचे दुष्परिणाम हे संपूर्ण आयुष्य उद्धवस्त करणारे असे आहेत. त्यामुळे लैंगिक शिक्षण शास्त्रशुद्ध पद्धतीने महाविद्यालयात तैर आईवडिलांनी कौटुंबिक चर्चा घडवून मुलांच्या मनातील मार्गाचा अवलंब करून एडसग्रस्त होतील. आणि जो एडसचा रोगी होईल त्याचा मृत्यू काही कालावधीत अटल असतो.

एडस टाळण्यासाठी घ्यावयाची काळजी म्हणजे कंडोम्सचा वापर, रकदानाच्या वेळेस रक्त तपासणे आणि HIV गर्भवती मातेने गर्भपात करून घेणे, जेणेकरून जन्मणाऱ्या मुलास या रोगाची बाधा होऊ नये. एडस झालेल्या रुग्णांकडे समाजाचा पाहण्याचा दृष्टिकोन अतिशय घृणास्पद असल्याने या रुग्णांबाबत एक नवीनच समस्या निर्माण झालेली आहे. एडसचा रोगी म्हटल्यावर त्याला वाळीतच टाकले जाते. विमनस्क मनःस्थितीमुळे अनेकदा आत्महत्या केल्या जातात. त्यामुळे एडस रुग्णांचे पुनर्वसन करणे ही एक नवीन सामाजिक जबाबदारी आज निर्माण झालेली आहे व युवकांनी यामध्ये मोठ्या प्रमाणात सहभाग देणे अपेक्षित आहे.

एडस होऊ नये म्हणून स्वतः काळजी घेतांना जे चुक्त असतील त्यांना योग्य मार्गदर्शन करून वाईट दिशेने जाण्यापासून प्रवृत्त करणे तसेच याबाबत योग्य व पुरेशी माहिती घेऊन इतरांना ती समजावून सांगणे व तिसरे महत्वाचे कार्य म्हणजे एडग्रस्त रुग्णांना समाजात सन्मानाची वाणीकूक मिळवून देण्याचा प्रयत्न करणे. महाविद्यालयानेही बदलल्या काळाची गरज ओळखून याबाबत आवश्यकती पावले उचलली पाहिजेत. शेवटी ही समस्या वा प्रश्न एखाद्या व्यक्ती वा कुटुंबापुरता मर्यादित नसून तो संपूर्ण राष्ट्राचा प्रश्न आहे. त्यामुळे एडस बाबत जनजागृती करण्याचे कार्य युवकांनी एक नवीन आव्हान म्हणून स्वीकारले पाहिजे असे वाटते.

### कृतिं

किती दिवस राहिले? पुरते हसून घे अपुच्या प्रश्नांची तुझ्या उत्तरे समजावून घे आज आहे, उद्या नाही, नाही कुणाचा भरवसा सारे मनातले सखे, आज बोलून घे टाळू नकोस मजला..... वाट अशी बदलू नकोस वैद्या उत्तरातल्या जरा तू वाटून घे

शब्दांत सांगू कशा अंतरीच्या भावना अंतरीच्या स्पंदनाने तूच त्या जाणून घे किती दिवस राहिले? पुरते हसून घे अपुच्या प्रश्नांची तुझ्या उत्तरे समजावून घे शकील शेख (तृतीय वर्ष कला)

॥ मानवी शरीर हे इश्वराचे निवासरथान आहे असे सर्व धर्मांचे मत आहे ॥



## संस्कार

उदय सुपेकर  
(तृतीय वर्ष कला)

गंगावळण गाव तसं छोटसंच होत. गावाच्या नावप्रमाणेच उजनी फुगवट्याच्या गंगेने गावाला वळसा दिला होता त्यामुळे शेतीसाठी पाण्याला कुठंच कमतरता वाटत नव्हती. गावाच्या पूर्वस टेकडी वरती शिवालय तर त्याच्याच पलीकडे गावाच्या जवळून जाणारं रेल्वे स्टेशन होत. गावाला बसगाडीची सोय मात्र नव्हती, त्यामुळे लोकांचा सारा प्रवास रेलगाडीनं नाहीतर पायीच होई.

चैत्राच्या महिन्यातील शेवटच्या काळातील दिवस होतं, सूर्य डोंगराआडून डोकावत व्हता. सकाळची कोवळी उन्हं पडली होती, अंगणात जणू काही सोन्याचा सडाच पडलाय! वाच्याच्या मंद झुळकीबरोबर शिवारातली सारखी ती दिसत होती. त्यात काही वेली होत्या तर काही फुलझाडंही होती निरागस, कोमल आणि त्याचबरोबर ओघात नष्ट पावणारी वयोवृद्ध झाडंहती तर वयोमानामुळे काहीची पानं गळून पडली होती. वाढत जाणाऱ्या वयोमुळे ते जमिनीशी असणारे नाते संबंध तोळू पहात होते. असाच उतरतीच्या काळाला लागलेला शिवरामपंत सूर्याचं कोवळं त्याला अलिकड काम होतं नव्हतं. तो आपल्या पूर्वाच्या आठवणीमध्ये गुरफटून गेला होता. आजपर्यंत त्याला आपला स्वतःचा विचार करायला कधी उसंतच मिळाली नव्हती. कामाचा पाठीमारे असणारा 'राडा' आणि बायकोची पिरपीर, या दोन गोटीमुळेत्याच्या संसाराची गडी प्लॅटफार्म

महिन्यासव्या माहिन्याच्या अंतरानं त्याच्याकडं नवीन पाव्हना येणार होता. आणि त्याच्या स्वागतासाठी लेकीच्या मायेपोटी यशोदा बार्शला गेलेली होती. आणि मुलगा गावात हिंडण्या फिरण्यासाठी गेला होता. घरी बसून ध्यायचं आणि गावातून हिंडून यायचं, याशिवाय त्याला दुसरा कोणता उद्योग नव्हता. पर्यायाने तो करत नव्हता असंच म्हणाना. आज याला मार तर उद्या त्याला कूट आणि घरी भांडनं घेऊन येणं त्यानं ठरवून टाकलं होतं.

शिवरामपंत आजै एकटेच घरी होते. बायको लेकीकडं गेली याचं त्यांना काही वाटत नव्हतं कारण त्याचं लग्न हे काही नवंनवं झालेलं नव्हतं. म्हणून त्यांना सुनं-सुनं वाटण्याचं काहीच कारण नव्हतं. बन्याच दिवसांनी आज कोणत्याही प्रकारचा बायकोचा लकडा त्याच्यामार्गे उत्तरतीच्या काळाला लागलेला शिवरामपंत सूर्याचं कोवळं त्याला अलिकडं त्यांना घरी कसं मोकळं मोकळं वाटत व्हतं.

पोरांच्या भविष्याबद्वलच्या विचारात त्यांच्या डोक्यात काहूर माजल होतं. बघता-बघता रास्या येण्डागत आडमाप झाला. लहानपनापासनंच कधी त्याला शाळेचं येड नव्हतं. त्यामुळंच की काय आज तो मोकाट सुटलेल्या जनावरागत भटकट होता. मिळंल ते खायचा आणि पडलं तिथंच झोपायचा असा त्याच नियमच ठरला होता.

आठवणी मागून आठवणीचं जाळं उलगडत होतं हेत्याला कळत होतं. पण वेळ निघून गेलेली व्हती. रास्यानं आपल्याला लहानपणी दिलेल्या 'शिवी' मुळं आपण म्हणाली व्हती, "लहान तर हाय अजून ल्योक. त्याला व काय कळतंय? तुम्ही तरी मोठं हाय, तुम्हाला तरी नको का कळाया? जनावरागत माराया उठलायाते?" तेव्हापासून आपन चार बोटं देखील लावली नाहीत आणि वायकोच्यावर कधी आपला धाक दाखवला नाही. 'माझं गुणांच लेकळं' म्हणत होती. 'माझं घरी घेऊन येत होता. बळंच चार घास भरवीत होता.

अशा प्रकारच्या आईच्या गोड बोलण्यानं पोरां पर शेफारलं होतं. आई मायेपोटी कवतीक करीत होती. संगतीनं एक दिवशी तो दारु पिऊन आला होता. तरी तेव्हा अजून! प्याला असंल एकमेकाच्या नादानं म्हणून रोजंच घोलां यशोदीला पटणार नाय हे त्याला मनोमन पटलं लालं त्यामुळं बापाचं अणि त्याचं कधीच पटलं नाही. आताशा दिले तर बापाला मारण्यापर्यंत त्याची मजल गेली होती. शेजारच्याचा पारुचं दोन कोंबडं त्यांनी व त्याच्या मित्रांनी रानात नेऊन खालं होतं. तिची समजूत घालता-घालता आईच्या गोड बोलण्यामुळं बापाबद्वलचं त्याचं प्रेम आटू लालं व्हतं. द्वेषाची भावना मात्र वाढीस लागली होती. आईच्यापानं आपल्याला जन्म दिला म्हणजे आपल्याला आजपर्यंत याच्यानं बाप वागत होता. बायकोपुढं त्याची मुक्या कुञ्ज्यागत अवस्था होत होती.

अलिकडं तर सगळंच अवघड होऊन बसलं तोंत कारण गावात शेजारच्या गावातील पाव्हण्यानं शहरी अपुप वाटण्याच्या गाववाल्यांना पोत्यावर बसून दाढी करण लागला. त्याची छाती धडधडू लागली असल्याचा त्याला भास झाला.

वाटू लागलं होतं. आधीच संसाराचा मेटाकुटीला आलेला गाडातो कसातीरी रडत-खडत ओढत होता. आणि त्यातच नवीन प्रति स्पर्ध्याची भर यामुळे तो जीवनाला कंटाळला होता घरची पिर-पिर तर पहिल्या सारखीच चालू होती पण पहिल्या सारखा खिशात मात्र माल नव्हता. म्हणूनच अलिकडं त्याचा पूर्वीचा ताल संपुष्टात आला होता.

पण रास्याला बापाबद्वल कधीच आस्था वाटली नाही. बाप त्याला धंद्याला लागण्याबद्वल संगत होता. चार समजुतीच्या गोटी त्याला सतत सांगण्याचा प्रयत्न करीत असायचा पण आयते बसून खाणाऱ्या रास्याला लागलेल्या सवयीमुळं बापाचं अणि त्याचं कधीच पटलं नाही. आताशा तर सारंच अवघड होऊन बसलं होतं. कारण रास्या वापर नाय हे त्याला मनोमन पटलं लालं यशोदीला पटणार नाय हे त्याला मनोमन पटलं आईच्या गोड बोलण्यामुळं बापाबद्वलचं त्याचं प्रेम आटू लालं व्हतं. त्यामुळं बापाचं दोन कोंबडं त्यांनी व त्याच्या मित्रांनी शेजारच्याचा पारुचं दोन कोंबडं त्यांनी व त्याच्या मित्रांनी रानात नेऊन खालं होतं. तिची समजूत घालता-घालता बेफिकीरवागणं दिवसन् दिवस वाढत होतं पोरां हाताबाहेर गेला होता. पण आता इलाज नव्हता कारण म्हातान्याचं बळ कमी पडत होतं, तर पोरां रगात सळसळत होतं.

यशोदेचं न ऐकता आपन पोरावरती जर चांगले संस्कार केलं असंतं तर पोरां आज या लेवलला आलंच नसंत याची सल त्याच्या मनात सारखी डाचत होती. एवढ्यात जवळनंच जाणाऱ्या मार्गावरुन मालगाडीचा धाड-धाड आवाज येऊ लागला आणि त्या आवाजानं शिवराम आपल्या तंद्रीतून जागा झाला. मालगाडी आली तशी निघून गेली. पण तिचा आवाज शिवरामच्या कानांत घुमू लागला. त्याची छाती धडधडू लागली असल्याचा त्याला भास झाला.

तो तेथून उठला आणि छपरात जाऊन शिंक्यात ठेवलेलं भाकरीचं टोपलं त्यांन खाली घेतलं कारण आता दुपारचे बारा-सव्वा बाराचा टायम झाला होता. त्याला भूक लागलेली होती. तो वाट घेऊन जेवायला बसला.

आणि इतक्यात रामदासाची स्वारी रस्त्याने झोकांडया खात-खात घराच्या दिशेन येत होती. बापाला पहाताच त्याच्या मस्तकाची शिर ताड-ताड उडू लागली. त्यांन लाथंनंच बापापुढचं ताट उधळून लावलं आणि आपल्याला पैसे हवेत म्हणून त्याच्या पुढ्यात लकडा सुरु केला. शिवराम कडे पैसे नसल्यामुळे तो तरी कोटून देणार? बाप पैसे देत नाय म्हणून तो बापाला मारण्यास धावू सुरुवात केली. तेव्हा शेजारच्या परश्या धावून आला व त्याच्यावरच डाफरु लागला.

आज एकादशी. गावात विठोबाच्या देवळात भजनाचा कार्यक्रम होता. शिवरामदेखील नेहमी प्रमाणंच झाला होता. पण त्याचं मन नेहमी प्रमाणं भजनात रंगत नव्हतं. डोऱ्यात सकाळी झालेल्या घटनेच्या विचारांनी तो दुसरीकडंच भरकटत होता.

‘रूप पहाता लोचनी! सुख झाले हो साजनी!'

अभंग मात्र ठेक्यात चालला होता. परंतु त्याच्या भंगलेल्या मनात त्याची बायको आणि पोरगा रामा यांची विदूप, किळसवाणी अशी रूपं त्याला दिसत होती. ते पाहून त्याचे डोळे आगीनं भडकतायत असं त्याला वाटू भरभरून हाय असं त्याला वाटत होतं. साडेबाराच्या सुमारास भजनाचा कार्यक्रम भैरवी होऊन एकदाचा संपला. आणि विषणु मनाने बसलेला शिवराम ताडदिशी उठला. राम्या असणार याची त्याला खात्री झाली होती. त्याच्या

बद्दलच काय, पण त्याच्या स्वतःच्या संसाराबद्दलच त्याच्या मनात घृणा निर्माण झाली होती.

मळ्याच्या दिशेन शिवराम चालला होता. रात्रीची भेसूर शांतता पसरली होती. रातकिड्यांची किरकिर काळजात चर्र करीत होती. वारं मंद होऊन पडलं होतं. चंद्राची कोर मावळतीच्या दिशेन पळत होती. झाडावरची पानांची सळसळ बंद होती. पक्षी आपापल्या घरट्यात विसावा घेत होते.

.... रात्रीचा विसावा घेऊन दुसऱ्या दिवसासाठी सूर्यवर येऊ लागला होता. आज त्याची तीव्रता खूप भासत होती. गावात शिवराम पंत गेल्याची बातमी लोकांच्या कानावर हां-हां म्हणता येऊन थडकली होती.

शिवरामला पहाण्यासाठी लोक त्याच्या मळ्याकडे जात होते. त्याचं पिरीत मळ्याच्या छपराव पडलं होतं. कपाशीवर मारण्याचं औषध पिल्यामुळं त्याचा वास आणखीनच उग्र वाटत होता. बाया-बापडी नाकावास तोंडाला पदर लावीत होती. पण त्याचं मंद मात्र निश्चल होतं, शांत होतं. चेहन्यावर वेगळंच स्मित लकाकत होतं. कारण या समद्या गोषीतून तो सुटला होता. शिवरामनं आत्महत्या केली होती. लोकं काहीबाही बोलत होती. परंतु नोंद कोतवालानं या बातमीची दखल घेतली होती. तेव्हा आपल्या माणसाचं मात्र केलीच नाय. कारण मागून कुणाला तरास नंग हाच उद्देश होता. आणि गावाला तर पोलीस स्टेशनचा पत्राच नव्हता. तेव्हा या सगळ्याच गोषी सोप्या झाल्या होत्या.

“पोरावर चांगलं संस्कार झालं नाहीत” लोक म्हणत होते. आईनं लेकरावर मापापेक्षा जास्त माया केली होती. आता रामाला स्वतःच्या कष्टानंच जगावं लागणार होतं. नियतीनं शिवरामचा बळी घेऊन त्याच्या प्रपंचाला वेगळंच वळण लावलं होतं. नियती थोडा वेळ थांबल्याचा भास झाला. पण सृष्टीचं चक्र मात्र नेहमी सारखंच सुरु होतं. ‘चूक कुणाची?’ हा प्रश्न मात्र सर्वाच्या मनात सारखा घोळत होता.



### त्याच्या

- १) त्रुझ्या सौंदर्यावर भाळून  
भी चुकलो होतो आणि  
माझ्यावर भाळलेल्या एका  
प्रेमवेडीला मुकलो होतो.
- २) घरापासून दूर जाताना  
माझं मन हळहळतं, कारण  
तेव्हा आपल्या माणसाचं  
आपलेपण कळतं.
- ३) एक कळी उमलण्याचे  
स्पष्ट पाहत वाढली  
पण उमलण्या आधीच  
ती कुणीतरी तोडली.
- ४) माळावरच्या दगडावर  
शिल्पकाराची नजर गेली  
आणि मंदिरात माणसं त्याच्या  
दर्शनाला येऊ लागली.

समर भोईटे  
(द्वितीय वर्ष विज्ञान)

पूर्वी होता एक पेट्टा अंगार  
होते ज्वलंत निखारे,

होती एक ज्वाला, नाव तिचे लक्ष्मीबाई  
बरोबरीला तात्या, पेशवे मंगल पांडेही  
होते सर्व आमच्यातलेच शिलेदार  
ती पडली ठिणगी, भडकला स्वातंत्र्यज्ञ.

अनेक समिधा वाहून मिळवला प्रसाद स्वातंत्र्याचा  
नंतर यज्ञावर आभाळको सळले भृष्णचाराचे, स्वार्थाचे.  
विज्ञला तो अग्नी, उरली फक्त राख.  
अजूनही वाटते निघेल त्यातून नवा ‘फिनिक्स’  
पण फक्त एकच उपयोग त्या राखेचा  
राज्यकर्त्याच्या पोळ्या भाजून झाल्यावर  
दर पाच वर्षांनी लोकशाहीचा तवा घासण्याचा.

अभिजित भिसे  
(द्वितीय वर्ष विज्ञान)

### ‘एक उत्कट इच्छा’

कल्पनेच्या सोबतीन आठवणीच्या कोषातून  
डोकावतयं हळूवारपणे विसरलेलं बालपण  
फिकटसे सुंदर नि फारच विचित्र  
असे रंगवलेले भविष्याचे चित्र  
गोड गोंडस निरागस चेहरा  
ज्यावर पडल्या नव्हत्या सुख-दुःखाच्या मोहरा ॥१॥

लहानसं दुःख छोटसं हसू  
नेहमीच गंमत नि कधीतरी रुसू  
बाबांच्या मांडीवर झोपायचे खुशीत  
सारेच जग सामावले आईच्या कुशीत  
जग म्हणजे घरकुल चार सोबतीचा चौकोन  
या पलीकडे जगाला ओळखतंय कोण? ॥२॥

घरात होता रुबाब मैत्रिणीत ऐट  
सारेच होते चांगले कुपीच नव्हते वाईट  
जग होतं तसं आहे, मीही तशीच आहे  
आता फक्त एकमेकांकडे बघण्याचा  
दृष्टिकोन बदललाय ॥३॥

### ग्रीष्म

मृगनयनातील फुलपाखरांची थकली रे चंचलता  
अधीर पावलांनी घेतली माघार आता  
भाष्वावरच्या खट्याळ बटांनी  
वाट तुळी पाहिली  
करकमलातील कंकणांनी किन् किन् थांबवली  
छुम छुमणाऱ्या पेंजणांनी अबोला आता धरला,  
केशसंभारातील बुकळीचा गजरा पण कोमेजला  
तुळ्या जाण्याने बघ ग्रीष्म मजवर कोसळ्या  
येतेवेळी घेऊन ये श्रावणाला सोबतीला  
सौ. छाया जगताप (गवळी) तृतीय वर्ष कला

जग आत्ताही चांगलेच आहे करु नये त्याचा त्राण  
म्हणून आत्ता सुधारायला आहे खूप जागा  
वाटते बघून जगातले दुःख हे सारे  
म्हातारपणी जन्मावे नि बालपणात जावे  
एक वेडी एक उत्कट अशी आशा  
बालपणातच शिकावी जीवनाची भाषा ॥४॥

कु. प्रज्वला खंडाळे  
(तृतीय वर्ष कला)

### वेदा

लोक मला हसून म्हणतात;  
मी आहे अगदीच खुळा ॥ १ ॥

कारण मी स्वार्थासाठी  
नाही कापीत कुणाचा गळा

आणखी लोक असेही म्हणतात  
मी आहे मुलखाचा वेडा ॥ २ ॥

कारण खोट्या वचनांचे  
नाही करीत मी समारंभ

काही लोक असेही म्हणतात  
मी आहे अगदीच वेडा ॥ ३ ॥

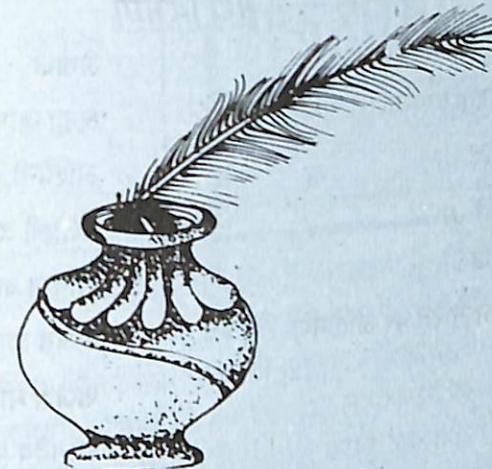
कारण कुणाचे रक्त शोषून  
मी नाही बांधला वाडा

सर्व लोक पाहून म्हणतात  
मी आहे सर्वात अडाणी ॥ ४ ॥

कारण कधीच असत्याला  
मी नाही विकली वाणी

प्रमोद पाटसकर (प्रथम वर्ष कला)

अनेकान्त १९९४ - ६५



साहित्य और समाज के संबंध को लेकर हमारे यहाँ  
बहुत हळामा होता रहा है। साहित्य से बदाबद यह उम्मीद की  
जाती है कि वह समाज के प्रति सजग हो, उसके समाजिक  
चेतना और जिम्मेदारी हो, समाज की साहित्य के प्रति  
जिम्मेदारी का कोई जिक्र नहीं करता। यह भी प्रायः भुला दिया  
जाता है कि आप अलै समाजिक संपदा है, उसे जीवन सक्रिय  
और सजनात्मक बनाये दखने का काम साहित्य करता है जो  
पर्याप्त समाजिक कर्म है, जबकि और जिम्मेदार

- श्री. अशोक वाजपेयी

(८८ क्री. अ. मराठी साहित्य समेलन में उनके  
उद्घाटन भाषण से उद्धृत)

### हिन्दी विभाग

विभागीय संपादक - प्रा. महावीर कंडारकर

\*\*\*\*\*

## अंतर्गत

### गद्य विभाग

पृष्ठांक	लेखक	गद्य विभाग
५७	श्रद्धा जाधव	१) दहेज़ : एक सामाजिक कलंक
५९	अश्विनी पोटे	२) राजघाट पर एक दिन
६०	वैशाली दरेकर	३) जीवन जीने की कला
६१	सोपान कदम	४) साहित्य और समाज
६२	राजेंद्र कांबळे	५) विदेशी कंपनियों का भारत पर आक्रमण
६३	राजेश माने	६) आदर्शहीन समाज
६४	ज्ञानदेव फुले	७) साहित्यकार कवीर

### पद्य विभाग

५८	रमेश टकले	पद्य विभाग
५८	कु. रत्नमाला लोंडे	
६४	निलेश कुंभार	
६४	रणधीरकुमार मोरे	
६६	अनिल जाधव	

“लूसी कॉन्ट्रन च मेस”  
(तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय परिसर)

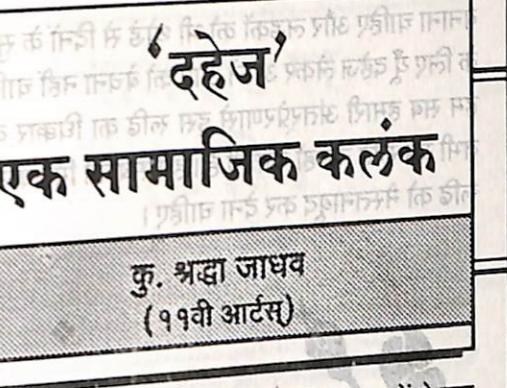
तर्फे

\* हार्दिक शुभेच्छा \*

- ठळक वैशिष्ट्ये -

- १) तत्पर व विनम्र सेवा
- २) उत्तम खाद्यपदार्थ व भोजन
- ३) चालू शैक्षणिक वर्षपासून भोजनाची मेसची देखील सोय

श्री मिश्रीलाल बोथरा - संचालक



आजकल लड़कियाँ भी पढ़ने में लड़कों से कम नहीं हैं। वैसे देखा जाय तो माँ बाप का यह कर्तव्य है कि वे अपनी औलाद को स्वयं अपने पाँव पर खड़ा करें। वह लड़की हो या लड़का उसे समाज में किसी पर निर्भर रहना ना पડे। वे अपने आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए जिंदगी को सँवारने में सफल हों। और यह सफलता पाने के लिए उनमें जो काबिलियत चाहिए, वह माँ बाप ही अपनी औलाद में पैदा कर सकते हैं। इसलिए उन्हें अपने कर्तव्य जो यूँ किसी के सर पे थोपना नहीं चाहिए।

शादी एक प्यार का बंधन होता है, जिसमें दो जिंदगियाँ जुड़कर एक हो जाती हैं। वे अपने हर सुख दुख में साथ निभाने की अग्निदेवता के समक्ष कसम लेते हैं। इस पवित्र बंधन को धन और अन्य चीजोंपर निर्भर नहीं करना चाहिए। अब तो यह प्रथा समाज में जादा प्रस्थापित हो चुकी है। यह प्रथा समाज के लिए उचित नहीं है। लड़की के माँ बापको लड़की को अपना आशियाना खुद बनाने के लिए उसे मौका देना चाहिए। यूँ दहेज देकर उसे पराधीन नहीं करना चाहिए।

दहेज की रुढ़ि के खिलाफ बहुत सी संघटनाएँ बनाई जा चुकी हैं। इस रुढ़ि को चाहे जितनी भी संघटनाएँ कार्यरत रहकर खत्म करना चाहें, लेकिन जब तक हमारा मन इस रुढ़ि के खिलाफ नहीं हो जाता, हम स्वयंस्फूर्ति से इस रुढ़ि का धिक्कार नहीं करते तब तक यह रुढ़ि खत्म नहीं हो सकती। शादी के इस पवित्र बंधन को यूँ दहेज के नाम से कलंकित नहीं करना चाहिए। आजकल की लड़कियों को भी इस प्रथा के खिलाफ होने के लिए अपना आत्मबल

॥ किसी भी राष्ट्र का परिवर्य उसके अनुशासनबद्ध नागरिकोंसे मिल जाता है ॥

बनाना चाहिए और लड़कों को भी थोड़े से दिनों के सुकून के लिए यूँ दहेज लेकर अपने आप को बेचना नहीं चाहिए। हम सब हमारी अंतर्रप्रेरणासे इस रुढ़ि का धिक्कार करेंगे तभी यह रुढ़ि नष्ट हो सकती है। हम सब को मिलकर इस रुढ़ि को नेस्तनाबूद कर देना चाहिए।



## नाराज

ऐ जिंदगी मुझे क्या मालूम तू भी मुझपे टूट पड़ेगी,  
अपनी ही मौतके लिए मुझे जिम्मेदार बना देगी।  
ऐ बगिया मुझे क्या मालूम तू भी मुझे नाराज कर देगी,  
फूलके बदले कॉटे दिखा देगी।

जिंदगीके हर कदम पर चाहा मैंने तुम्हें,  
मुझे क्या मालूम अपनीही आँखोंसे  
खून बहाना पड़ेगा मुझे  
खून की हर बूंदपर नाम लिखा था तेरा,  
मगर मुझे क्या मालूम अधूरा रह जायेगा सपना मेरा।  
जिंदगीके किनारेपे खड़ा रह चिलाकर पुकारा तुम्हें,  
मगर मुझे क्या मालूम अपनी ही आवाज  
सुननी पड़ेगी मुझे।  
चलते चलते सालों बीत गये  
मगर जिंदगीके रिश्ते नाराज रह गये।

श्री. रमेश टकले (द्वितीय वर्ष कला)

इन सब कारणों का विचार करते हुए 'दहेज एक सामाजिक कलंक' ही सिद्ध होता है। आओ हम सब मिलकर इस कलंक को मिटानेकी प्रतिज्ञा करें।

## जिंदगी

हमारी जिंदगी तो एक हरियाली की तरह है,  
वह कभी भी मुरझाती है।

हमारी जिंदगी में तो,  
सुख कम और दुःख ज्यादा।

हमारी जिंदगी में आये हुए संकटोंसे हमें  
विचार पूर्वक सामना करना चाहिए।

जिंदगी कितनीभी कडवी हो मगर हमें तो,  
उसे मीठा मानकर पीना चाहिए।

जिंदगी में हमें बहुत कुछ मिलता है,  
मगर हमें अच्छा प्यार नहीं मिलता।

जिंदगी ऐसी है, कि हमें जीना सिखाती है,  
मगर मौत की तरफ कब मुड जायेगी  
किसीको पता नहीं होता।  
सचमुच कितनी अजीब है हमारी जिंदगी!

कु. रत्नमाला लोंड  
(द्वितीय वर्ष कला)



## राजधान पर एक दिन

कु. अश्विनी पोटे  
(१२वीं विज्ञान)

जाने के बाद मैं राजधानी दिल्ली की सैर करने के लिए राजधान ! हमारे देश के महान् दिवंगत नेताओं का समाधिस्थल, जहाँ आज वे सभी चिरनिद्रा ले रहे हैं, हमेशा के लिए सो गए हैं। राजधान का शांत, प्रसन्न वातावरण मुझे उल्लसित कर रहा था। मैं उन के बारे में सोचने लगी।

म. गांधी, बापू ! हमारे राष्ट्रपिता ! उन्होंने जीवनभर सत्य और अहिंसा के मूल्यों को अपनाकर लोगोंको अपने हक के लिए लड़ने को प्रेरित किया। उन्होंने न जाने कितने आंदोलन किए, कितनीही बार कारावास की सजा काटी। उनके इन तत्त्वों ने हिंसक अंग्रेजों को भी हिलाकर रख दिया। उनकी मेहनत रंग लायी और १५ अगस्त १९४७ को भारत देश स्वतंत्र हुआ। इस महान नेता की नथूराम गोडसे द्वारा गोली चलाकर हत्या की गयी।

पंडित नेहरू बच्चों के चाचाजी और स्वतंत्र भारत देश की आजादी के लिए अर्पित कर दिया था। भारत के स्वतंत्र होने के बाद, अंग्रेजों द्वारा शोषित हिंदुस्थान के नवनिर्माण का कठिन कार्य नेहरूजीने किया। भारत माँ के इस सप्तू के बाद भी भारत की मिट्टी में मिल जाना पसंद किया।

इंदिरा गांधी-भारतकी पहली महिला प्रधानमंत्री और मेरी प्रिया नेता। एक महिला होकर भी उसने सारे विश्व

को अपने कर्तृत्व की चमक दिखादी। उसने औद्योगिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में भारत की प्रशंसनीय प्रगती की। अपवस्था का पहला स्फोट भी उन्होंने शांति के लिए ही किया। भारत में पंचवार्षिक योजनाओं का अवलंब किया तथा देश की उन्नति के लिए ठोस कदम उठाये। उन्होंने अपने आखरी भाषण में कहा था कि मेरे खून का एक-एक कतरा देश के काम आएगा। उन्होंने अपने बोल सच्चे कर दिखाए। इस हीरे की भी हत्या ही की गयी।

राजीव गांधी-भारत के सबसे कम आयु के प्रधानमंत्री। वे अपने नाना और माँ के आदर्श पर चलकर आखिर तक अपने देश के लिए सदा कर्तृत थे। गरीबों तथा पीड़ितों के प्रति उन्हें विशेष आस्था थी। उन्होंने भी भारत की उल्लेखनीय प्रगति की। उनकी बड़ी अमानुष ढंग से मानवी बम द्वारा हत्या की गयी। ये और ऐसे अनेक नेताओं की समाधियाँ वहाँ हैं। मैं सोचने लगी; ये अबोल के पहले प्रधानमंत्री। नेहरूजी ने अपना तन, मन और धन देश की आजादी के लिए अर्पित कर दिया था। भारत के स्वतंत्र होने के बाद, अंग्रेजों द्वारा शोषित हिंदुस्थान के नवनिर्माण का कठिन कार्य नेहरूजीने किया। भारत माँ के इस सप्तू के बाद भी भारत की मिट्टी में मिल जाना पसंद किया।

आज देश में जो होड़ा-होड़ी उन्हें लगता होगा कि आत्माएँ कितनी दुखी हो रही होंगी! उन्हें लगता होगा कि हमारा बलिदान व्यर्थ जा रहा है। इसलिए हमें संकल्प करना चाहिए कि उनके अधूरे कार्य को हम पूरा करें।



## जीवन की कला

कु. वैशाली दरेकर  
(प्रथम वर्ष कला)

जीवन यह एक अनमोल निधि है। यदि आप किसी कारणवश उस निधि का समुचित लाभ या आनंद नहीं उठा सके, या नहीं उठा पाते, तो आपका यह पहला कर्तव्य है कि आप अपनी समस्या क्या है इसे भली भाँति समझें और अपने मुश्किलों को दूर करने का उपाय सोचें और अपनी वर्तमान परिस्थिति का भी अच्छी तरह विश्लेषण करें। अगर आप कल्पित कष्टों से मन को दुःखी बनाये रहते हैं तो आप जीवन का रस नहीं ले सकते।

जीवन जीते समय आपको हमेशा अनेक समस्याओंका सामना करना पड़ता है, इसीलिए आप समस्यासे डरिए मत। उसकी शिकायत भी मत कीजिए। बल्कि उस समस्या के साथ जूझने के लिए आप तैयार हो जाइए।

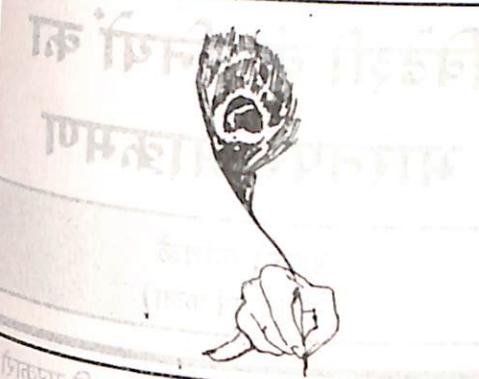
जब मनुष्य अपनी परिस्थिति और वर्तमान समस्या को भलीभाँति समझकर मुश्किलों को दूर करने का उपाय सोचे, तभी वह जीवन का सच्चा लाभ और आनंद प्राप्त कर सकता है। परिस्थितियों से पराजित होने से उसका काम नहीं चल सकता। मनुष्य अपने जीवन को प्रसन्न और रसमयतभी बना सकता है जब वह परिस्थितियोंका सामना बड़ी सोच समझकर करता है। वह अपने वास्तविक तथा कल्पित

कष्टोंसे अपने और दूसरों के मन को भी दुःखी नहीं होने देता।

हमें यह जानना चाहिए कि जीवन में हमें हर समस्या का सामना करना पड़ता है। उस वक्त समस्याका निराकरण शिकायत करने से या उस समस्या से डरने से नहीं होता। उन समस्याओंका निराकरण तभी होता है जब आप परिस्थितियोंका बेधड़क सामना करते हैं और अपना जीवन जीते हैं।

हमें यह सोचना चाहिए कि हमें यह नरजन्म बहुत प्रयासोंके बाद मिला है। हमें अच्छा कार्य करते हुए इस देह का सार्थक करना चाहिए।

अगर आप अच्छा आनंदी जीवन जीना चाहते हैं तो पहले अपना दिल बड़ा और प्रेमसे भरा हुआ रखना चाहिए। दूसरोंके प्रति धृणा नहीं होनी चाहिए। अगर आप आपसमें भाई-भाईकी तरह और धृणारहित भावसे व्यवहार करेंगे तो आप अपना, अपने साथियोंका, साथियोंके साथ समाज का, समाज के साथ देश का और देश के साथ अपने पूरे जगत् का मान बढ़ायेंगे। इसीलिए हम यह निश्चय करते हैं कि अगर हम एक अच्छा, आनंदी, सुखमय जीवन जीना चाहते हैं तो, हम सारे भेद-भाव मिटाकर एक नयी उम्मा लेकर नया विचार लेकर जीवन जिएँ।



## साहित्य और समाज

रविकिरण कदम  
(एम. ए. हिंदी द्वितीय वर्ष)

हथकंडे और अंग्रेजी कानून के ठेकेदार बने थे। वे अंग्रेजों की सहायता से जुल्म करते थे। उस समय का सारा समाज अन्याय अत्याचार की चक्की में पिसता रहा। गरीब किसानों से टैक्स लिए जाते थे। कभी कभी वे लोग किसानों को कर्ज देकर चंगुल में फँसाकर उनकी जमीन हड्डप लेते थे। उस समय के साहित्यकारों ने शासकों से मुकाबला करने का प्रयास किया और उनका आवेश साहित्य में उतरा। अपने देखिलाकर जनआंदोलन और जनजागृति करने का प्रयास दिखलाकर जनआंदोलन और जनजागृति करने का प्रयास किया। इसके साथ साथ लोगों में राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति और देशप्रेम जगाने का प्रयास साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से किया।

स्वतंत्रता के बाद भी अन्याय-अत्याचार का बोलबाला कम नहीं हुआ। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि बातों को लेकर समस्या और विषमता बढ़ती गयी। स्वतंत्रता तो मिल गयी लेकिन समस्यालूपी आग की लपटें और बढ़ती गयीं और साहित्य भी उसका पीछा करता रहा। आज समाज में अकाल, दारिद्र्य, बेकारी, महामारी, अनुसार और पीढ़ी के अनुसार विभिन्न मोड़ मिलते हैं और साहित्य में काफी बदलाव होता है। हर पीढ़ी की अपनी विषय विवाह, बालविवाह आदि कई समस्याएँ हैं। साहित्यकार ने इन सभी समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया। साहित्य समय की उपज होने के कारण वह समाज से नये नये प्रभाव ग्रहण करता आया। आज और समाज का रिश्ता सदियों से चलता आया है। आज ऐसे अनेक मौलिक ग्रथ निर्माण हुए हैं, जो सुझाव और भेदभाव के तौर तरीके बतलाते हैं। महाभारत, कुरान, वेद, पंचतंत्र, हितोपदेश, बायबल जैसे धर्मग्रंथों की रचना मार्गदर्शन के तौर पर की है।

## विदेशी कम्पनियों का भारतपर आक्रमण

राजेंद्र कांबळे  
(तृतीय वर्ष कला)

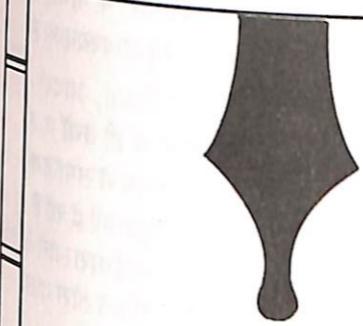
आप जानते हैं कि उपभोक्तावादी विचारधारा ने भारतपर कब्जा कर लिया है। विकास का अभिप्राय बस अधिक से अधिक भोगसंग्रह करना हो गया है जिसके कारण चारों तरफ तनाव, हिंसा, भ्रष्टाचार व भय फैल गया है। भोगवाद को बढ़ाने में विदेशी कम्पनियों महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे भ्रामक विज्ञापन व अन्य प्रचार के माध्यमों से एक नई विलासितापूर्ण जीवन प्रणाली को जन्म दे रही हैं और जो लूट, शोषण व विनाशपर टिकी है। इससे बढ़ावा मिल रहा है, वहीं दूसरी तरफ आनेवाली पीढ़ी श्रम, सादगी, सेवा व सहयोग पर टिकी मानवीय संस्कृति को भूलती जा रही है।

ईस्ट इंडिया कंपनी व उसके इतिहास को अभी आप भूले नहीं कि किस प्रकार सोने की चिड़िया को कंगाल व इंग्लैंड को अमीर बनाया गया। आज भी विकास के नाम पर भारत में अनेक विदेशी कम्पनियों को व्यापार की छूट दी जा रही है। उदाहरण के लिए - प्रॉक्टर अंड गैबल, हिंदुस्थान लिहर, कोका कोला, लेहर पेप्सी, फिलिप्स, सोनी अदि। डंकेल प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करके हर क्षेत्र में आने का निमंत्रण दिया है और देश के हर क्षेत्र में किस प्रकार यह छा रही है इसे आप देख रहे हैं। उदा. के लिए पेप्सी व कोका कोला के आने से भारत के सारे पेय पदार्थ समाप्त हो गये हैं।

इसके साथ भारत सरकार की अदूरदर्शी और दुराग्रही नीति की चपेट में अब विधि क्षेत्र आ गया है, जहाँ

जपान, इंडोनेशिया यहाँ तक कि सिंगापुर की सरकारों ने भी अपने देश के सभी क्षेत्रों में आँख मूँदकर इसका समर्थन नहीं किया है, वहाँ पर हमारी सरकारने इस तरीके को स्वीकार कर लिया है। दरअसल भारतीय उद्योग व्यवस्था के अलावा हमारे देश का सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन भी निकृष्ट कोटि के विखंडन और प्रदूषण के खतरे में पड़ा है। इतनी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों भारत में होकर भी अपनी सरकार ने दो अमरीकी कानूनी फर्मों को भारत में अपने दफ्तर खोलने की अनुमति दी है। इसी तरह और भी छ: विदेशी कानूनी फर्में अनुमति की प्रतीक्षा कर रही हैं। राष्ट्र की आर्थिक आजादी को दाँवपर लगाकर बहुराष्ट्रीय निगमों को बढ़ावा देने की भारत सरकार की नासमझी की नीतिपर ध्यान देने की जरूरत है।

पिछले कई वर्षों से आजादी बचाओ आन्दोलन, स्वदेशी बचाओ आन्दोलन, स्वदेशी जागरण मंच व समाजवादी अभियान कुछ वामपंथी दलों व अन्य जागरूक व्यक्तियों द्वारा लोगों को विदेशी कम्पनियों से होनेवाली दुर्गति से अवगत कराया जा रहा है और कितना रुपया मुनाफे के रूप में प्रति वर्ष विदेशों में जा रहा है, इसकी पूरी जानकारी दी है। इसमें देशवासियों से अपील की गई है कि जानकारी दी है। इसमें देशवासियों के पैसा देश में ही रहे, वे स्वदेशी ही खरीदें, ताकि देश का पैसा देश में ही रहे, रोजगार बढ़े और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा होनेवाली लूट बंद हो।



## आदर्शहीन समाज

राजेश माने  
(एम. ए. हिंदी द्वितीय वर्ष)

आज का युग आधुनिक युग, यंत्रयुग, प्रगतियुग, भौतिक्युग और विकास का युग के नामों से जाना जाता है। आज समाज में परस्पर आत्मीयता, स्नेह, भाईचारा, सहदेश्यता आदि गुणों का लोप होता जा रहा है। दिन ब दिन आज लोग अतीत का आदर्श भूल गये हैं। ऐसी स्थिति में समाज आदर्शहीन, पौरुषहीन सा प्रतीत होने लगा है। आज लोग अतीत का आदर्श जगाने और जताने की आवश्यकता महसूस हो रही है। हर व्यक्ति भौतिक क्षणिक सुख के पीछे ढौड़ रहा है। धन, संपत्ति और वैभव कमाने के लालच में अधर्म और असत्य जैसे वाममार्गों का अनुसरण कर रहा है। इसीकारण वह दिन ब दिन लोभी बनता जा रहा है और इसी कारण समाज विकृत बनने लगा है। व्यक्ति अतीत में जो लोकतंत्रकरक, समाज सुधारक व्यक्तिमत्व उनके गुण आदि का अनुसरण, अनुगमन करने की नितांत आवश्यकता है। तभी इस विकृत समाज में व्यापार परिवर्तन लाना कुछ हद तक संभव होगा। आज व्यापार सामने छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे ऐतिहासिक, आवश्यक है। जब छत्रपति के सामने एक सुंदर नारी को लाया गया तब उन्होंने उसका सम्मान करके उसको उपहार देकर लौटाया। यही आदर्श आज के समाज के लिए आवश्यक है। जब अस्पृश्य लोग पानी के लिए दर दर की ठोकरें खाने लगे तब म.फुले ने अपना कुओं उनके लिए खुला करके पानी भरने की अनुमति दे दी। समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जो कि उपेक्षित हैं। उनके प्रति आत्मीयता

हम शिवाजी महाराज की जयंती मनाते हैं और वह भी मनोरंजन एवं समय बिताने के लिए परंपरा अथवा रस्म के लिए करते हैं। लेकिन उनमें होनेवाले गुण, नारी के प्रति आदरभाव संघटन कौशल, लोकतंत्र का आदर्श हम भूलते हैं। जब तक हम उनके गुणों को अपनाते नहीं तब तक उनकी जयंती मनाने का प्रयोजन सफल नहीं हो सकता।

आज नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण भी बदल गया है। नारी को भोग, विलास का साधन समझकर उसकी तरफ देखते हैं। लेकिन वह एक भारतीय कुलीन नारी है, वह एक माता है, वात्सल्य है ऐसी दृष्टि से उसकी तरफ देखना आवश्यक है। जब छत्रपति के सामने एक सुंदर नारी को लाया गया तब उन्होंने उसका सम्मान करके उसको उपहार देकर लौटाया। यही आदर्श आज के समाज के लिए आवश्यक है। जब अस्पृश्य लोग पानी के लिए दर दर की ठोकरें खाने लगे तब म.फुले ने अपना कुओं उनके लिए खुला करके पानी भरने की अनुमति दे दी। समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जो कि उपेक्षित हैं। उनके प्रति आत्मीयता

दिखलाने की जरूरत है। पदवलित, पौडित, अस्पृश्य लोगों के प्रति सहदयता के साथ व्यवहार करने की, विधवा और विकलांग लोगों के प्रति सहानुभूति दिखलाने की आवश्यकता है।

आज पति-पत्नी, माँ-बाप, भाई-भाई, भाई-बहन आदि के संबंध विगड़ते जा रहे हैं। पति-पत्नी के संबंध में राम-सीता का, भाई-भाई के संबंध में राम-लक्ष्मण का आदर्श समाज के सम्मुख रखना अनिवार्य है और इसके लिए लोकरक्षक राम-कृष्ण की, शिवाजी महाराज जैसे ऐतिहासिक पुरुषों की, सामाजिक सुधारणा करने

### मेरी जिंदगी

न हम बुरे हैं न वह बुरे हैं,  
अगर कोई बुरा है, तो वह है जमाना  
लेकिन मुझे इसका दुख नहीं कि बदल गया जमाना .....  
मेरे यार, मेरी जिंदगी है तुझसे, कहीं तू  
बदल न जाना ... जब प्यार किसी का टूटता है  
तब हाल दिल का बहुत बुरा होता है।

घाव दिल का भर देंगे, टूटा दिल भी हम जोड़ देंगे  
लेकिन बन के रहेंगे साथी सदा, हम होंगे न कभी जुदा।

मेरे यार, मेरी जिंदगी है तुझसे, कहीं तू  
कहीं तू बदल न जाना ...

मेरी जिंदगी तुम्हारे प्यार पे कुर्बान हो।

मैं सर उठाके जी सकूं, मेरी मौत में भी जान हो।

प्यार करके कभी, प्यार से बिछड़े न कोई।

उजड़ तजो प्यार में उजड़ा है कोई, वैसे न उजड़े हमन्

कहीं तू बदल न जाना

निलेश कुम्भार  
(तृतीय वर्ष कला)

॥ अहिंसा निर्वल और उच्चोक्त का नहीं, थीर का धर्म है ॥

वाले तिलक, आगरकर, गोखले, आंबेडकर, म. गांधी, म. फुले जैसे समाज सुधारकों के आदर्श की आवश्यकता है।

समाज की विकृतता, पौरुषहीनता, आदर्श-हीनता दूर करने का प्रयास थोड़ी मात्रा में ही क्यों न हो साहित्यकार कर रहे हैं। वे साहित्य के माध्यम से समाज को कुछ उपदेश, संदेश, सुधारात्मक कोई सूचनाएँ दे रहे हैं। इसलिए लोगों में आत्मीयता, सहदयता, भाईचारालाने के कार्य में साहित्यकार योगदान दे रहे हैं। लेकिन ठोस कार्य उनको हाथों से अब तक नहीं हुआ है।

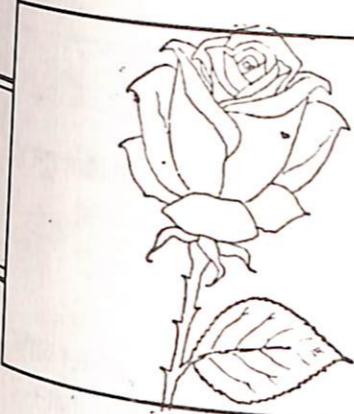
### रूप देता

रूप तेरा साज तेरा प्रातः काल की झलक तेरी  
कह रही है मेरी कहानी जिंदगी की रेखा पर  
होगी मधुर बरसात तेरी।

सूखे हाथों से, कमल से  
एक मीठी नजर से आज खुशबू आ रही है  
एक मीठी सी बात तेरी चाह ली मन में मिलन की  
खिलेंगी कलियाँ चमन में और बहारें कह रही हैं  
बात दिल की आज तेरी।

आज उतरेगी धरा पर चाँदनी बारात तेरी  
रूप तेरा साज तेरा प्रातः काल की झलक तेरी  
रणधीर कुमार मोरे (तृतीय वर्ष कला)

मोको कहाँ ढूँढे बन्दे मैं तो तेरे पास मैं



### साहित्यकार कवीर

ज्ञानदेव फुले  
(एम. ए. हिंदी द्वितीय वर्ष)

ईश्वर की प्राप्ति तो सहज नहीं होती। उसको अपनाने के लिए कुछ कड़ी साधना और भावविलीनता की जरूरत है। इतनाही नहीं, ईश्वर के साथ अपना सामीप्य प्रकट करने के लिए वे स्वयं को कुत्ता मानते हैं।

“कवीर कुत्ता राम का, सुतिया मेरा नाऊँ।  
गले राम की जेबड़ी, जित खिंचै तित जाऊँ।”

कवीर ने अपना सारा जीवन प्रभु के लिए समर्पित किया था। परमात्मा की भेंट पाने के लिए वे अपने जीवन में व्याकुल हो जाते थे। और जब प्रभु की प्राप्ति होती तो वे अपना आस्तित्व उसी में मिला देते।

“लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल,  
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल।”

कवीर के काल में हिन्दू और मुस्लिमों का जातिवाद काफी मात्रा में उठ खड़ा हुआ था। हिन्दू और मुस्लिम अपने अपने आराध्य की पूजा करते थे। इसीकारण दो जातियों में हमेशा के लिए झगड़े का वातावरण बनता था। तब कवीर ने इन जनों के लिए एक विशाल दृष्टि प्रदान की। और बताया कि राम और रहीम एक ही परमात्मा के दो नाम हैं। नमाज और पूजा एक है जैसे,

गहना एक कनक से गढ़ना, इनिमहँ भाव न दूजा।  
कहन-सुनन को दुई करि थापिन, इक नमाज इक पूजा॥

इस तरह कवीर एक साहित्यकार, समाज सुधारक, संत आदि रूपों में साहित्य के क्षेत्र में नजर आते हैं।



तूने . . . .

प्यार के मंदिर में वादा मुझसे किया तूने।  
दिन में देखने का, सपना मुझे दिया तूने।  
जो गीत रचा मैंने, सुर में सजाया तूने।  
जो तस्वीर निकाली मैंने, हृदय में बसा ली तूने।  
जो दुख दिया मैंने, खुशी से सहा तूने।  
मेरे कड़वे बोल का उत्तर, विनीत बना दिया तूने।

जीवन की कँटीली राहपर, हरपल साथ दिया तूने।  
पाँव जब जब फिसला मेरा,  
सहारा अपनी बाँहोंसे दिया तूने।

अनिल जाधव  
(एम. एस्सी. पदार्थविज्ञान-२)

*With Best Compliments From -*

## VHS ELECTRONICS

❖ Manufacturer & Dealers In ❖  
Electronics, Physics, Analytical, Test & Measuring Equipments,  
Special Experimental Kits for Engineering Colleges,  
LASER Experiments, Nuclear Physics Experiments.  
Optical Set Ups, Fibre Optics Communication.

❖ Address ❖

24, Continental Industrial Estate,  
Behind Sangram Press, Kotthrud, Pune - 411 029.  
(Phone : 369834)

॥ अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं ॥

ANEKANT 1994-95



*Literature has so many functions to fulfil, the most important being to change the minds and hearts of people. If we want to make new beings, new human beings, it is necessary for us to give them right ideas and the zeal and the enthusiasm to implement those ideas. Today, what the world is suffering from is a kind of spiritual disintegration. People are losing faith, they are lost and live in a world of uncertainty. They do not know what to do, what is right or wrong. These things are found all round the world. It is not merely a phenomenon limited to our country. It is something which we find all over. In such circumstances, to endow people with faith, to give them some cause to live for and to die for is a great work and we expect our literary writers, to give them that kind of impulse, that kind of urge, make the feel that life is worth living and not merely to be thrown away.*

- Dr. S. Radhakrishnan

## ENGLISH SECTION

Editor - Prof. Tukaram Sawant

\*\*\*\*\*

## English Section Index

### PROSE

No.	Name	Writer	P.No.
1)	Gaint Metrewave Radio Telescope	-	67
2)	On Examinaions	D. H. Kale	70
3)	India's International Satellite Series - INSAT	-	72
4)	Service to man is Service to God	B. J. Chandankar	74
5)	Religion	Rupali Doshi	75
6)	The Greatness of Literature	-	77
7)	India Today	Miss. B. B. Khan Jayant Suryawanshi	79

### POETRY

1)	What I wish I can	Sharad Gadekar	69
2)	Cloudy Heart	-	71
3)	Loving Friends	Miss. A. R. Jadhavrao	71
4)	When Maharashtra Wept	S. S. Kadam	73
5)	God	N. M. Kadbane V. Y. Paithankar	76

❖ ❖ ❖ ❖

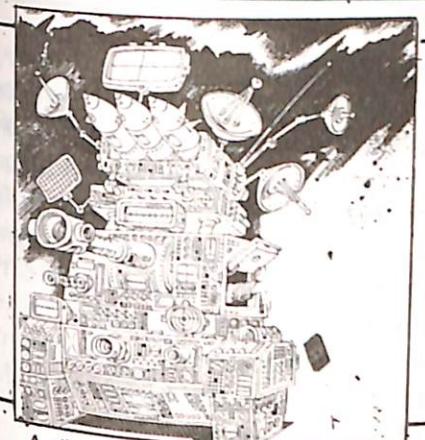
हार्दिक शुभेच्छा !

## अनेकान्त कॅन्टिन व मेस

त्रुङ्जाराम यतुर्घद महाविद्यालय परिसरातील मुलीच्या वसालिगुहात  
सर्व महिला व विद्यार्थी-नीसाठी असलेल्या "अनेकान्त कॅन्टिन व मेस" तके  
हार्दिक शुभेच्छा !

संचालिका - सौ. विमला शहा

ANEKANT ANEKANT ANEKANT ANEKANT 67 ANEKANT ANEKANT ANEKANT ANEKANT



## Giant Metrewave Radio Telescope

D. H. Kale  
(M.Sc.Phy.-I)

A dish antenna does not evoke much interest, going through the prosperous countryside around the industrial city of Pune. Actually, these are no ordinary dish antennas; they are part of a giant radio telescope that will be used to receive radio waves coming in from space which reveal unknown secrets of the early universe. Since this process will be used primarily to receive and process radio waves of 1 metre wave-length, it has been named the Giant Metrewave Radio Telescope or GMRT. The idea of building the GMRT arose in the mind of prof. Govind Swarup in India in his office at the National Centre for Radio Astrophysics located in the lush green campus of Poona University. Prof. Govind Swarup, the director of the GMRT, has chosen a place named "KHODAD", 80 km from Pune towards eastside. The place "KHODAD" is a small village but due to this project, now it has become very famous in Pune district. After completion it will be the largest radio telescope of its kind in the world, conceived, designed and built entirely by Indian scientists & engineers.

GMRT is a radio telescope, a device which receives radio waves from celestial objects & creates images using electronic systems. Since radio waves reaching earth from space are usually extremely weak, large dish antennas are used to collect to focus them, much as the mirror of a reflecting

optical telescope & focuses light waves from a distant star. Since radio waves cannot be seen, the image of an object emitting radio waves can only be produced electronically. The type & size of dish antenna of radio telescope depends on the wave-length of the radio waves that it is designed to receive. Shorter the wavelength, smaller the dish & more smooth is its surface. Dishes designed to receive metre wavelengths, such as the ones being used in GMRT, usually are large & have the reflecting surface made of open mesh-work. The signals received at the individual dish would be fed to a central computer facility for processing and image production.

In 1931, the American radio engineer, Karl Jansky discovered some unknown radio signal coming from celestial objects in space at low frequencies. After the second world war studies of metre wavelength were conducted but radio astronomers soon realised that there is considerable background radio noise at these wavelengths which was interfering with their studies. Earth's ionosphere, the electrically charged layer of the upper atmosphere, also distorts radio waves at these wavelengths. So this is shifted to lower wavelengths in decimetre & centimetre range where the interference

"In every struggle of men, who would submit to discipline are needed."

was minimum. "In India, man made radio interference is not yet a serious problem," said Prof. Swarup. There are hardly 100 wireless sets operating in the wavelength range of our interest in Pune now. For instance, in the plains where the GMRT is coming up winds can reach the speed upto 155 kmph at a height of 45m so the dishes have to be designed in such a manner that they withstand these high winds. Prof. Swarup & his team evolved the concept of designing the parabolic dishes, called stretched mesh attached to Rope Trusses or SMART. As the dishes are meant to collect radio waves mainly in the longer metre range and not those in the shorter centimetre and decimetre range, a very high precision finish for their reflecting surface is not required.

The 45 metre diameter parabolic dishes of the GMRT are not made of solid steel but of thin stainless steel wires stretched over parabolic frames form parabolic reflecting surfaces. The reflecting surfaces not only allow free passage wind of high velocity, but they also make the dishes lighter than conventional dish antennas. So there is no possibility of their bending under their own weight. The computer process the radio signals collected by the dishes to generate images digitally with the Centre for Development of Telematics (C-DOT). It is a parallel processor computer consisting of about 256 processing elements, each with 4 MB (megabyte) local memory. At present, a 16 element system is under operation.

On completion the GMRT will consist of thirty dish antennas. Each dish will be 45 metres in diameter, & will be mounted in such a way that it can turn in any direction to receive radio waves coming from a celestial source. The dishes will be set in a Y-shaped configuration. Each arm of the configuration

will be 14 km long having an array of six dishes. At the centre of the Y will be the remaining twelve dishes randomly placed with a maximum separation of about 1.1 Km between them. This type of configuration is similar to that of the Very Large Array (VLA) in New Mexico, USA. But the similarity ends here. GMRT will operate at six different wavelengths from about 20 cm to 8 meters, or frequencies between 38 MHZ<sup>10</sup> to 1420 MHZ respectively.

It will also have the capacity to produce distinct images of celestial objects which subtend an angle as 2 arc second at 1420 MHZ to 75 arc second at 38 MHZ. Where 1 arc second is 1/3600th of a degree.

The GMRT will conduct some important properties to test the General Theory of Relativity & detect gravity waves. According to the General Theory of Relativity, the very high gravity of a massive body can bend a ray of light or affect the rate of radio pulses passing by it. So by accurately timing the radio pulses coming from two pulsars, the effect of gravity of one or the other can be determined to test the Theory of Relativity. The theory also tells us that when two massive bodies are in an orbit around each other, they are likely to lose their kinetic energy & momentum in the form of gravity waves. So with the release of gravity waves, there will be a proportional decrease in their period.

The GMRT will be used to study metre wave emitting objects in our own milky way galaxy as well as other galaxies. Radio Waves coming from the sun, planets like saturn & Jupiter & some types of stars interact with highly energetic charged particles coming from the sun called "Solar Wind" & the magnetic field of the earth.

In the process they get weakened & produce a phenomenon called "Scintillation". Due to this, the nature of the solar wind & earth's ionosphere can be studied. Thus we will use only a part of GMRT for studies of the ionosphere & interplanetary scintillation of radio

waves, says Dr.A.P.Mitra, radiophysicist & Bhatnagar Fellow. Once GMRT becomes operational, the men behind the telescope would count in Prof. Swarup's efforts to place India in a frontline position in the field of radio astronomy.



### What I Wish, I Can

How I wish to contemplate and talk and mesmerise like Vivekananda !

How I wish to love innocently and purely like Juliet ! And be enlightened and enlighten like the Sun !

And be fragrant and spread fragrance like a flower !

I am trying, trying, still trying.  
How I wish to bear pain with fortitude like Nelson !

How I wish to be simple, honest & a patriot like Lal Bahadur Shastri !

How I wish to revolutionise knowledge like Newton !

How I wish to hold the torch of education to the poor like Karmaveer Bhaurao Patil !

I am trying, trying, still trying.  
How I wish to sing melodiously and enchant people like Lata Mangeshkar !

How I wish to be ambitious and succeed like Napoleon !

How I wish to be blind but see with the eye of Imagination like Milton !

How I wish to write surely and forcefully and morally, like Shakespeare !

I am trying, trying, still trying.  
If I have the will, the efforts and the honesty, I can, I can, and surely, I can

Gadekar Sharad  
M.A. Eng. (Part II)





## On Examinations

Sanjay Khilare  
(T.Y.B.A. English)

The very word 'Examination' itself creates a nervous tension for most of the students. But for a few students it is a challenge. They accept examination as a challenge and face it boldly.. In education, examination is necessary as the method of evaluation because it helps to gauge the level of understanding and amount of knowledge with scale.

But now-a-days students are made to be 'examinees' for they study only a few days before examination. The method of conducting examinations is faulty. More than written exam, practical exam, or oral must be there for every subject. More stress should be laid on objective type of questions which should comprise 30% and should test the intrinsic worth of students rather than their superficial knowledge.

One of the reasons of decrease in the value and importance of exam. is the concession of A.T.K.T. The students should not be allowed the concession of A.T.K.T. They should pass in all the papers, and only then the examinations will be effective. The questions set must be essaytype ones or long answer questions to test the real merit of the students. The students also must be self dependent and their cramming of ready made notes must be discouraged. This will render exam trustworthy and make exam effective.

Examinations are corrupted today, because of money paid to get high marks. The present system encourages copying, affecting the really sincere and good students. One of the considerable drawbacks of exams. is that they often prove to be not useful in passing practical test, to get jobs. So, in some respects, academic exams should be employment oriented. The mal-practices of students and teachers must be severely punished. The assessment of answersheets is not done properly by teachers. They give marks for quantity and not for quality. I am told that the CAP (Central Assessment Programme) is a mere eye wash.

Academic exams/tests are not only necessary but they must be frequent, even monthly, to drive away the fear and nervousness and to reduce the cases of suicide by the tension of exam. The purity of exam must be kept by making attendance, tests, orals strictly binding. In addition, we must have general knowledge tests to test the awareness of students. Examinations are not merely writing answers but an important method of preparing a student to face great problems of life.

Above all, higher education must be open to meritorious students only. Students who really need education and possess the inclination and interest and capability must be awarded full free scholarship. Admitting students of all types only devalues education. Students should deserve their teachers and vice versa. A real co-operation, comradeship and mutual respect and trust between teachers and students must prevail. In this way a quality

education can be provided and the Government's expenditure on higher education, which yields very little results, can be reduced considerably. Education is the birth right of everybody, but higher education is the right of the deserving and meritorious.

## "CLOUDY HEART"

My life really began when I first saw you  
You had no name, but were called, "He"  
I liked you the moment, I saw you &  
'liking became 'love' when I met you;  
To the envy of other girls of my class;  
The time we spent together  
was precious and memorable,  
More so, when you were serious  
and thoughtful;

Each time I meet you,  
the sky turns from grey to blue,  
And my heart screeches and sings like a lark;  
You were always there when I need you  
But, now, I need you more than ever  
before. For we are destined  
to part for ever;  
Tears well up in my eyes at  
the thought of parting,  
Tears I will wipe, but the  
pain is bound to stay;  
My heart is heavy like a cloud,  
A "Cloudy Heart" shall I bear for ever.

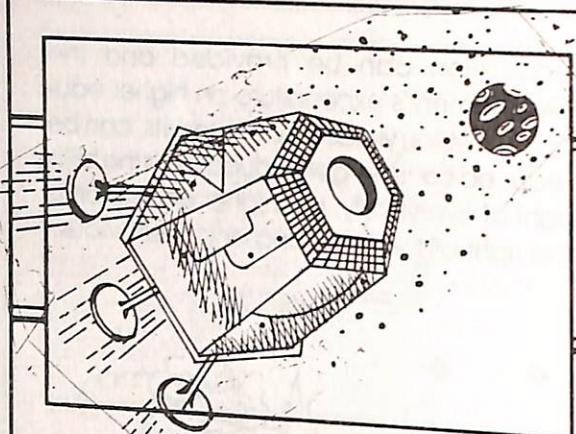
Jadhavrao A. R.  
(M.A. English)



## Loving Friends

Never did I want you to know,  
How intensely I did love you.  
How restlessly my heart-beats falter,  
And my sense do ever reel.  
But one day you looked into my eyes  
And you knew my secret,  
My eyes did at last betray my heart,  
I shall ever love you,  
Though friends we ever remain.

Kadam S. S.  
(M. A. Eng.-Part-2)



## "India's International Satellite Series INSAT"

D. B. Chavan  
(M.Sc. Phy II)

Satellite, a microwave repeater receives signal from the earth stations, amplifies them at radio-frequencies and retransmits them back to the earth. It avoids the interference between uplink & downlink. Once the satellite is launched in the space, it is settled to the right slot in the geostationary orbit. This makes the satellite stationary with respect to any point on the earth surface.

India had launched first domestic satellite INSAT-1A in AUG 1983. It was followed by INSAT-1B and INSAT-1C. Out of these three satellites INSAT-1B could be made fully operational. With the launching of INSAT-1D in June 1990, the first phase of INSAT programme was completed. The launching of INSAT-2A marked the beginning of second phase. India's space programme marked a major landmark with the successful launching of INSAT-2B on 23rd July 1994 from Kourou in French Guyana. INSAT-2A and INSAT-2B are India's indigenously built satellites.

INSAT-2A spacecraft can be split into three parts, bulkwise. About 60% of it is the fuel. Rest of it is referred to as dry mass. The part of the satellite which performs the service related functions such as imaging, data relay, etc. is referred to as payload. 1/3 of the dry space craft is made-up of payload systems. The rest consists of what is

called spacecraft subsystem. It provides for smooth and efficient functioning of the payload system by creating the right environments and giving necessary engineering support.

Like previous satellite, INSAT-2A draws power from the sun, using solar cells. The basic unit is small rectangular silicon chip (2cm X 4cm) converting about 14% of the incident solar energy by using photovoltaic effect. INSAT-2 uses five panels with total area about 15 square meter to give about 1300 watts of power at the end of life. The panels of high modulus carbon fibres are deployed by ground command. Panels are designed to track the sun continuously by means of drives assembly which rotates the panel at the rate of one rotation per day. During the period when the space craft is eclipsed by earth, solar array does not generate any power. INSAT-2, carries a rechargeable Nickel cadmium battery system to provide power during shadow periods.

All the spacecraft system, specially the electronic system, can function well only within a narrow range of temperatures. Thermal control system does the job of maintaining the temperature of all the systems within the specified range. This is achieved primarily by passive method of adjusting

the optical parameters of external surfaces. The thermal elements include multilayer insulators (blanket that gives the shining golden appearance to the spacecraft), thermal shields for thrusters, optical solar reflectors, the heaters and special purpose paints.

Now you can see how the satellite is useful in different ways and different fields. Artificial satellites are used for international communication. This can interconnect a large number of stations separated by a

long distance in different parts of the world through microwave link. INSAT-2A provides a large number of telephone, telex circuits between various Indian cities. International telecommunication has now become virtually satellite based. We can get the perfect weather forecast with the help of satellite.

Now India has become independent in the field of satellite with the help of INSAT series and there is no need to hire the satellite for its own purpose.



## When Maharashtra Wept

When on that fateful September morn,  
Marathwada was fast asleep,

Destiny was at work.  
On that early morning

When after Ganesh immersion  
Devotees were homeward bound  
Mother Earth shock her heavy frame.

The floors and fields  
gaped widely  
Houses and roofs and doors fell asunder,  
like a house of cards.

Upon the sleeping humanity,  
And all life was at a standstill.

Countless men, women, children  
and cattle perished,

Many more were missing,  
God's wrath had its wish,

Maharashtra wept on  
that fateful day.

Kadbane N. M.  
(M.A. Eng. Part-II)





## ''Service To Man Is Service To God''

B. J. Chandankar  
(M.A. English 1)

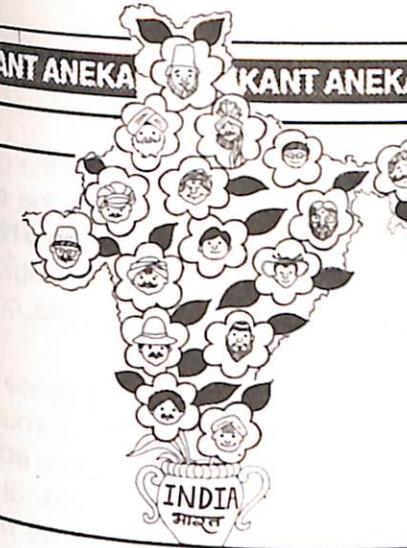
Ganpatrao lived in a small village named Alegaon. He was a happy farmer. He built a big house. He lived with his wife, Lakshmi, a son Ajay & a daughter, Gouri. But he was selfish & narrow minded. He never thought of sorrows and sufferings of the poor. Ajay was studying in a college at Indapur. He was often considerate and sympathetic to his college friends and the poor people in society. He was always happy to see others happy.

Once Ajay fell ill. All his friends came to see him and wished him recovery from illness. They praised Ajay for his nobility & royalty. His father took him to each and every famous doctor in the town. He spent a lot of money but of no avail. At last Ganpatrao decided to take him to Civil Hospital, Pune. While the bus was crossing the river Bhima, Ganpatrao folded his hands and said to the river goddess "O Mother Bhima, if my son is cured soon, I will spend ten thousand rupees for you."

Ajay was cured much sooner than was expected. Ganpatrao was very happy. They came back to Alegaon. He had money in his pocket. He sold some valuables and collected ten thousand rupees. He decided

to go to the river Bhima next day, but to his surprise, the bag of money disappeared. He was very unhappy. He did not want to break the promise. Then he prepared to collect the amount. Ajay said nothing because he had given money to the needy, poor and orphan children. After a few days some people came to Ganpatrao. There was an old man, physically handicapped children, the Headmaster of the school and a jobless young man, Satish. They were happy. They thanked Ganpatrao for his nobility. But he was puzzled and denied that he had sent money to help them.

Ajay went to his father's room and told him everything. He said, "Papa, I deceived you, I must confess this. You promised Mother Bhima to offer money, but I had also promised her that if I were cured soon, I would help the needy and the helpless poor people. I helped them, I am sorry." Ganpatrao heard this and tears rolled down his cheeks. He said, "My Son, now I realise that real happiness lies in the happiness of others". Ganpatrao gave the bag of money he had collected to Ajay and told his beloved son to use the money for the poor, the needy, the miserable, hungry and orphan children.



## Religion

Rupali Doshi  
(T. Y. B. A.)

Religion is neither a commodity that can be purchased nor a theory that can be learned in the form of lessons.

Religion is a thing not alien to us, it has to be evolved out of us. It is not a philosophical proposition not a historical life but it is the personal discovery of reality. Religion is an experience which affects our entire being, ends our disquiet and anguish, the sense of aimlessness of our fragile or temporary existence.

Religion is the spiritual change, an inward transformation, it is transition from darkness to light, from an unregenerate to regenerate condition. It is an intrinsic element of human nature.

Religion is like a tree having one stem and different branches. The stem is the truth and it becomes many, like branches and passes through the human medium. The underlying principle of all religions is truth.

The tradition of India respects all religions. India has been called the home of learning, the religious "Guru" of the world. Indian culture and civilization is based on love and fellow feeling and teaches the theory of world family.

Because of some empty presumption of caste and classes we stifle and suppress the breath of the spirit. The Upanishads

are clear that the flame is the same even though the type of fuel may vary. Though cows are of many colours, their milk is of one colour. The truth is one like the milk while the forms used are many like the cows. Again the Bhagawat says that as the several scenes discern the different qualities of one object, . . . the different

scriptures indicate the many aspects of one Supreme. According to Gandhiji, Lord Ram, Rahim, Allah, Christ, Buddha, Mahavir, Gurunanak etc. are the different names only; there is no difference in their teachings- Hindus, Muslims, Sikhs, Christians are the different means to reach the Supreme, called God.

A religious life means a purified and chastened life and such a life is bound to cast an immense social and political impact. To be religious is to be virtuous. Religion tames the savage nature of man. It purifies human motive and conduct. A man without religious faith will degenerate within a short time and in the same way a man centered only on the formalities of his own particular religion will be narrow, violent and rigorous having lost all his soft corner for others. God is the integrating principle, the central truth of man and religion is the way of realizing it.

Saints arose in different parts of the country intent on correcting the injustices and cruelties of the society. Dnyaneshwar, Tukaram Namdeo, Eknath etc. in Maharashtra, Narsing Mehta in Gujarat, Chaitanya in Bengal, Kabir in Uttar-pradesh, Meerabai in Rajasthan, Vallabhacharya in Andhra and many others, all of whom aimed to establish the real values of religion such as truth, non-violence, honesty, simplicity, magnanimity of heart and disciplined conduct. They stressed that religion is the act of bringing one's own life to an accepted standard of excellence, Morally and spiritually. They worked as an active source of unity and helped in the promotion of friendship, peace and welfare.

The religious life must express itself in love and aim at not only the unity of mankind but promote solution, peace, welfare and amicability. Service to mankind is the more binding of the religion, service to man is service to God. The social value of mankind is love based on sacrifice. Religion is the way

by which one can cultivate all the good characters. Religion promotes the discipline in man. It paves the way to a higher life. Morality is the essence of religion. A sense of morality makes man bold, courageous and virtuous.

Today invention of science and technology, faster means of communication, international co-operation in education, health and agriculture, political connection, the world to shrink to close neighbourhood. Nations have become interdependent. Now our hope should be to unite the world on the basis of community of ideas and to strengthen it with the help of religion. Religion is the only hope of man to form a world family.

In short we may say that Religion does not spread enmity but helps promote solution, peace, welfare and amicability. So we should have no confusion about the religion.

## GOD

What is God ?  
For old age, just a rod ?  
He is the joy  
For a butterfly . . . .

God is in a child  
In a man who is kind  
But where to find  
Man who is not wild . . .  
God can be put, in an inkpot  
Or in a gun shot  
He is in each plant  
Try to catch but can't . . . .

There is no limit  
One feels the spirit  
Spirit has a chant  
For growing the plant

Paithankar V. V.  
(S.Y.B.A.)

That chant is what  
God's sense I've got . . . .



## The Greatness Of Literature

Khan B. B.  
(M. A. English Part II)

"De Quincey" has classified it into two different manners the literature of knowledge, and literature of power. "The literature of knowledge" deals with facts, and gives us nothing but information. Thus books of physics, chemistry, History, Geography, and physical and social sciences, supply knowledge. On the other hand, "literature of power" deals with themes of universal interest and significance. It appeals to our emotions, moves us and gives us aesthetic delight.

There are many who think that creating and reading literature is a waste of time, because it misguides the generation, creates in them false imagination, makes them dreamy and contributes nothing to the progress of a nation. This notion is not new. It has been going on from the age of Plato and Aristotle. But there are many true devotees of literature like Aristotle, Sidney, Spenser and so on who have always defended literature against this misconception. Even the common people after reading the great creations of literature will understand the greatness of literature. Calling literature "the waste of time" will result in misjudging, misunderstanding and demoralizing it. Before making our own judgement let's try to understand literature by delving deep into the vast fields of literature.

It is true that the literature of knowledge gives us much information and makes us acquainted with those things about which we did not know before. Science has invented many useful things, because of which our life has become more comfortable than ever before. But more information, and the invention of new things is not sufficient. We must also know how to use and where to use this information successfully and make other people's life happy along with ours. Science can give us physical pleasure only, but literature has the power to give spiritual pleasure, which is very essential to live happily. Otherwise our condition will become like the man who spends all his night, making his bed more and more uncomfortable till the morning without enjoying its comfort. And it is literature which teaches us

how to enjoy, and make this short life more and more happy.

If our life is an ocean, we are sailors and science and other literatures of knowledge are boats and ships which conduct us through this ocean. Then literature is definitely the "light house" and "life buoy" of this ocean which guides us where to go, how to go and tells us which are the dangerous spots in this ocean and how to avoid them and derive the pleasure of sailing as well.

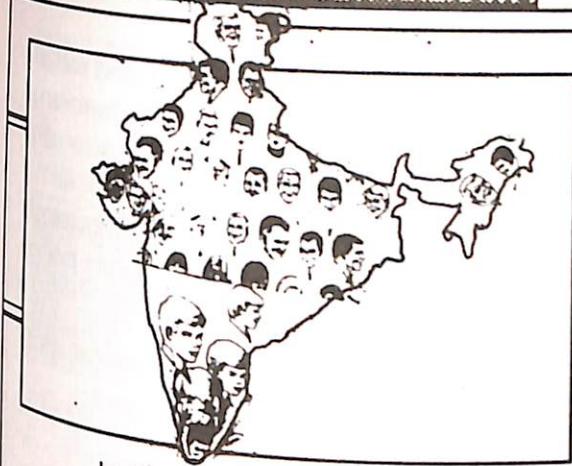
It is true that there are many who misuse literature, because of which literature has been abused. But it is not the fault of literature. We can't throw away all the swords because they kill the people. On the other hand we should preserve them because they also defend the nation. As the same way the use of literature depends upon its user, the reader.

Now let's see how great literature is useful to all human beings. The "pleasure" is essence of life and literature gives us pleasure that arises out off perception of beauty even in ugly things. The classical, victorian, romantic, and modern writers like Homer, Virginia Wolff, George Eliot, T.S.Eliot and so on offer us unique delight through literature. In addition to delight they give us "moral education" and make us ethical. The actions of the brave and heroic, presented in literature, instil virtues in us. The great critics like Sir Philip Sidney and Dr. Johnson have recognised the purpose of literature. Ac-

cording to them great writers are great teachers, seers, moralists and prophets. Experience makes man mature and we get this maturity by pursuing literature.

Literature gives us knowledge. It is concerned with all aspects of man and universe in their entirety and is about something, often about many things, and the more a person reads, the better stocked will be his mind with knowledge. The next function of good literature is all-round development of our personality. It develops sensitivity. It gives us intellect. Literature awakens in us the feelings not only for our selves but for the whole of mankind and beyond it for animals and inanimate things. Thus it gives us the satisfaction of being alive, in the true sense. It also increases our social awareness. Literature gradually teaches us to respect the people, first of all our family, then the people of our town, state, nation and lastly the people of the whole world. It teaches us to identify ourselves with others, understand their problems and share their happiness and sufferings. In short it teaches us the lessons of humanity which is the source of life. It develops our religious sense and teaches us to respect all the religions of the world. A true literary man will never insult any other religion because literature tells him that "God" is one and all the religions are "His" various manifestations.

Thus we can prove that literature is really great and not a useless thing because "we can't live, in the true sense, without it."



India is a country of a variety of religions, castes, languages and dresses. Our problems are also various and challenging. The chief among these problems are our growing population, unemployment, corruption and terrorism.

First, the problem of population. The population of our country is close to 100 crores and we are second in the world, next only to China. We have to find out reasons for this increase in population. Our ignorance about family planning. Our rural population is ignorant, illiterate and superstitious in respect of population control. The rural youth marry early even before attaining the age of marriage. The Government of India has announced several incentives to youth to assist the country in population control, but customs die hard. Every individual must consider it his or her national duty to help our country by raising a small family.

Second, the problem of illiteracy. Illiteracy has been reduced, but not considerably. The National Adult Education programme has achieved very little. The people's attitude must change. Our literacy is linked with poverty and unemployment. "More mouths to feed" means "more hands

## India Today

Jayant Suryawanshi  
(T.Y.B.A. English)

to work". So, children, too work to add to the family income, at an age when they should go to school and play. Free primary education with assistance to parents must be provided. Our governments lack political will.

Third, we have unemployment. Indian educational system is highly mass-oriented. Higher education is "free for all" and in Maharashtra we have so many scholarships that everyone is admitted to college. Merit has no place. The rate of universities producing graduates is enormous. But, employment or jobs are few. What the Government should do is to raise the standard of higher education and provide vocational education to less meritorious persons.

Fourth, is corruption in our public and private life. Our representatives in parliament and state Assemblies are rich, because it is not possible for any common man and clever person to contest election. Smugglers and terrorists like Hitendra Thakur always win elections. The representatives in Parliament have made Acts beneficial to them and industrialists who provide money for elections, politicians and the "under world" are hand in hand. Low wages, low

income, rising prices, high cost of living. all force people to be attracted to corruption. To have free elections without corrupt practices will need dozen SESHANS.

Fifth, is our traditional poverty which is linked to illiteracy. Removal of poverty is the trump card which politicians play during elections. To keep the poor always poor is to the politicians' advantage.

Lastly, terrorism, which is recent. In Assam, Punjab and Kashmir terrorism has

been due to weak governments and selfish politicians. In Assam and Punjab terrorism has been controlled, but in Kashmir an "external hand" has been behind terrorism. If the real people of Kashmir stand up against terrorism this state can once again be a heaven on the earth.

A united India will never fall but political will is weak or totally absent.



*With Best Compliments From*



**BOOKSELLERS & SUBSCRIPTION AGENTS**

7 Moledina Road, Clover Center, Poona - 411 001.  
Tel. : 651683

"Man, as an animal is violent, but as a spirit he is non-violent."

## अहवाल विभाग १९९४-९५

### जिसासाना विभाग १९९४-९५ (करिष्ठ महाविद्यालय)

(१) पुणे जिल्हा विभागीय आंतरमहाविद्यालयीन स्पर्धामधील महाविद्यालयाचे विजयी व उपविजयी संघ

- १) कबड्डी (मुले) - विजयी संघ
- २) बैंडमिंटन : (मुली) - विजयी संघ
- ३) मल्लखांब (मुले) - विजयी संघ
- ४) ४ X १०० रिले (मुली) - विजयी संघ

(२) पुणे जिल्हा क्रीडा विभागाकडून महाविद्यालयाचे आंतरविभागीय स्पर्धेसाठी निवड झालेले खेळाढू संघ

- |                                                                                              |        |
|----------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| १) कबड्डी (मुले)                                                                             | खेळाढू |
| २) मल्लखांब (मुले)                                                                           | ३      |
| ३) वास्केटबॉल (मुले)                                                                         | २      |
| ४) बैंडमिंटन (मुले)                                                                          | ३      |
| ५) बैंडमिंटन (मुली)                                                                          | १      |
| ६) व्हॉलीबॉल (मुली)                                                                          | १      |
| ७) व्हॉलीबॉल (मुले)                                                                          | २      |
| ८) योग (मुले)                                                                                | १      |
| ९) कुस्ती                                                                                    | १      |
| १०) मैदानी स्पर्धा (मुले)                                                                    | ३      |
| ११) मैदानी स्पर्धा (मुली)                                                                    | १      |
| १२) टेबल टेनिस (मुले)                                                                        | ४      |
| ३) अखिल भारतीय आंतर-विद्यापीठ स्पर्धेसाठी पुणे विद्यापीठातर्फ महाविद्यालयाचे निवडलेले खेळाढू | १      |
| १) श्री. प्रशांत पांडु रंग सातव - कबड्डी (मुले)                                              | ४      |
| २) श्री. शरद बबनराव साळुंके - योग (मुले)                                                     | १      |

(४) १९९४-९५ या वर्षात महाविद्यालयाने आंतर-महाविद्यालयीन कबड्डी (मुली) स्पर्धाचे आयोजन केलेले होते.

खेळाढूंचे हार्दिक अभिनंदन.

प्रा. एस. बी. इंगवले डॉ. एम. एम. गांधी  
शारीरिक शिक्षण संचालक प्राचार्य  
वरिष्ठ महाविद्यालय.

### जिसासाना विभाग १९९४-९५ (करिष्ठ महाविद्यालय)

आयोजित क्रीडा स्पर्धा :-

- १) तालुका पातळीवरील मैदानी स्पर्धा-मुले/मुली
- २) गटपातळीवरील मैदानी स्पर्धा-मुले/मुली

महाविद्यालयातील विविध खेळातील यश :-

- १) कबड्डी (मुले) :- अकलूज (सोलापूर) येथे झालेल्या विभागीय पातळीवरील स्पर्धेमध्ये विजयी. नागपूर येथे झालेल्या राज्यपातळीवरील कबड्डी स्पर्धेमध्ये सहभाग.
- २) खो-खो (मुले) :- हडपसर येथे झालेल्या जिल्हापातळीवरील खो-खो स्पर्धेमध्ये उपविजयी संघ.

विविध खेळातील यशस्वी खेळाढू :

- १) कबड्डी (मुले) :- दिल्ली येथे झालेल्या अखिल भारतीय पातळीवरील कबड्डी स्पर्धेमध्ये खेळण्यासाठी महाराष्ट्र राज्य संघामध्ये श्री. रुपेश जड्हेरी यांची निवड झाली.

- २) खो-खो :- शेवगांव (अहमदनगर) येथे झालेल्या विभागीय पातळीवरील खो-खो चाचणी स्पर्धेसाठी श्री. प्रशांत नलगोयाची निवड झाली.

- ३) व्हॉलीबॉल :- पुणे येथे झालेल्या जिल्हा पातळीवरील व्हॉलीबॉल :-

"निर्भयता ही आध्यात्मिकतेसाठी आवश्यक पहिली गोष्ट आहे।"

व्हॉलीबॉल चाचणी स्पर्धेसाठी श्री. किशोर पटेल याची निवड झाली.

बार्शा (सोलापूर) येथे झालेल्या विभागीय व्हॉलीबॉल चाचणी स्पर्धेसाठी कु.सुनिता खिंडारे हिची निवड झाली.

**मैदानी स्पर्धा :-** सासवड येथे झालेल्या जिल्हा पातळीवरील मैदानी स्पर्धेसाठी खालील खेळांडुनी भाग घेतला.

- |                        |                    |
|------------------------|--------------------|
| १) किशोर पटेल          | - तिहेरी उडी       |
| २) विजय शेळके          | - ४०० मीटर धावणे   |
| ३) प्रशंत नलगे         | - क्रॉस कंट्री     |
| ४) राहुल गायकवाड       | - गोलाफेक          |
| ५) कु. पौर्णिमा शेट्टी | - थाळीफेक          |
| ६) कु. सुनिता खिंडारे  | - भालाफेक, थाळीफेक |

सोलापूर येथे झालेल्या विभागीय पातळीवरील मैदानी स्पर्धेसाठी कु. सुनिता खिंडारे हिची थाळीफेक आणि भालाफेक साठी निवड झाली.

प्रा. बी. एस. गावडे,  
शारीरिक शिक्षण संचालक  
कनिष्ठ महाविद्यालय

डॉ. एम. एम. गांधी  
प्राचार्य

## राष्ट्रीय सेवा योजना

### (१) वर्षभरातील विविध कार्यक्रम :

- १) १५ ऑगस्ट १९९४, स्वातंत्र्यदिन मानवंदना
- २) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर ५३ छात्र सहभागी, दिल्ली पुणे-७-११-९४ ते १८-११-९४
- ३) फायरिंग ३०३, फायरिंग ७६२, दिल्ली पुणे, १५-११-९४
- ४) रक्तदान शिबीर, १५ छात्र सहभागी, दिल्ली-पुणे १४-११-९४

### (२) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर दिल्ली-पुणे, बेर्स्ट फायर, संजय दराडे ३०३, ७६२, एल एमजी

### (३) ऑल इंडिया अॅडव्हान्स लीडरशिप कॅम्प : केरळ

केरळ येथे दि. १०/९/९४ ते दि. २३/९/९४ या कालावधीत झालेल्या अॅडव्हान्स लीडरशिप कॅम्पमध्ये पुणे-७-११-९४ ते १८-११-९४ याकालावधीत झालेल्या अॅडव्हान्स लीडरशिप कॅम्पमध्ये पूर्ण.

### (४) आर्मी अॅटॅचमेंट कॅम्प (एम. आय. आर. सी.)

अहमदनगर येथे दि. २० नोव्हेंबर ९४ ते ४ डिसेंबर ९४ या कालावधीमधील झालेल्या कॅम्पमध्ये...

- ५) बी. पी. इ. टी. टेस्ट, पहिला क्रमांक, दिल्ली-पुणे १६-११-९४
- ६) २६ जानेवारी १९९५, प्रजासत्ताकदिन मानवंदना
- ७) २६ जानेवारी १९९५, मानवंदना सरकारी धजवंदन बारामती स्टेडियम

### (२) छात्र सैनिकांचा विविध कॅम्पमधील सहभाग:

१. दि. १४/७/९४ ते २४/७/९४ या कालावधीत सोलापूर येथे झालेल्या प्री. बी. एल. सी. -१ कॅम्पसाठी कॅडेट संजय संभाजी दराडे व कॅडेट परवेश खान यांची निवड व सहभाग.

२. दि. २५/७/९४ ते ५/८/९४ या कालावधीत अहमदनगर बीएलसी -१ येथे झालेल्या ऑल इंडिया वेसिकलीडरशिपसाठी कॅम्प नेमबाजी या इव्हेंटमधून निवड व प्रावीण्य (१ला क्रमांक). दिल्ली येथे होणाऱ्या आर. डी. कॅम्पसाठी नेमबाजीसाठी निवड.
३. बी.एल.सी.-२, दि. ५/१०/९४ ते १६/१०/९४ या कालावधीत अहमदनगर येथे नेमबाजी या इव्हेंटचा सराव व नकाशा वाचनाचे प्रशिक्षण पूर्ण.
४. दि. १८/१०/९४ ते २८/१०/९४ या कालावधीत दिल्ली येथे झालेल्या आर. डी. कॅम्पमध्ये सहभाग व विशेष प्रावीण्य.

### (५) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर दिल्ली-पुणे, बेर्स्ट फायर, संजय दराडे ३०३, ७६२, एल एमजी

### (६) आर्मी अॅटॅचमेंट कॅम्प (एम. आय. आर. सी.)

अहमदनगर येथे दि. २० नोव्हेंबर ९४ ते ४ डिसेंबर ९४ या कालावधीमधील झालेल्या कॅम्पमध्ये...

### १. अंडर ऑफिसर : अशोक शिवतारे

### २. सार्जट : सुहास मिसे

### ३. कारपोरल : अर्जुन माने

सहभाग : अत्याधुनिक रणगाडयांची माहिती घेतली.

### ४) शिवाजी ट्रेकिंग कॅम्प, कोल्हापूर :

दि. ८ डिसेंबर ९४ ते २० डिसेंबर ९४ या कालावधीत कोल्हापूर युपने आयोजित केलेल्या ऑल व पश्चिम घाटातील गिरिशिखरातून पदभ्रमण.

### ५) वारामती ते कन्याकुमारी व परत : राष्ट्रीय एकात्मता सायकल सफर पूर्ण :-

दि. २७ नोव्हेंबर ९४ ते ५ जानेवारी ९५ या कालावधीत.....

### १. कॅडेट संजय संभाजी दराडे

### २. कॅडेट एकनाथ जगन्नाथ देशमाने

### ३. कॅडेट संतोष बाबासाहेब काळे

### ४. कॅडेट बाबासाहेब देवदास कारंडे

यांनी ४६०० कि. मी. अंतराची राष्ट्रीय एकात्मता सायकल सफर ३१ दिवसात पूर्ण करून ते सुखरूप परतले.

या सायकल सफरीत त्यांनी दररोज २२५ कि. मी. एवढे अंतर पार केले.

दक्षिण भारतातील या सायकल सफरीसाठी कॅलब, वारामती नगरपरिषद, यूथ फाऊंडेशन, बारामती, लायन्स कॅलब, वारामती यांनी व महाविद्यालयाने आर्थिक सहकार्य कॅलब.

जहीराबाद, हैदराबाद, शरदनगर, कर्नुलढोन, ब्रह्मपुरम, वडदुर, तंजावर, देवकोटाई, रामेश्वरम, रामनाथपुरम, कुड्डूर, कन्याकुमारी, त्रिवेंद्रम, आल्पापी, कोचीन, पालघाट, कन्याकुमारी, शफुर बेंगलोर, श्रवणबेळगोळ, नेसुर, वेंगलोर, हरिहर, धारवाड, कराड, सातारा, पुणे, बारामती इ. ठिकाणी मुक्काम केला.

या सायकल सफरीमध्ये, सोलापूर, गुलबर्गा, वेळी, वारामती यांनी व खाऊ वाटप करण्यात आला.

कार्यक्रमाच्या वेळी रिमांड होम प्रमुखांनी सर्व विद्यार्थ्यांना राखी बांधली व खाऊ वाटप करण्यात आला.

कार्यक्रमाच्या वेळी रिमांड होम प्रमुखांनी सर्व विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. यावेळी एन. एस. आणि रिमांड होम मधील विद्यार्थ्यांनी संयुक्तपण सांस्कृतिक कार्यक्रम सादर केला.

७) २६ जानेवारी ९४ रोजी बारामती येथील सरकारी धजसंचलनामधील स्पर्धेत ३३ छात्रांचा सहभाग उत्कृष्ट संचलनाचे पारितोषिक.

### ८) एन. सी. सी. परीक्षा निकाल

‘बी’ सर्टिफिकेट परीक्षेत २८ छात्रांपैकी २७ उत्तीर्ण ‘सी’ सर्टिफिकेट परीक्षेत ६ छात्रांपैकी २ उत्तीर्ण

कॅप्टन मानसिंगराव गोडसे  
राष्ट्रीय छात्रसेना प्रमुख.

## राष्ट्रीय सेवा योजना

दि. १५ ऑगस्ट १९९४ रोजी प्रा. के. एस. ढमाळ (माजी कार्यक्रम अधिकारी) यांचे हस्ते राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या नियमित कार्यक्रमाचे उद्घाटन करण्यात आले. या दिवशी विद्यार्थ्यांनी महाविद्यालयाच्या परिसरात व योगधाम परिसरामध्ये स्वच्छता करून नियमित कार्यक्रमास सुरुवात केली. या श्रमदानाच्या कार्यक्रमानंतर सर्व सुरुवात केली. या श्रमदानाच्या कार्यक्रमानंतर सर्व विद्यार्थ्यांनी एन. एस. गीत व इतर देशभक्तिपर गीते गायली. या दिवशी २०० विद्यार्थी हजर होते.

### रक्षावंदन-

दि. २९/८/९४ रोजी बारामती शहरातील रिमांड होममध्ये रक्षावंदनाचा कार्यक्रम घेण्यात आला. राष्ट्रीय सेवा योजनेतील विद्यार्थ्यांनी रिमांड होम मधील १०० विद्यार्थ्यांना राखी बांधली व खाऊ वाटप करण्यात आला. कार्यक्रमाच्या वेळी रिमांड होम प्रमुखांनी सर्व विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. यावेळी एन. एस. आणि रिमांड होम मधील विद्यार्थ्यांनी संयुक्तपण सांस्कृतिक कार्यक्रम सादर केला.

### आंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिन :-

८ सप्टेंबर १९९४ दिवशी आंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिनानिमित्त राष्ट्रीय सेवा योजनेतील विद्यार्थ्यांच्या मध्ये गट चर्चा आयोजित करण्यात आली. या गटचर्चेचा विषय

'साक्षरता आणि तरुणांचा सहभाग' हा होता. नियमित कार्यक्रमाच्या वेळी सदर गटचर्चेचे सूत्रसंचालन प्रा. प्रदीप पाटील यांनी केले.

#### महाविद्यालय वर्धापन दिन :-

दि. १३ ऑगस्ट १९९४ रोजी महाविद्यालयाच्या वर्धापनदिन कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आलेले होते. त्यावेळी महाविद्यालयाच्या परिसरातील स्वच्छता व साफसफाई करण्यात आली.

#### व्यक्तिमत्व विकास शिवीर :-

प्रा. के. एम. जाधव यांनी आयोजित केलेल्या दि. ९ सप्ट. १९९४ रोजीच्या व्यक्तिमत्व विकास शिबिरामध्ये राष्ट्रीय सेवा योजनेमधील ३५ मुला/मुलींनी सहभाग घेतला.

#### विशेष हिवाळी शिवीर :-

दि. १४/१२/१४ ते २३/१२/१४ या कालावधीमध्ये मौजे उडवडी (क. प.) ता. बारामती येथे १०० विद्यार्थ्यांची हिवाळी शिवीर आयोजित करण्यात आले होते. या शिबिरामध्ये 'पाणी आडवा पाणी जिरवा' हा प्रकल्प हाती घेण्यात आला. या वेळी २४५ मिटर लांब ४ मिटर रुंद, २ मिटर उंच असा मातीचा बंधारा बांधण्यात आला या शिबिरामध्ये दि. १८ डिसेंबर १९९४ रोजी डॉ. के. एम. सुर्व यांच्या अध्यक्षते खाली घेण्यात आले. त्यावेळी सर्व शिबिरार्थीकडून उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला.

#### परिसर स्वच्छता व श्रमदान :-

नियमित कार्यक्रमांतर्गत महाविद्यालयाच्या परिसरामध्ये गाजर गवत निर्मूलन नारऱ्याची बागव योगधारा या ठिकाणी श्रमदान करून परिसर स्वच्छता केली.

#### गट प्रमुख :-

- १) श्री. डी. व्ही. भोसले
- २) श्री. पी. आर. मासाळ
- ३) श्री. एस. वाय. कोकरे
- ४) श्री एस. जी. बोराटे

- १) कु. एस. डी. जाधव.
- २) कु. व्ही व्ही कांबळे
- ३) कु. ए. ए. वैद्य
- ४) कु. एस. जी. ढवळे

- ५) श्री. आर. आर. पोमणे
- ६) श्री. एस वी पाटील
- ५) कु. जी. एस. तावरे
- ६) कु. ए. ए. कोकाटे

#### विद्यार्थ्यांचा विविध शिबिरामध्ये सहभाग

- १) २५/८/१४ मॉर्डर्न महाविद्यालय, पुणे, विश्वकोशाची तोंड ओळख, कु. व्ही. एन. पेंडसे, कु. एस. एल. जगदाळे
- २) ४/९/१४ पुणे विद्यापीठ, सामुहिक कृती कार्यक्रम श्री. आर. आर. पोमणे, श्री. एस. जी. बोराटे
- ३) २५/९/१४ एम. एस. के. महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर इस विरोधी जनजागरण श्री. डी. व्ही. भोसले, श्री. आर. आर. पोमणे, कु. एस. जी. ढवळे, कु. व्ही. वी. कांबळे
- ४) १९/१/१५ शाहू मंदिर महाविद्यालय पुणे, सामुहिक कृती कार्यक्रम, श्री. ए. एस. गायकवाड, कु. जी. एस. तावरे
- ५) २२/१/१५ कला वाणिज्य महाविद्यालय पौड : स्पर्धा परीक्षा व महत्व श्री. ए. पी. काळे, कु. ए. कोकाटे
- ६) १८/१/१५ ते २२/१/१५ कला, वाणिज्य महाविद्यालय, कळंब, जिल्हा स्तरीय शिवीर, श्री. महाविद्यालय, कळंब, जिल्हा स्तरीय शिवीर, श्री. एल. वी. पाटील, श्री. डी. जी. शिंदे, कु. एन. एन. चोपडे, कु. एम. डी. करगळ
- ७) २१/१/१५ ते २५/१/१५ कला, वाणिज्य व शास्त्र महाविद्यालय सिन्नर, जि. नाशिक, विद्यापीठस्तरीय मुलांची शिवीर, श्री. डी. व्ही. भोसले
- ८) २७/१/१५ ते ३१/१/१५ श्री. शिवाच्छ्रवर्ती महाविद्यालय जुन्नर, विद्यापीठस्तरीय मुलांची शिवीर स्थळ - कुकडेश्वर, कु. काकडे एम. एम.
- ९) ५/३/१५ सेंट मिरा कॉलेज, पुणे, सामुहिक कृती कार्यक्रम, कु. पांडकर जे., ए. कु. दळवी के. डी. कांबळे

प्रा. ए. एन. सावळकर                    प्रा. आर. जी. कुदळे

कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना

#### ग्रंथालय विभाग

- १) ग्रंथसंख्या :- अ) दि. ३१/३/१९९४ पर्यंत एकूण ग्रंथसंख्या ७९३०३ इतकी असून त्याची किंमत रु. २०,९५,८९३=५३ इतकी होती.
- २) १९९४-१५ या वर्षामध्ये वरील ग्रंथसंख्येत १२७९ पुस्तकांची भर पडली असून त्यांची किंमत रु. १,०२,७२५=०० आहे. दि. ३१/३/१५ अखेर. इतकी असून त्याची किंमत रु. २१,८७,३३१=५३ आहे.
- ३) नियतकालिके :- १९९४-१५ या वर्षामध्ये एकूण १२९ नियतकालिके मागविणेत येत असून त्याच्या एकूण १६९३=०० किंमतीचे ८३ दिवावली विशेषांक उपलब्ध करून देण्यात आले आहेत.
- ४) वर्तमानपत्रे :- स्थानिक व राज्यपातलीवरील एकूण ३२ वर्तमानपत्रे महाविद्यालयात येत असून त्याकरिता सुमारे रु. १३०००/- एवढी रक्कम खर्च करण्यात आली.
- ५) ग्रंथपेढी :- कनिष्ठ व वरिष्ठ महाविद्यालयातील गरजू व हुशार विद्यार्थ्यांना ग्रंथपेढीतून पुस्तके वर्षभरासाठी उपलब्ध करून देण्यात येतात. यावर्षी २१७ कनिष्ठ व वरिष्ठ महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना १०९२ पुस्तकांचे प्रत्यक्ष वाटप करणेत आले.
- ६) अभ्यासिका :- दोन स्वतंत्र व प्रशस्त अभ्यासिका (रिडिंग स्लम) व्यतिरिक्त रिसर्च करणाऱ्या विद्यार्थी व प्राध्यापकांकरिता स्वतंत्र क्युबिकल्सची सोय केलेली आहे.
- ७) स्पर्धा व सामान्यज्ञान परीक्षा साहित्य :- महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग, केंद्रीय लोकसेवा आयोग, सी. ए. आय.सी. डब्ल्यू.ए., आय.आय.टी., मेडिकल,

इंजिनिअरिंग, बैंक, डी. बी. एम., एम बी. ए., सामान्यज्ञान व इतर स्पर्धा परीक्षांकरिता आवश्यक व अद्यावत ग्रंथसंपदाव माहितीपत्रके उपलब्ध करून देण्यात आली आहे.

- ८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्र :- ग्रंथालय व माहितीशास्त्र या पदवी अभ्यासक्रमाच्या मे १९९४ मध्ये झालेल्या विद्यापीठपरीक्षेचा आमच्या विभागाचा निकाल ८४.२% इतका असून उत्कृष्ट निकालाची परंपरा यावर्षी राखलेली आहे. या विद्यार्थ्यांना प्रा. स्वामी प्रा. शेवडे, प्रा. जोगदेव, प्रा. डॉ. कोण्ऱूर, प्रा. जोशी, प्रा. लेले, प्रा. सौ. देशपांडे, प्रा. सौ. नरुंदे यांचे बहुमोल मार्गदर्शन लाभले.

- ९) ग्रंथभेट :- १९९४-१५ या वर्षी खालील मान्यवर व्यक्ती व संस्थांनी मौलिक ग्रंथ आमच्या ग्रंथालयास भेट दिलेले आहेत. १. डॉ. सौ. निर्मला शंकर सारडा २. प्रा. अलंब्र मैले द्वारा प्रा. के. एस. अय्यर ३. कु. प्रभादाते ४. श्रीमती सुंदरबाई अभ्यासक्रमाशाहा, पुणे ५. श्री. गोपाळराव पटवर्धन ६. श्री. अवधूत मदन वेदपाठक ७. श्रीमान माणिकलाल तुळजाराम शहा ८. सन्मति प्रकाशन, बाहुबली ९. मनाली प्रकाशन, पुणे १० निराली प्रकाशन, पुणे ११. गाज प्रकाशन, केडगांव.

आमच्या अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे सर्व पदाधिकारी, मा. प्राचार्य, सहकारी प्राध्यापक व शिक्षकेतर सेवक विद्यार्थी व ग्रंथालयीन सेवक वर्ग यांच्या बहुमोल सहकार्यामुळे आम्ही विविध शैक्षणिक अभ्यासपूर्ण उपक्रम आणि सेवा समाधानकारकपणे पार पाडत आहोत.

श्री. डी. पी. लिंगे  
सहाय्यक ग्रंथपाल

प्रा. ए. एन. पाटील  
ग्रंथपाल.

## कविर्य मोरोपंत वाद-वकृत्व स्पर्धा : वर्ष २२वे

कविर्य मोरोपंत आंतरमहाविद्यालयीन वाद व वकृत्व स्पर्धाचे आयोजन गुरुवार दि. २९ व शुक्रवार दि. ३० सप्टेंबर १९९४ रोजी करण्यात आले.

### (अ) वैशिष्ट्ये :-

- १) वाद व वकृत्व दोन्ही स्पर्धाकरिता महाविद्या - लयातर्फ ठेवलेल्या रोख पारितोषिकांच्या रकमेत वाढ करण्यात आली.
- २) उत्तेजनार्थ प्रथम व द्वितीय क्रमांकासाठी पारितोषिके ठेवण्यात आली. उत्स्फूर्त स्पर्ध करिता महाविद्या - लयातर्फ पहिल्या तीन क्रमांकांसाठी पारितोषिके ठेवण्यात आली.
- ३) वाद स्पर्धेचा विषय व सहभाग :- "भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील व्यक्तींची स्वप्ने साकार झालेली आहेत. वाद स्पर्धेत ४२ स्पर्धकांनी भाग घेतला.
- ४) वकृत्व स्पर्धेचे विषय
  - (१) पंडित कवींमध्ये मोरोपंतांचे स्थान
  - (२) मोरोपंतांचे मंत्रभागवत
  - (३) गुरुकुल शिक्षण प्रणाली
  - (४) ना. सी. फडके : व्यक्ती आणि वाङ्मय
  - (५) महाराष्ट्र शासनाचे महिलाविषयक धोरण
  - (६) भारतीय संस्कृतीवर प्रसारमाध्यमांचे अतिक्रम
  - (७) एकविसाव्या शतकातील वैज्ञानिक प्रगती वकृत्व स्पर्धेत ४७ स्पर्धकांनी सहभाग घेतला.
- ५) उत्स्फूर्त स्पर्धेत २२ स्पर्धकांनी सहभाग घेतला.
- ६) उद्घाटन :- वाद व वकृत्व स्पर्धाचे उद्घाटन मा. श्री. किरण

गुजर, सभापती पाणी पुरवठा समिती बारामती नगरपारिषद यांच्या शुभहस्ते झाले. अध्यक्षपदी मा. श्री. बी. डी. कोळेकर मुख्य कार्याधिकारी, बारामती नगरपारिषद हेहोते

### फ) पारितोषिक वितरण :-

वाद व वकृत्व स्पर्धाचा पारितोषिक वितरण समारंभ मा. आमदार विजयराव मोरे (सदस्य, विधान परिषद, महाराष्ट्र राज्य) व सौ. अलकाताई मोरे यांच्या हस्ते पर पडला. अध्यक्षस्थान मा. डॉ. व. मा. कोठरी, सचिव पडला. अध्यक्षस्थान मा. डॉ. व. मा. कोठरी, सचिव पडला. अध्यक्षस्थान सोसायटी बारामती यांनी भूषविले. अनेकांत एज्युकेशन सोसायटी बारामती यांनी भूषविले.

### ज) पारितोषिक विजेते :- (वकृत्व स्पर्धा)

कु. सुवर्णा पगार, टिळक आयुर्वद महाविद्यालय, पुणे याविद्यार्थिनीस प्रथम क्रमांक मिळाला व चांदीची फिरती ढाल मिळाली.

### वाद स्पर्धा :-

कु. माधुरी दीक्षित व कु. प्रज्ञा पाठक, पेमराज सारडा महाविद्यालय अहमदनगर या स्पर्धकांनी वाद स्पर्धेची फिरती ढाल जिंकली. कु. दीपा सडेकर, आय. एल. एस. लॉ. कॉलेज, पुणे यांना गुणानुक्रमे प्रथम क्रमांकाचे रोख पारितोषिक मिळाले.

### म) उत्स्फूर्त वकृत्व स्पर्धा :

या स्पर्धेत श्री. विक्रम वाळिंबे, कृषी महाविद्यालय कोल्हापूर या स्पर्धकाने प्रथम क्रमांकाचे रोख पारितोषिक व स्व. धोंडिबा आबाजी सातव फिरते स्मृतिचिन्ह मिळविले. व स्व. धोंडिबा आबाजी सातव फिरते स्मृतिचिन्ह मिळविले.

### न) महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचे इतरत्र झालेल्या वाद व वकृत्व स्पर्धामध्ये यश पुढील प्रमाणे -

(१) कु. ज्योती नारायण देव व श्री. युवराज तानाजी खरात यांना पुणे येथे 'कॅम्लीन पुरस्कृत' वार्षिक प्रज्ञा भारती आंतर महाविद्यालयीन राज्यस्तरीय वकृत्व स्पर्धेत प्रशस्ति पत्रके मिळाली.

(२) श्री. विष्णु शामराव मस्के यांना कर्मवीर भाऊराव पाटील राज्यस्तरीय वकृत्व स्पर्धेत (पिलीव : माळशिरस) प्रशस्तिपत्रक व उत्तेजनार्थ रोख पारितोषिक मिळाले.

(३) श्री. विष्णु शामराव मस्के यांनी कै. ध. श्री. इनामदार वकृत्व स्पर्धेत, (निमगाव) द्वितीय क्रमांकाचे रोख पारितोषिक मिळविले.

(४) श्री. विष्णु शामराव मस्के व श्री. राजेंद्र हरिशंद्र भोसले यांना मु. सा. काकडे आंतर महाविद्यालयीन वकृत्व स्पर्धेत प्रशस्तिपत्रके मिळाली.

(५) श्री. विनय वसंत मावळणकर, श्री. अभिजित दिलीप भिसे व विष्णु शामराव मस्के : राजगड आंतर महाविद्यालयीन वाद व वकृत्व स्पर्धेत सहभाग : श्री. विनय मावळणकर यांना द्वितीय क्रमांकाचे रोख पारितोषिक व प्रशस्तिपत्रक तसेच श्री. अभिजित भिसे यांना उत्तेजनार्थ रोख पारितोषिक मिळाले.

(६) श्री. मस्के विष्णु शामराव यांनी भारतीय संस्कार केंद्र, बार्षी यांच्या वतीने आयोजित केलेल्या "पाणिनि वकृत्व स्पर्धेत" प्रशस्तिपत्रक व चतुर्थ क्रमांकाचे रोख पारितोषिक मिळविले.

**प्रा. विलास काकडे**  
कार्याध्यक्ष

बैठकीस प्रा. भास्करराव जोहरापूरकर उपस्थित होते. २४-१-९५ रोजी श्री. पांडुरंग मासाळ व कु. वर्षा कांबळे यांनी लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या शिबिरात सहभाग घेतला.

वरील शिबिराच्या निमित्ताने आमच्या प्राध्याप - कांनी या कार्यक्रमाची दिशा, आखणी व अंमलबजावणी संदर्भात मौलिक सूचना केल्या. त्या सूचनाचे स्वागत विद्यार्थी अधिकार मंडळाने केले.

दि. ५ मार्च ९५ रोजी "अमराई" येथील ७० नवसाक्षर स्त्रिया व ३० पुरुष यांच्यासाठी एक दिवसाचे प्रशिक्षण शिबीर संपन्न झाले. मेणबत्ता तयार करणे, मेणपणत्या तयार करणे, सर्फ, लिविंग क्रीम्स तयार करणे या संबंधीची माहिती प्रात्याक्षिकासह दिली व या वस्तू संबंधित लोकांकडून तयार करून घेतल्या. दि. १२ मार्च ९५ रोजी विद्यार्थिनी वसतिगृहामध्ये विविध सोंदर्य प्रसाधनांसंबंधी माहिती प्रा. सौ. अंजली पंढरी यांनी दिली. सदर कार्यक्रमास मा. डॉ. सुर्व, प्रा. सौ. गांधी, प्रा. अरुण पंढरी उपस्थित होते. त्यांनी कार्यक्रम यशस्वी करण्यास मार्गदर्शन केले.

लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या वतीने महाविद्यालय व वस्तीपातळीवर विविध उपक्रम राबवले. पथनाट्य, पोस्टर प्रदर्शन, व्हिडिओ फिल्म शो, चर्चासत्र, प्रश्नमंच इ. कार्यक्रमाचे आयोजन केले. "आरोय व आहार" या संबंधी प्रा. विलास काकडे यांचे व्याख्यान झाले. "महिलांचा सामाजिक दर्जा" या विषयावर चर्चासत्र झाले. प्रा. कारमारी जाधव, महिला दक्षता समितीच्या घेतले. प्रा. कारमारी जाधव, महिला दक्षता समितीच्या सौ. अलकाताई मोरे व इतर वरिष्ठ प्राध्यापक, विद्यार्थी, विद्यार्थिनी उपस्थित होत्या.

अंधश्रद्धा निर्मलनासाठी पथनाट्य स्पर्धाचे आयोजन केले. श्री. अजित तावरे व मनोज माने यांच्या पथकाने पथनाट्याचा आकर्षक कार्यक्रम सादर केला. लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या विविध उपक्रमांमध्ये कु. २३-१-९५ रोजी लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या प्रशिक्षण निर्मिती कशाप्रकारे करता येईल या संबंधीचे एक दिवसीय प्रशिक्षण शिबीर पुणे विद्यार्थीठात १३ जाने. ९५ रोजी वापर करून तयार करता येण्याजोग्या विविध वस्तूंची नियुक्ती नियुक्ती झाली. नवसाक्षर प्रौढांसाठी विद्यार्थी कशाप्रकारे करता येईल या संबंधीचे एक दिवसीय प्रशिक्षण शिबीर पुणे विद्यार्थीठात १३ जाने. ९५ रोजी लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या विविध उपक्रमांमध्ये कु. २३-१-९५ रोजी लोकसंख्या शिक्षण मंडळाच्या प्रशिक्षण वर्षा कांबळे व पांडुरंग मासाळ यांचे सहकार्य मिळाले.

लोकसंख्या शिक्षण मंडळाची संपूर्ण जबाबदारी प्रा. जोहरापूरकर यांनी यशस्वीपणे सांभाळली आहे. प्रौढसाक्षरता समितीतील सर्व प्राध्यापकमित्रांचे कार्यक्रमाची जबाबदारी सांभाळण्यात मोलाचे सहकार्य मिळाले. मा. प्राचार्य, उपप्राचार्य व प्राध्यापक, सौ. अंजली पंडरी यांनी बहुमोल मार्गदर्शन केले व आवश्यक ते सहकार्य केले.

प्रा. रामभाऊ खाडे  
प्रौढ-निरंतर व ज्ञानविस्तार विभाग.

## वार्षिक क्रीडानेपुण्य पारितोषिक वितरण समारंभ

दि. १८/३/१९९५ रोजी महाविद्यालयाचा वार्षिक क्रीडानेपुण्य पारितोषिक वितरण समारंभ संपन्न झाला. समारंभाचे प्रमुख पाहुणे मा. श्री. रमेशचंद्र मिश्रा : राज्य, पुणे व सन्माननीय पाहुणे म्हणून सेजल ऑलिम्पिक मुष्टियोद्धा श्री. मनोज पिंगळे ह्या दोघांचे हस्ते पारितोषिक वितरण झाले. संस्थेचे अध्यक्ष मा. जंबुकुमार शहा (सराफ) हे या समारंभाचे अध्यक्ष होते.

## वार्षिक गुणदर्शक पारितोषिक वितरण समारंभ

दि. १९/३/१९९५ रोजी महाविद्यालयाचा वार्षिक गुणवत्ता पारितोषिक वितरण समारंभ संपन्न झाला. या समारंभाचे प्रमुख पाहुणे मा. डॉ. एन. के. जैन (जॉईट सेक्रेटरी व प्रमुख, पश्चिम विभागीय कार्यालय पुणे विद्यापीठ अनुदान आयोग, नवी दिल्ली) यांचे शुभमहस्ते पारितोषिक वितरण झाले. संस्थेचे खजिनदार मा. माणिकलाल तुळजाराम शहा हे या समारंभाचे अध्यक्ष होते.

॥ जथे भीती आहे तथे धम राहू शकत नाही ॥

## सांस्कृतिक विभाग अहवाल

१९९४-१५ या वर्षातील सांस्कृतिक विभागाचा अहवाल खालीलप्रमाणे -

- १) बारामती-दौँड ब्रॉडगेज रेल्वे मार्ग उद्घाटन समारंभ प्रसंगी महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांच्या "प्रियदर्शनी कलामंच" व "अनेकांत युवामंच" यांनी समूहगीत सादर केले.
- २) २६ जानेवारी १९९५ रोजी प्रजासत्ताकदिनानिमित्त घेण्यात आलेल्या विविध गुणदर्शन कार्यक्रमामध्ये समूहगीतमध्ये प्रथम क्रमांक.
- ३) दरवर्षीप्रमाणे महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांच्या कलागुणांना वाव देण्यासाठी विविध स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. विद्यार्थ्यांचा प्रतिसाद मोर्चा प्रमाणावर होता. स्पर्धा खालीलप्रमाणे झाल्या. दि. २१/२/१५ काव्यवाचन स्पर्धा दि. २२/२/१५ मराठी, हिंदी गीत व वाद्यवादन दि. २३/२/१५ कथाकथन स्पर्धा दि. २४/२/१५ नाट्यवाचन, एकपात्री प्रयोग व लघुनाट्य स्पर्धा दि. २५/२/१५ विद्यार्थ्यांसाठी फिशपॉड्स कार्यक्रम आयोजित केला होता. सर्व स्पर्धा यशस्वीपणे पार पडल्या.

प्रा. आर. डब्ल्यू. जोशी  
चे अरमन, सांस्कृतिक विभाग

## प्रदीप दीपांडण व नेतृत्व कर्त्तव्य

- १) दि. ६/१०/१४ रोजी प्र१८मंच कार्यक्रम (एफ.वाय.बी.ए. च्या वर्गात)
- २) दि. १२/१०/१४ रोजी पत्रकार श्री. सुरेशचंद्र वारघडे यांचे 'पक्षी व पर्यावरण' या विषयावर भाषण (एफ.वाय.बी.एस्सी. वर्ग)

- ३) दि. १६/१/१५ रोजी 'पक्षी ओळखा स्पर्धा' आयोजित.
- ४) दि. २६/१/१५ रोजी कुंभारगाव येथे पक्षी निरीक्षणासाठी सहल आयोजित.

प्रा. भारकर जोहरापूरकर

## आरम्भात्सर्व-भित्तिएवा

प्रतिवर्षप्रमाणे याही वर्षी विद्यार्थ्यांकडून भित्तिपत्रासाठी साहित्य मिळाले. त्यात प्रामुख्याने सर्वश्री भारत काळे, शशिकांत जगताप, सतीश मोकाशी, दीपक कांबळे, उमेश सुभेदार, संजय ढम, मिलिंद गाडेकर, कुमारदेवकाते, राजेंद्र चव्हाण, रमेश टकले, विकास मोरे, इ.नी साहित्य देऊन सहकार्य केले.

पारितोषिकासाठी पुढील दोन विद्यार्थ्यांची सर्वानुमते निवड करण्यात आली.

- १) श्री. भारत काळे (एफ.वाय.बी.ए.) चित्रकला
- २) श्री. दीपक कांबळे (एफ.वाय.बी.ए.) कविता

प्रा. भारकर जोहरापूरकर

यांनी मानसिकताणव योगोपचार या विषयी विचार मांडले. प्रा. डी.एस. शहा यांनी प्रास्ताविक केले व प्रा. जी. व्ही. गायकवाड यांनी आभार मानले.

श्री. एस.जी. बोंद्रे  
प्रमुख, प्राध्यापक प्रबोधिनी

## व्यक्तिमत्व विकास शिवीर

मानसशास्त्रीय विभागामार्फत दि. ८/१०/१४ व १/१०/१४ यादोन दिवस व्यक्तिमत्व विकास शिवीराचे आयोजन करण्यात आले. सदर शिवीरात व्यक्तिमत्व - मापन, प्रभावी व्यक्तिमत्व आत्मसात करण्याचे मार्ग, मनोलैंगिक समस्या, प्रगल्भ व्यक्तिमत्वाकडे वाटचाल इ. विजयावर प्रा. डॉ. भरत देसाई, व प्रा. राम गायकवाड यांनी प्रात्याक्षिकासह मार्गदर्शन केले. सदर शिवीरात वरिष्ठ महाविद्यालयातील ४० विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला होता.

प्रा. के. एम. जाधव  
कार्यक्रम संयोजक

## सहल विभाग

महाविद्यालयाच्या दैनंदिन कार्यक्रमापासून थोडेसे दूर जाऊन थोडीशी मौजमजा, पदभ्रमण, निर्सर्व सहवास प्राप्त करण्याच्या हेतूने या वर्षी विद्यार्थींव प्राध्यापक यांच्या सहली आयोजित करण्यात आल्या.

१) दि. १ जानेवारी १९९५ रोजी प्राचार्य, प्राध्यापक व कर्मचारी यांची सहल भीमानगर (उज्जीवन धरण) येथे आयोजित केली गेली. या सहलीत अनेक प्राध्यापक सहकुटुंब सहभागी झाले होते. त्यामुळे प्राध्यापक व त्यांचे कुटुंबीय यांच्यात जवळीक व सौहार्द निर्माण झाले.

२) दि. २६ जानेवारी १९९५ रोजी एफ.वाय.बी.कॉम. या प्राध्यापक प्रबोधिनीतर्फे दुसरे व्याख्यान प्रा. एम. जाधव, मानसशास्त्र विभाग, यांचे दि. ७ फेब्रु. १९९५ रोजी आयोजित करण्यात आले. प्रा. के. एम. जाधव, मानसशास्त्र विभागाची सहल भीमाशंकर येथे आयोजिण्यात आली होती.

## प्राध्यापक प्रबोधिनी १९९४-९५

प्राध्यापक प्रबोधिनीचे उद्घाटन दि. २५। १०। १०। १४ रोजी मा. प्राचार्य डॉ. एम.एम. गांधी यांचे हस्ते झाले. त्यावेळी त्यांनी नवीन विद्यापीठ कायद्यासंबंधी आपले प्रा. एस.जी. बोंद्रे यांनी आभार मानले.

प्राध्यापक प्रबोधिनीतर्फे दुसरे व्याख्यान प्रा. एम. जाधव, मानसशास्त्र विभाग, यांचे दि. ७ फेब्रु. १९९५ रोजी आयोजित करण्यात आले. प्रा. के. एम. जाधव, मानसशास्त्र विभागाची सहल भीमाशंकर येथे आयोजिण्यात आली होती.

॥ ईश्वर एक आहे यावरील श्रद्धा हा सर्व धर्मांचा पाया आहे ॥

- ३) एस.वाय.बी.ए. (मराठी) या वर्गातील विद्यार्थ्यांची सहल दि. ५ फेब्रुवारी १९९५ रोजी भीमाशंकर येथे गेली.

४) एस.वाय.बी.कॉम. या वर्गातील विद्यार्थ्यांची सहल दि. ५ फेब्रुवारी १९९५ रोजी महाबळेश्वर येथे जाऊन आली.

प्रा. महावीर कंडारकर  
सहल विभाग प्रमुख

यशवंतराव चक्काण महाराष्ट्र सुन्दर  
विद्यापीठ, (नाशिक) अस्यासदृशम्

यावर्षी महाविद्यालयांमध्ये यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक यांचे अभ्यासकेंद्र सुरु करण्यात आले आहे. यावर्षी पूर्वतयारी बी.ए./बी.कॉम. या कोर्ससाठी प्रवेश देण्यात आला आहे. एकूण २८ विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला आहे.

जून १९९५ पासून डिप्लोमा इन अप्लाईड इलेक्ट्रॉनिक्स, डिप्लोमा इन कॉम्प्युटर व अभियांत्रिकी विषयातील मेक्निक रेडिओ व टेपरेकॉर्डर, मेक्निक दृष्टिलर्स, डोमेस्टिकवायरमन, प्लंबरइ.कोर्सेसची सुरुवात होणार आहे.

विद्यार्थ्यांना ऑडिओ व व्हिडिओ कॅसेटचा वापर करून शिक्षण घेता येते. विद्यापीठाचे दोन दिवसांचे मार्गदर्शक प्राध्यापकांचे कृतिसत्र महाविद्यालयातील प्राध्यापक आर.डब्ल्यू.जोशी, प्रा. पंढरी.ए.एस., प्रा. सावंत टी.एस. व प्रा. गलांडे आर.के. यांनी पूर्ण केले आहे.

पूर्वतयारी बी.ए./बी/कॉम. अभ्यासवर्गसाठी  
संपर्क सत्रांचे आयोजन केले जाते. त्याचे उद्घाटन मा.  
उपप्राचार्य डॉ. के.एम. सर्वे यांनी केले.

प्रा. आर. डब्ल्यू जोशी प्राचार्य डॉ. एम. एम. गांधी  
केंद्र संयोजक केंद्रप्रमुख



हार्दिक श्रमेच्छा !

प्रेरणा महिला उद्योग संचालित

# प्रेरणा बैकर्ड

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयाच्या परिसरात 'प्रेरणा बैकर्स'  
तर्फे खालील उत्पादने तयार होतात.  
पाव, खाशी कॅमेली

१०८. क्रामरोल, बिस्कटे, नानकटाई इ. याशिवाय  
ऑर्डर प्रमाण माल तयार करन दिला जाईल.  
संचालिका - सौ. मंगल सराफ ♦ सौ. रेखा गुगळे

। यासिन्यरूपी भाडवलावाखून सत्याग्रहाचा लढा अशक्य आहे ॥

## अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे

# इन्सिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंडिपरेंट अण्ड रिसर्च

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, परिसर  
बारामती ४३३ १०२ जि. पुणे

**बारामती ४१३ १०२ जि. पुणे**  
 एकविसाव्या शतकातील आव्हाने पेलण्यास सुसज्ज असलेली (तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय परिसरातील) “इन्स्टिट्युट ऑफ मॅनेजमेंट” मध्ये अत्याधुनिक, संपूर्णतः वातानुकूलित, सर्व उपकरणांनी सुसज्ज अशा संगणक प्रयोगशाळेत संगणकशास्त्रातील तसेच व्यवस्थापन क्षेत्रातील तज्ज्ञ व अनुभवी व्यक्तींच्या मार्गदर्शनाखाली राबवले जाणारे अभ्यासक्रम :  
 \* पुणे विविध

## १) वापाठाचे अभ्यासक्रम :

- |                                        |                    |
|----------------------------------------|--------------------|
| २) डिप्लोमा इन विज्ञनेस मैनेजमेंट      | (डीबीएम)           |
| ३) मास्टर ऑफ कॉम्प्युटर मैनेजमेंट      | (डीसीएम)           |
| ४) मास्टर ऑफ पर्सोनल मैनेजमेंट         | (एमपीएम)           |
| ५) मास्टर ऑफ विज्ञनेस अंड मिनिस्ट्रेशन | (एमबीए) (नियोजित)  |
| ६) मास्टर ऑफ कॉम्प्युटर मैनेजमेंट      | (एमसीएम) (नियोजित) |

• संपर्क •

आय. एम. डी. आर. कार्यालय,  
सकाळी ११ ते सायंकाळी ६

♦ दर्ध्वनी ♦

कार्यालय २२४०५, २२७२८, घर २३६३५  
एस.टी.डी.: ०२११२ फँक्स : (०२११२) २२७२८

♦ संचालक ♦  
डॉ. म. मो. गांधी

*Introducing Long / Short Term Courses for  
Long Term Career Growth*

Institute Of Management  
**Professional And Computer Training**  
**(IMPACT)** An Autonomous  
Institute.  
Tuljaram Chaturchand College Campus  
Baramati-413 102 Dist : Pune  
Announces The Career & Job-Oriented Management  
& Computer Courses for Students,  
Working Executives and Professionals.

**AUTONOMOUS COURSES :**

1. Master's Programme in Business Administration and Computer Management (MBACM)  
Duration - 2 Years Part Time  
(Morning Computer Practicals & Evening Lectures)  
Two Years Complete Course Fee (including laboratory fees Rs.5139/-)
  2. Diploma in Computer Applications (DCA)  
Duration - 6 Months, Fees - Rs. 1659  
Contents : Computer Fundamentals, DOS, Wordstar, Lotus, DBASE & Foxpro, Project.
  3. Certificate in Computer Applications (CCA)  
Duration - 3 Months. Fees Rs. 829  
Contents : DOS, WS, LOTUS, DBASE, FOXPRO and Utilities Fundamentals
  4. Certificate in Computer Software Packages (CCSP)  
Duration - 1 Month. Fees Rs.429  
Contents : DOS, Wordstar, Lotus 1-2-3 & Utilities
  5. Diploma in Journalism Communication & Information Science (DJCIS)  
Duration - 1 Year. Fees Rs.2529
- \* Excellent Infrastructural, Instructional & Other Facilities  
\* One Student - One Computer  
\* Limited Seats

For Details Contact : IMPACT Office  
At Office Hours from 11 a.m. to 6 p.m.  
Phone Nos.(o)-22405,22728. (R 23635. STD-02112), FAX-02112(22728)

हार्दिक शुभेच्छा



## 'रत्नाकर' चा वरदहरूत

'रत्नाकर' चा  
हा वरदहरूत  
फुलतो व फुलवतो,  
सुखाचा ठेवा  
जतन करतो,  
भविष्य तुमचे  
समृद्ध करतो.

विविध बचत योजनांसाठी नजिकच्या शाखेशी भेट घा.



## दि रत्नाकर बँक लि.,

(शेड्युल - कमर्शिअल बँक)

-: ऑफिसिनी ऑफिस :-  
श्री शाहू मार्केट याई, कोल्हापूर

-: बारामती शाखा :-  
शहा पंदारकर बिलिंग, मरात्ही इथ, बारामती